Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआवज़ा

डॉ. डी.के.गर्ग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. डी.के. गर्ग का यह तीसरा कहानी-संग्रह इस मायने अनूठा है कि इनमें भाषा और शिल्प दोनों स्तरों पर मौलिकता की झलक मिलती है। इन कहानियों का केंद्रीय स्वर आम आदमी का जीवन संघर्ष है। ये कहानियां किसी राजमार्ग के बदले जीवन की उन पगडंडियों के धुंधलके में उतरती है, जहां जीवन का सरल-सहज रूप अपनी मौलिकता में परिलक्षित होता है।

भारतीय समाज की जीर्ण-जटिल दुरुह सच्चाइयों को उजागर करने वाली ये कहानियां लेखक की सूक्ष्म संवेदना, गहन अंतर्दृष्टि और जीवंत अनुभव की बानगी प्रस्तुत करती हैं।

कथाकार इस संग्रह की कहानियों में एक ऐसे संसार का सृजन करता है, जिसमें क्षरण और पराभव के बावजूद जीवन-जगत की बेहतरी के लिए संघर्ष जारी है।

'मुआवजा' कहानी पढ़ते हुए न सिर्फ असहाय बचपन की पीड़ा से हम रू-ब-रू होते हैं बल्कि मीडिया और राजनीति का वीभत्स चेहरा भी हमारे सामने उजागर होता है। 'बुआ का घर', 'मां', 'मदर्स डे' जैसी कहानियां हमारे जीवन और समाज से संवेदना के निरंतर क्षरण को रेखांकित करती है। 'क्षितिज के पार' इस संग्रह की एक अनूठी कहानी है जिसे कथाकार ने लोककथा की किस्सागोई के शिल्प में फैंटेसी के सहारे बुना है। संग्रह की लगभग सारी कहानियां पठनीय व संग्रहणीय हैं और कथाकार की मौलिक समझ और परिवर्तनकामी मानवीय दृष्टि की परिचायक भी।

– श्रीधरम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

10.5 T. जाह्नवी आर्या

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआवज़ा

डॉ. डी. के. गर्ग

क्षितिज प्रकाशन
नई दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© डॉ. डी. के. गर्ग

प्रथम संस्करण : 2008

प्रकाशक
क्षितिज प्रकाशन
101, हंस भवन, नई दिल्ली-110002

आवरण
उमा शंकर साहू

शब्द-संयोजन
अवधेश
(९२१३४०७७३०)

मुद्रक
शिव प्रिंटर्स
गाजियाबाद।

मूल्य : ३००/- रुपए

MUAWAJA *by* **D.K. Garg** **Price : Rs.-300.00**

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

पिताजी श्री प्रेमचंद गर्ग

व

अम्मा श्रीमती लक्ष्मी देवी

तथा

श्वसुर श्री ओम प्रकाश अग्रवाल

व

माँ सी श्रीमती ऊषा अग्रवाल

एवम्

अपने सभी प्रेरणा-स्रोतों

को

जिन्होंने मुझे

जीवन का सार बताया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी तरफ से आपके लिए

'मुआवज़ा' मेरा तीसरा कहानी-संग्रह है। प्रथम कहानी संग्रह 'फिर वही तलाश' में भ्रष्टाचार के विभिन्न पहलुओं को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था। मुआवजा कहानी-संग्रह में सामाजिक व्यवस्था को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया गया है। इस दिशा में लेखन का यह मेरा पहला प्रयास है।

अपनी बात को प्रस्तुत करने के कई तरीके हो सकते हैं। कहानी के रूप में प्रस्तुत करना भी उनमें से एक है। हमारे समाज में रोज कोई-न-कोई घटना घटती रहती है। परिवार टूट रहे हैं—हर व्यक्ति अपने आप में ही सिमटता जा रहा है। कहते तो हम ये हैं कि आज ग्लोबलाइजेशन है। परंतु हमारी व्यक्तिगत मानसिकता इसके बिलकुल विपरीत है।

अर्थ की दौड़ में हमारे सरोकार कहीं पीछे छूट गए हैं। इसके दूरगामी परिणाम हमें भुगतने होंगे। जिनका कहीं भी अंत नहीं है। इस आर्थिक दौड़ में हमारी मानवीय संवेदना भी खत्म हो चुकी है। सन् 1947 के बाद देश का अब पुनः विभाजन हो रहा है। देश के अंदर ही एक वर्ग भारतीय है तो दूसरा इंडियन। गरीबी एक ऐसा एहसास है जिसके नीचे कोई जीवनपर्यंत दबा रहता है और दूसरी तरफ किसी को पता भी नहीं कि गरीबी क्या होती है।

इस कहानी-संग्रह में कुल मिलाकर सत्रह कहानियां हैं। इनमें कुछ कहानियां मैंने बचपन में लिखी थी लेकिन आज भी स्थिति जैसी की तैसी है। 'क्षितिज के पार' में एक छोटे बच्चे की व्यथा का वर्णन है जिसके पिता जाति-धर्मगत आंदोलन के शिकार हुए हैं। 'मदर्स डे' आजकल हर दिन मनाए जाने वाले 'डे' पर व्यंग्य है। 'सोने की चैन' में साहूकार की दादागिरी को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत किया है कि किस तरह साहूकार गिरवी रखे गहनों को हड़पने की कोशिश करता है। 'संजोग' कहानी बिहार राज्य में प्रचलित पकड़वा विवाह प्रथा पर आधारित है। 'मुआवजा' कहानी एक गरीब मां की दुखतः घटना पर आधारित है जो कुछ मुआवजा पाने की खातिर अपने लाड़ले बच्चों को भी खोने को तैयार है। 'किसके लिए' कहानी के द्वारा उन लोगों को सावधान किया गया है जो पहले मित्रता करते हैं और फिर भीतरघात करके मित्र का धन हड़प लेते हैं।

मैं डॉ. सुभाष वशिष्ट जी का अत्यंत आभारी हूं जिन्होंने मुझे अपने विचारों और अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित किया और समय-समय पर मार्ग दर्शन भी करते रहे। श्री श्रीधरम जी का भी मैं आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपना कीमती समय निकालकर कथा-संग्रह का संपादन किया और उनके मार्गदर्शन का परिणाम आपके सामने है। अंत में मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नीतू गर्ग, अनुज वेद प्रकाश, पुत्र तुषार, अमन, शुभि मित्तल, मुकेश वर्मा, वीना जायसवाल, अनुपमा, उमा शंकर साहू आदि सभी का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मुझे सहयोग प्रदान किया।

हो सकता है कि इस कथा-संग्रह में कहीं त्रुटियां रह गई हों—मुझे आपके सहयोग व मार्गदर्शन की आवश्यकता है क्योंकि सत्यकर्म के लिए हम सभी आगे बढ़ते रहें, एक-दूसरे का मार्गदर्शन करते रहें।

(1 जनवरी, 2008) डॉ. डी.के. गर्ग
नई दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रम

संजोग 09

जन्मदिन का तोहफा 21

किसके लिए ? 24

परछाइयाँ 31

बुआ का घर 38

सोने की चेन 45

वाणी का रस 51

मदर्स डे 55

मैं दोषी नहीं! 58

एक नाटक 64

माँ 72

सुखांत 79

भैंस का सौदा 87

अलविदा 91

ज़ोरू का भाई 93

क्षितिज के पार 97

मुआवज़ा 106

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजोग

बिहार के सासाराम जिले के उमड़िया गाँव के जमींदार खड़गसिंह के बड़े बेटे हरिनाम प्रसाद ने पढ़ाई-लिखाई में जितना नाम कमाया उतना आस-पास के किसी ने नहीं। पहली कक्षा से लेकर बी.ए. तक हरिनाम प्रथम श्रेणी में अव्वल दर्जे का नंबर लाकर टॉप करता रहा। वह भी तब जब घर में बिजली नहीं थी। शहर जाने के लिए एक पुरानी साइकिल ले रखी थी। लालटेन के उजाले में ही पढ़कर वह आगे बढ़ा था। शहर जाने के लिए उसे कितने पापड़ बेलने पड़े थे, उसे ही पता है! कई बार साइकिल की चैन में फंसकर पायजामा फट जाता था। बरसात के दिनों में साइकिल के पहिए कीचड़ में लिथड़ जाते थे। वह उतरकर मडगार्ड साफ करता फिर आगे बढ़ता। कभी पहिया फिसल जाता तो धड़ाम से नीचे आ गिरता। वह मां-बाप का एक रुपया भी बचा सकता तो जरूर बचाता था। इसी सादगी व पढ़ाई में तेज होने के कारण वह बहुत ही प्रसिद्ध था। ठाकुर खड़गसिंह जहाँ कहीं जाते उसके गुण गाते रहते थे। ठकुराइन तो इसमें और भी आगे थी। हो भी क्यों ना? ये एक लायक औलाद के मां-बाप जो हैं।

बी.ए. पास करने के बाद हरिनाम ने पटना से कोंचिग की क्लॉस की। मन में तरह-तरह के विचार आए कि एम.ए. करे, कभी आई.ए.एस. का खयाल तो कभी बैंक में पी.ओ. बनने का सपना। अंत में कुछ मित्रों की सलाह पर एम.बी.ए. करने का निर्णय लिया। एक साल तक मैट के इम्तिहान की तैयारी करता रहा। टैस्ट का अच्छा परिणाम आया। कई कॉलेजों से कॉल लेटर आने शुरू हो गए। खड़गसिंह सभी चिट्ठियां इकट्ठी करते फिर आस-पास के लोगों को, बैंक बाबू को, पटवारी को, स्कूल के मास्टरों को दिखाते और सलाह लेते कि कौन-सा कॉलेज अच्छा है। सबकी अलग-अलग राय होती। जितने मुंह उतनी बातें। परंतु खड़गसिंह के लिए यह जानकारी उतना जरूरी नहीं था जितना कि सभी को यह बताना कि हरिनाम के पास बड़े-बड़े शहरों के कॉलेजों से—दिल्ली, बंग्लौर, राजस्थान से बुलावा आ रहा था। हरिनाम ने पाँच कॉलेजों में दाखिले के लिए साक्षात्कार दिया जिसमें से तीन में उसका चयन भी हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया। काफी सोच-विचार के बाद नोएडा के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में उसने दाखिला ले लिया। वहाँ उससे सीनियर एक विद्यार्थी पढ़ता था। वह भी कुशाग्र बुद्धि का था। जब हरिनाम बी.ए. प्रथम वर्ष का छात्र था तब वह द्वितीय वर्ष में पढ़ता था। कॉलेज में दोनों सिर्फ एक-दो बार ही मिले थे। उसके मां-बाप नहीं थे। वह अपने एक रिश्तेदार के यहाँ रहकर पढ़ाई कर रहा था। शाम को रेलवे स्टेशन पर रूमाल बेचकर कुछ पैसे कमा लेता जिससे अपना खर्चा चलाता था। पुनः नोएडा में मिलने पर उन्होंने एक-दूसरे को पहचान लिया और कुछ ही दिनों में दोनों अच्छे मित्र बन गए। उसका नाम जयप्रकाश था। हरिनाम उसे 'जय सर' कहकर संबोधित करता था।

हरिनाम ने दाखिला लेते ही पढ़ाई शुरू कर दी। नई कमीज और पैंट सिलवाए। वहाँ के लिए नए बिस्तर व जरूरी सामान तैयार करवाया। हरिनाम की पढ़ाई में खड़गसिंह कोई कंजूसी नहीं करना चाहते थे उसने सभी जरूरी चीजें दिलवाई। पटना से एक नई टाई भी खरीदी गई। दुकानदार ने ही उसे टाई बांधना सिखाया। एक नया मोबाइल खरीदा। क्योंकि उसे कोचिंग में ही सिखाया गया था कि पाँच बातें याद रखनी हैं–1. मोबाइल हरदम हाथ में रखना चाहिए इससे इज्जत बनती है। 2. टिप-टॉप कपड़े पहनना है। 3. अपने को बिहार का नहीं बताना है। अगर बताना भी हो तो पटना शहर के सिविल लाईन में घर बताओ और मां-बाप को उद्योगपति। 4. अंग्रेजी नहीं भी आती तो भी गुड, ओके आदि शब्दों का इस्तेमाल करो। 5. अच्छा होगा कि भविष्य में दिल्ली में ही रहने की योजना बनाओ।

कॉलेज में आने के बाद उसे शुरू में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। सीनियर रोज रात को कमरे में बुला लेते। घंटों इन्ट्रो के नाम पर खड़ा रखते। कभी उठक-बैठक लगवाते। मेस का खाना उसे पसंद नहीं आता क्योंकि वह घर के खाने से अलग था। चूड़ा व सत्तू मेस में खिलाया ही नहीं जाता था जो उसका प्रिय भोजन है। तीसरी बड़ी दिक्कत थी कि वह बहुत शर्मीला था। हमेशा लड़कियों से दूर ही रहा परंतु यहाँ उनके साथ बैठने, पढ़ने व बातें करने में उसे शर्म आती थी। सूट-बूट में वह काफी स्मार्ट लगता था और स्वयं शीशे के आगे खड़ा होकर अपने को सैल्यूट करता था। धीरे-धीरे हरिनाम प्रसाद को अपना नाम भी बेकार लगने लगा और नाम बदलकर उसने एच.एन. प्रसाद लिखना शुरू कर दिया। हरिनाम का व्यक्तित्व तेजी से बदल रहा था। अब उसका संपर्क भी बिहारी लोगों से ना होकर कारपोरेट जगत से जुड़े लोगों से होने लगा था। बातचीत का लहजा भी धीरे-धीरे बदल रहा था। उसमें बिहारीपन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धीरे-धीरे खत्म हो रहा था और बातचीत में अंग्रेजी के साथ-साथ पंजाबी शब्दों का भी मिश्रण होने लगा था।

एम.बी.ए. की पढ़ाई में हरिनाम को दिक्कत तो जरूर आई परंतु उसके सीनियर साथी ने उसकी बहुत मदद की। हर विषय वह उसे समझाता रहता था। हरिनाम भी देर रात तक पढ़ता था। कुछ भी दिक्कत आने पर अगले दिन क्लास में वह सवाल पूछ लेता था। उसकी इस आदत से सभी शिक्षक व साथी खुश थे। हर हफ्ते एक चिट्ठी भी घर लिखता, जो काफी लंबी होती थी, हर बात काफी विस्तार से लिखता था कि फलां उद्योगपति का गैस्ट लैक्चर हुआ, किस-किस कंपनी में वह घूमने गया, क्या खाया क्या पिया सब कुछ लिख भेजता था। जवाब में उसके घर से भी हफ्ते में एक के बजाय दो खत आते थे। एक मां-बाप की तरफ से दूसरा उसके छोटे भाई जगजीवन व बहन चंद्रारानी की तरफ से।

एक बार हरिनाम ने लिख भेजा कि आज उसकी मुलाकात एक राजदूत से हुई है और उसके साथ फोटो भी खिंचवाया है। यह खबर तो पूरे गाँव में ही नहीं, आस-पास के क्षेत्रों में भी फैल गई थी। आस-पास के क्षेत्रों में उसकी पहचान ककड़ी के बेल की तरह बढ़ रही थी। अगले खत में हरिनाम ने लिखा कि कई बड़ी कंपनियां उनके यहाँ नौकरी हेतु छात्रों का चयन करने आ रही हैं। उसने बताया कि अगले वर्ष जब वह सीनियर हो जाएगा तो इसी प्रकार कैंपस सलेक्शन होगा और उसे भी किसी बड़ी कंपनी में नौकरी मिल जाएगी। पत्र के अंत में वह अंग्रेजी में हस्ताक्षर करता था। इन खतों का बड़ा ही असर हुआ। जो परिवार अभी तक सिर्फ धरती पर रहकर आसमान में तारे गिन रहा था वह अब सौरमंडल के सितारे की जानकारी भी रखने लगा। जहां भी मौका मिलता अपने लड़के की तारीफ करना नहीं भूलता था।

सासाराम से दूर एक अन्य जिला है—बेगूसराय। बेगूसराय के तिलहरी गाँव के प्रधान व भूतपूर्व दारोगा मुख्तार सिंह की छोटी बेटी ने वर्धमान यूनिवर्सिटी से राजनीतिक शास्त्र में बी.ए. पास किया था। पढ़ाई-लिखाई के अलावा डांस व कढ़ाई का भी उसे शौक था। वह घर के काम-काज में निपुण नहीं थी क्योंकि लाडली बेटी से कोई काम कभी नहीं करवाया जाता था। उन्हें उसके लिए एक योग्य वर की तलाश थी। मुख्तार सिंह को लोग दारोगा जी के नाम से ज्यादा जानते थे। उसके पास भी काफी जमीन-जायदाद थी। वे बड़ी-बड़ी मूंछों वाले अत्यंत प्रभावशाली स्थानीय नेता थे। अपनी पुत्री के लिए उन्हें एक उपयुक्त वर की तलाश थी जो पढ़ा-लिखा होने के साथ-साथ जमींदार घर से भी हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारोगा मुख्तार सिंह के कानों में खड़गसिंह के बेटे हरिनाम की पढ़ाई-लिखाई की चर्चा जैसे ही पड़ी उन्होंने तुरंत ही सासाराम जाकर खड़गसिंह से मिलने का मन बना लिया। लड़की की चार फोटो खिंचवाई गई। पढ़ाई-लिखाई के कागजों की फोटो स्टेट करवाई गई ताकि जरूरत पड़ने पर दिखाया जा सके। दारोगा की वहाँ के स्थानीय विधायक से काफी करीबी पहचान थी। दारोगा को हर हाल में उस परिवार में शादी करनी थी। इसलिए विधायक को भी साथ ले जाना उसने जरूरी समझा। आठ लोगों का काफिला खड़गसिंह के घर पहुँचा। वहाँ खड़गसिंह थे नहीं। बेटे से मिलने नोएडा गए हुए थे। उनकी अनुपस्थिति में दारोगा ने गाँव में घूम-घूमकर खड़गसिंह के खानदान व विश्वसनीयता का जायजा लिया। पूरे गांव में शोर हो गया कि हरिनाम का रिश्ता आया है। सिवाय दो-चार लोगों के किसी ने भी चुगली नहीं की बल्कि इस परिवार की तारीफ ही की। दारोगा यह निर्णय ले चुका था कि वह अपनी लड़की की शादी इसी परिवार में करेगा। इसलिए कुछ ही दिनों बाद दस-बारह लोगों को साथ लेकर वे फिर खड़गसिंह के यहां पहुंच गए। उनके साथ कई बंदूकधारी भी थे ताकि यदि मना किया तो दूसरी राह पकड़कर शादी तय करा देंगे।

खड़गसिंह का अभी लड़के की शादी का कोई विचार ही नहीं था। उसका विचार था कि लड़के की शादी या तो किसी जज की लड़की से या किसी कलक्टर की बेटी से करवाएंगे। दूसरे, इतना दहेज भी लेना है कि बाकी सभी बच्चों की पढ़ाई व शादी भी उसी पैसे से हो जाए। राजपूत परिवार है, ज्यादा दहेज मिलना वैसे भी परिवार की शान को बढ़ाएगा। उन्होंने यह मंशा भी बात-बात में एक-दो मित्रों को जाहिर कर दी थी। खड़गसिंह के अलावा अब अन्य कई रिश्ते वाले भी आने लगे थे। हर आगंतुक के पास धन और बल दोनों ही ताकतें होती थीं। इतना ही नहीं, आने से पहले वे यह पता लगाते थे कि कहां से रिश्ता आ चुका है व कितने लोग आए थे। उनके साथ दो-चार ऐसे भी लोग होते थे जो किसी न किसी बहाने बातों ही बातों में पूर्व में आए हुए लोगों की बुराइयाँ करते थे और वर्तमान में आए हुए को महान बताते हुए खड़गसिंह पर मानसिक दबाव बनाने का प्रयास करते थे। खड़गसिंह भी यह बताने से नहीं चूकता कि कितने लोग अभी तक उसके घर रिश्ता लेकर आ चुके हैं और अंत में खड़गसिंह यह कहकर पीछा छुड़ाते कि हरिनाम से पहले राय ले ली जाए कि उसे कैसी लड़की चाहिए। उसकी मां से भी सलाह करते कि वह कैसी बहू चाहती है। हरिनाम की मां बहुत घबराई हुई थी कि पता नहीं, कैसी बहू

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आएगी? माडर्न तो नहीं होगी, घूंघट करेगी या नहीं। शहर में जाकर बदल तो नहीं जाएगी? कहीं घर की इज्जत ना बिगाड़ दे। उसे घर का काम-काज जरूर आना चाहिए। बेटे को बहुत लाड़-प्यार से पाला है। आखिरकार घर की एकता और इज्जत का सवाल है। घर की संस्कृति की रक्षा, मान-मर्यादा, तीज-त्यौहार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम स्त्रियां ही करती हैं।

हर किसी की अपनी-अपनी चिंता थी। भाइयों को यह चिंता थी कि कहीं हरिनाम उससे बिछुड़ न जाए। बहनों की यह कि बड़े खानदान की रईस बेटी से उनकी पटेगी या नहीं। एक बात जरूर सबके दिल में थी कि अच्छे घर से मोटा या भारी दहेज वाला रिश्ता हो जिससे घर का नाम पूरे इलाके में मशहूर हो जाए।

अभी हरिनाम का पहला साल ही था। छह माह बाद जैसे ही गाँव में घुसा, सभी से उसने नमस्ते की। छोटे-छोटे बच्चे उसके पीछे हो लिये। सूट-बूट में वह बड़ा अजनबी लग रहा था। पनिहारिन पीछे मुड़-मुड़कर उसे देख रही थी। कॉलेज से कुछ किताबें भी वह साथ लाया था। एक बैग के अलावा दो किताबें हाथ में भी पकड़े था—नीले कोट में बैरिस्टर जैसा लग रहा था। घर पर उसका इंतजार हो ही रहा था। घर को साफ-सुथरा करके सजाया गया था। हरिनाम कुल तीन दिनों की छुट्टी पर आया हुआ था। पहले दिन उसे कुल देवी के मंदिर ले जाया गया। वहां पूजा-अर्चना हुई। दो घंटे बाद जैसे ही वापस आया घर में तीन अलग-अलग जगह के रिश्ते वाले आए हुए थे पूरे दल-बल के साथ। स्थिति विस्फोटक भी हो सकती थी। परंतु खड़गसिंह के बड़े भाई सुमंतसिंह ने बड़ी ही समझदारी से काम लिया। उसने यह कहकर सभी को विदा कर दिया कि कुलदेवी का अनुष्ठान कराने के बाद ही आगे बात की जा सकती है अन्यथा यह लड़का और लड़की दोनों के लिए अपशकुन होगा। उसने आगे कहा कि अनुष्ठान एक माह बाद शुरू होकर पंद्रह दिन तक चलेगा।

किसी तरह छुट्टियां बिताकर हरिनाम प्रसाद वापस नोएडा आ गया और फिर से गाँव लौटने की हिम्मत नहीं कर सका।

हरिनाम का परिवार पारंपरिक विचारों वाला था जिसमें बुजुर्गों की बात कोई नहीं टालता था। बड़े-बुजुर्गों की बातें देववाणी की तरह मानी जाती थीं। यहाँ तक कि विवाह-शादी में भी लड़के-लड़की के मंजूरी की जरूरत नहीं होती थी और शादी के बाद ही लड़का अपनी पत्नी की शक्ल पहली बार देखता था। परिवार वाले जहाँ भी शादी तय कर दें, वहीं शादी होती थी। खड़गसिंह ज्यादा दिन तक हरिनाम के विवाह प्रस्ताव को नहीं ठुकरा सके। गाँव समाज के दबाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आगे झुकना ही पड़ा।

एक दिन एक मंत्री भुवन प्रसाद का काफिला घर के आगे रुका। करीब 25 अम्बेसेडर कारें थीं जिनमें तहसीलदार से लेकर डी.एम. तक सवार थे। देखते ही देखते सफेद खद्दरधारी नेताओं की भीड़ जमा हो गई। हर किसी को सुरक्षा के लिए सरकार की ओर से बंदूकधारी सिपाही मुहैया कराए गए थे।

प्रदेश के किसी भी मंत्री का उनके घर यह पहला दौरा था। देखते ही देखते गाँव वाले भी इकट्ठे हो गए। मंत्री जी ने झुककर खड़गसिंह को नमस्ते किया, साथ में उनकी धर्मपत्नी भी थी। उसने खड़गसिंह व उनकी पत्नी के पैर छू लिये। किसी को भी मंत्री जी के आने का प्रयोजन पता नहीं था। मंत्री जी ने भरी सभा में कहा कि "गाँव वालो! मेरा इस क्षेत्र से बहुत पुराना रिश्ता रहा है और आज मैं इस रिश्ते को फिर से मजबूत करने आया हूँ। इस गाँव को अपनी बेटी देकर—जमींदार खड़गसिंह के लड़के के साथ अपनी बेटी गरिमा सिंह का रिश्ता करके आज से इस गाँव को अपना जानेंगे।" इसकी घोषणा होते ही मंत्री के रिश्तेदार साथियों ने जोरदार तालियां बजानी शुरू की, तुरंत ही बंदूकों की गड़गड़ाहट से आसमान गूंज उठा। चारों तरफ मंत्री जी की जय-जयकार के नारे लग रहे थे। तभी एक सज्जन थाली में गुड़ व पानी लेकर आए। "लीजिए मुंह मीठा कीजिए" मंत्री जी तुरंत बोले—"हम अपनी बेटी के घर का व गांव का पानी भी नहीं पी सकते हैं। हमारी यह 'मर्यादा' है।" खड़गसिंह को हां या ना कहते नहीं बन रहा था। वह लाचार खड़ा था। दूसरी तरफ लोग कारों में से निकालकर मिठाइयाँ व फल खड़गसिंह के घर पहुँचाने लगे। 'स्वीकार है' शब्द के साथ खड़गसिंह व उसके ज्येष्ठ भाई ने मंत्री जी को गले लगा लिया। इस प्रकार खड़गसिंह के विवाह की औपचारिक घोषणा हो गई। इसी दौरान यह भी तय हो गया कि शादी हरिनाम की एम.बी.ए. परीक्षा पूरी होने के बाद की जाएगी। जो मंत्री जी को भी मंजूर था। दो दिन बाद ही मंत्री जी साधारण वेश में आकर दहेज की भी बातचीत कर गए ताकि भविष्य में कोई संशय न रहे। दहेज के विषय में मंत्री जी का रिश्ता उन्हें सर्वोपरि लगा। दहेज में मंत्री जी ने कम से कम दस लाख रुपए नकद, एक बड़ी कार, पचास तोला सोना देने का वादा किया। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि छह महीने बाद होने वाले चुनाव में यदि उसकी सरकार फिर से बनती है तो खड़गसिंह का भी विधानसभा में नामांकन करा देगा।

मंत्री जी का खड़गसिंह के घर आना-जाना शुरू हो गया था। मंत्री जी ने गाँव की कच्ची सड़क को पक्की करवा दिया था। गाँव के हर आदमी की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिफारिश करने में खड़गसिंह को अच्छा लगता था तहसील व जिले के सभी अफसर खड़गसिंह को जान गए थे व उसकी हर सिफारिश को मान लेते थे। यहाँ तक कि तहसीलदार को अपना तबादला रुकवाने के लिए खड़गसिंह का सहारा लेना पड़ा। खड़गसिंह भी बहुत महत्वाकांक्षी हो चला था। राजनीति में आकर मंत्री बनने का ख्वाब देखता था। परंतु भाग्य ने साथ नहीं दिया, चुनाव में मंत्री जी की हार हो गई। उनकी पार्टी भी सत्ता में नहीं आ पाई। अब वे भूतपूर्व मंत्री भुवन प्रसाद रह गए थे। उनके पास धन की कोई कमी नहीं थी। मंत्री रहते हुए उन्होंने चारों तरफ से कमाया था। जब खड़गसिंह व उनका भाई दुख व सहानुभूति प्रकट करने गए तो उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि दहेज में कोई कमी नहीं होगी बल्कि दुगना दहेज देंगे। उन्हें चुनाव में विरोधियों ने हराया है। वे जलते थे कि उनकी लड़की का रिश्ता यहाँ क्यों नहीं हो पाया। जबकि वे कई महीनों से चक्कर लगा रहे थे।

ठीक समय पर हरिनाम का कोर्स पूरा हो गया। गतवर्ष के सभी सीनियर साथी अपना कोर्स करके दूर-दूर कंपनियों में ऊंची नौकरी पर जा चुके थे। जयप्रकाश को भी बैंगलोर की आई.टी. कंपनी में प्रबंधक के पद पर नौकरी मिल गई थी। जयप्रकाश को कॉलेज का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी घोषित किया गया था तथा कैंपस में उसे अन्य साथियों की तुलना में सबसे ज्यादा वेतनमान पर नियुक्ति मिली थी। कैंपस छोड़ते वक्त जयप्रकाश तथा हरिनाम गले मिलकर रोये थे तथा भविष्य में भी संपर्क बनाए रखने का वचन एक-दूसरे को दिया था। कोर्स खत्म होने पर हरिनाम को भी एक विदेशी कंपनी में मार्केटिंग एक्जक्यूटिव की नौकरी भी मिल गई। पोस्टिंग बंबई शहर के लिए थी। तनख्वाह के अलावा रहने के लिए मकान भी कंपनी देगी। यह एक अच्छी खबर थी उसने तुरंत पत्र लिखकर घर खबर कर दी। 25 दिन बाद ही उसे बंबई जाना था। इसलिए बीच में ही कुछ दिनों के लिए उसने गाँव जाने का कार्यक्रम बना लिया। क्योंकि नौकरी लगने के बाद घर आना-जाना मुश्किल हो जाता।

हरिनाम को उसके मां-बाप ने शादी तय करने के बाद बता दिया था। हरिनाम इस अच्छे ऑफर से खुश था पर उसकी एक नई शर्त यह थी कि वह शादी जॉब लगने के तीन साल बाद करेगा ताकि इस बीच पूरी तरह से सेट हो सके। मंत्री जी ने इस पर भी कोई ऐतराज नहीं किया। उनका विचार था कि पढ़ाई खत्म होने के 5-7 महीने बाद दबाव डालकर गरिमा के फेरे डलवा देंगे। हरिनाम के आने की खबर गाँव के आस-पास भी फैल चुकी थी। भुवनप्रसाद स्वयं उसके गाँव में डेरा डाले हुए थे ताकि होने वाले जमाई की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खातिरदारी करने का अवसर उन्हें मिले। साथ ही अपनी पुत्री का फोटो भी वे लाए थे। उनकी यह भी इच्छा थी कि एक बार फोन पर हरिनाम की गरिमा से 'हैलो' भी कराई जाए।

मगर पटना में ट्रेन से उतरते ही हरिनाम का कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने अपहरण कर लिया। उसका मुंह दबाकर काले शीशे के बुलैरो गाड़ी में वे उसे गुमनाम जगह ले गए। वहाँ दो दिन तक उसे भूखा रखा गया। अपहरण का कारण भी नहीं बताया गया। एक कमरे में बंद करके हल्की पिटाई भी की गई ताकि वह डर जाए। कई बंदूकधारी उसके चारों ओर पहरा दे रहे थे। एक अजनबी मुंह ढककर उसके पास आया और उसके होने वाले श्वसुर भुवनप्रसाद का मोबाइल नंबर उसके मोबाइल से मिलाकर उसे थमा दिया। यह कहने के लिए कि वह पाँच दिन बाद गाँव वापस आएगा, अभी दिल्ली में ही उसे काम है। इतना कहने के बाद उसने हाथ से फोन छीन लिया और काट दिया। हरिनाम को यह पता भी नहीं था कि यह नंबर किसका है और वह किससे बात कर रहा था। वह इन सबसे अंजान था पर उस अजनबी के पास उसके परिवार व रिश्तेदारों के सभी फोन नंबर वगैरह थे।

एक सप्ताह के बाद उसे कमरे से बाहर लाया गया, इज्जत-आबरू व अदब के साथ। सामने एक नई काली शीशे वाली होण्डा कार खड़ी थी जिसमें उसे बैठाया गया। फिर से उसके मुंह को हल्के रंग की नए तौलिया से ढंग दिया गया। आधे घंटे बाद कार एक गाँव में रुक गई, वहाँ जश्न का माहौल था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह बहुत डरा हुआ था। उसने पूरी तरह चुप्पी साध रखी थी। अजनबी ने उसके मुंह का कपड़ा उतारा तो उसने स्वयं को एक जलसे में पाया। उसे अलग ले जाकर एक कमरे में स्नान करने को कहा गया। एक नाई ने उसे साबुन लगाकर खूब अच्छी तरह मल-मल कर नहलाया। उसे नई बनियान, नए जूते, नई सूट व कपड़े पहनने को दिए गए। बाहर कुछ महिलाओं के गीत गाने की आवाज आ रही थी। उससे रहा न गया। उसने क्रोध में यहाँ लाने का कारण पूछा और धमकी भी दी कि वह पुलिस को खबर कर देगा। तुरंत एक व्यक्ति ने उसकी कनपटी पर रिवाल्वर तान दी और हिदायत दी कि वह चुप रहे। यदि आगे एक शब्द भी बोला या चूं-चड़क की तो उसे गोली से उड़ा दिया जाएगा। इतना कहते हुए उसने पिंजड़े में बंद पाँच कबूतरों को मार डाला और आगे बोला—"यह छठी गोली सिर्फ तेरे नाम की है जो तुझे छठी का दूध याद दिला देगी।"

हरिनाम डर से इतना कांपने लगा कि कपड़े खराब होते-होते बचे और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां' कहने में ही उसने भलाई समझी।

नए कपड़े पहनकर वह जैसे ही बाहर निकला, बच्चों ने घेर लिया। तभी औरतों का एक झुंड वहाँ आया, आरती का थाल उनके हाथ में था। उसमें कई दीये जल रहे थे। फोटोग्राफर धड़ाधड़ फोटो खींच रहा था। एक व्यक्ति वीडियो फिल्म भी बना रहा था।

आरती के उपरांत उसे टीका लगाया गया। औरतें वहां से चली गईं परंतु कई लड़कियों ने, जिनकी आयु पंद्रह से बीस वर्ष के बीच होगी उसे घेर लिया और जोर जोर से—"जीजाजी नमस्ते, जीजाजी नमस्ते" कहने लगी। वह भी असमंजस में था कि क्या जवाब दे और प्रत्यूत्तर में गर्दन हिला देता था। जब कभी उसके चेहरे पर तनाव दिखता तभी वह रिवाल्वरधारी अजनबी सामने आकर अपनी आंखें दिखा देता था। उसके साथ दो-तीन पुलिस वाले भी थे जो उसकी तरफ कुटिल मुस्कुराहट फेंक रहे थे। कुछ देर बाद उसे एक मंडप में ले जाया गया। जहां पंडित पहले से ही मौजूद था। खाने की खुशबू आ रही थी। मंडप में एक लड़की को लाकर उसके पास बैठा दिया गया। वह दुल्हन की तरह सजी हुई थी, शादी के लाल जोड़े में उसके सिर के चारों तरफ आम के पत्तों की माला बंधी थी। अजनबी ने उसे भी शादी का सेहरा पहन लेने को कहा। वह चुप रहा। अजनबी ने कान में आकर कहा कि जिस तरह पाँच कबूतर उसने उड़ा दिए हैं उसी तरह छठी गोली से उसका भी काम तमाम कर देगा। डर के कारण उसने शादी का सेहरा पहन लिया। अब वह समझ चुका था कि उसका 'पकड़वा विवाह' किया जा रहा है। जिससे भागना उसके बूते के बाहर है। पंडित ने उससे लड़की की मांग भरवाई, शादी के सात फेरे भी लगवाए और हर कार्यक्रम की फोटो व वीडियोग्राफी होती रही। इस तरह उसकी शादी कराने के बाद अजनबी ने तुरंत उसके मोबाइल से फ़ोन मिलाकर उसके पुराने होने वाले श्वसुर भुवनप्रसाद से बात करा दी कि वह बिहार में ही किसी अज्ञात स्थान पर है और उसका पकड़वा विवाह हो गया है। तदुपरांत उसे वधू के साथ एक कमरे में बंद कर दिया गया। इस हिदायत के साथ कि पत्नी मानकर व्यवहार करे, नहीं तो भूनकर रख देंगे।

हरिनाम बहुत ही घबराया हुआ था। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे? किसे अपना दुख बयान करे? कमरे में बंद होते ही वह टूट गया और जोर-जोर से रोने लगा। इस दौरान लड़की चुपचाप बैठी रही, कुछ भी नहीं बोली। काफी देर बाद हरिनाम शांत हुआ। उस लड़की ने साड़ी के पल्लू से उसके आंसू पोंछने की कोशिश की परंतु उसने झटककर उसे हटा दिया। लड़की ने वहाँ रखे घड़े में से पानी निकालकर उसको दिया। थोड़ी देर चुप रहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के बाद उसने पानी पिया। इससे उसे कुछ शांति मिली और वह सो गया। रात को लगभग दो बजे उसकी नींद खुली तो उसने पाया कि वह एक हाथ से उसके पैर दबा रही है व दूसरे हाथ से पंखा झल रही है। इसका उस पर मनोवैज्ञानिक असर हुआ। उसने उसके विषय में सब कुछ जानना चाहा तथा सच बोलने का आग्रह किया। उसने बताया कि उसका नाम सीमा है और वह रिटायर्ड दारोगा की बेटी है। उसके पिता वर्षों से इस विवाह के लिए इच्छुक थे। वह भी हर सोमवार का व्रत इसी उम्मीद के साथ रखती थी। उसने बताया कि इस समय वह बेगुसराय जिले में है। बोलने के साथ-साथ वह पंखा भी झलती रही। शायद पूरी रात सोई नहीं थी, उसके चेहरे पर थकान साफ़ झलक रही थी।

"तू अब चाहती क्या है?" हरिनाम गुस्से में बोला।

"सिर्फ आपके चरण और कुछ नहीं, चाहे तो एक समय रोटी दे-देना पानी के साथ, जिंदगी भर सेवा करती रहूंगी—मैंने तो आपको दिल से पति मान लिया है।" एक साथ उसने यह सब कह दिया।

"तू मेरा पीछा कब छोड़ेगी?" हरिनाम बोला।

"आप स्वामी हैं। मैं पूरी तरह़ निर्दोष हूं। यह शादी मां-बाप की मर्जी से हुई है। फिर भी हर परिणाम भुगतने को तैयार हूं। परंतु मैं चाहती हूं कि आपके साथ हजारों जनम तक पत्नी बनके रहूँ। फिर भी अगर मैं आपको पसंद नहीं हूं तो आप जब चाहें दूसरी शादी कर लें और मैं आपकी दासी बनकर रह लूंगी।" सीमा ने कहा।

उसकी आंखों में आँसू थे। वह थककर चूर हो चुकी थी और वहीं बैठे-बैठे गिर पड़ी। हरिनाम ने सीमा का सिर अपनी गोदी में रख लिया और सहलाता रहा—मन ही मन उसने सीमा को अपनाने का फैसला कर लिया।

दो दिन बाद वधू के यह कहने पर उसे बाहर निकाला गया कि वह उसकी धर्मपत्नी है और उसको दुखी नहीं देख सकती।

भुवनप्रसाद के घर में कोहराम मच गया। वो असहाय थे। सत्ता में होते तो एक-एक को गोली से मरवा देते लेकिन वक्त-वक्त की बात होती है! कभी किस्मत भी धोखा दे जाती है। शुरू में भुवन प्रसाद को लगा कि जानबूझ कर उसे धोखा दिया गया। परंतु उसने संयम से काम लिया। इसी बीच दारोगा का फोन भी दुबारा आ चुका था और उसने साफ-साफ बता दिया कि हरिनाम अब उसका दामाद है, उसने उसका पकड़वा विवाह करा दिया है। साथ में चेतावनी भी दी कि उसके दामाद के खिलाफ भुवनप्रसाद कोई भी दुर्व्यवहार ना करे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अन्यथा खून की नदियां बह जाएंगी। भुवनप्रसाद जानता था कि दारोगा भी कमजोर नहीं है। उसके बड़े-बड़े बदमाशों से संपर्क रहे हैं। इसलिए उसने शांत रहना ही बेहतर समझा। मगर उसकी बेटी का बुरा हाल था, उसने खाना-पीना छोड़ दिया था। रोते-रोते उसे मूर्छा आ जाती थी।

खड़गसिंह के घर भी मातम छाया हुआ था। परंतु कोई हल किसी को नजर नहीं आ रहा था। पुलिस में भी रिपोर्ट दर्ज कराने पर विचार किया गया लेकिन उल्टे वहां निराशा हाथ लगी क्योंकि पुलिस का कहना था कि यदि शादी हो ही गई है तो उन्हें घर बसाने दो। नाहक क्यों हल्ला मचा रहे हो। कोई भी कुछ नहीं कहेगा, फैसला होने में दसियों साल लग जाएंगे। तब तक बेटियां कुवांरी बैठी रहेंगी।

कुछ दिन और वहाँ रुकने के बाद हरिनाम अपनी पत्नी सीमा के साथ घर आया। दुल्हन वेश में सीमा आकर्षक लग रही थी। उसके सौंदर्य व रूप रंग जैसी कोई भी लड़की पूरे गाँव में नहीं थी। नई बहू के गाँव में आते ही शोर मच गया। खबर आग की तरह फैल गई। सभी गाँव वाले बहुत क्रोधित थे। किसी ने भी उनसे बात नहीं की। वो चुपचाप वहाँ खड़े रहे। खड़गसिंह का क्रोध फूट पड़ा। उसने हाथ ऊपर उठाते हुए तुरंत घर से निकल जाने को कहा। बोला अब वो उसका बेटा नहीं है। हरिनाम फिर भी चुपचाप खड़ा रहा। किसी भी बात का जवाब नहीं दिया। उसके मां, भाई, बहन भी दूर खड़े देखते रहे फिर अचानक पहले उसकी छोटी बहन आगे बढ़ी और उसके पीछे-पीछे बड़ी बहन भी आगे आई तथा भाभी-भाभी कहते हुए उसको गले लगा लिया। थोड़ी देर में ही आरती का थाल सजाकर उसकी आरती उतारी गई व आगवानी की गई। सीमा ने सभी के पैर छुए। वहीं भुवनप्रसाद भी खड़े थे। वे यह सब देखकर स्वयं को रोक न सके और आगे बढ़कर दोनों को गले लगा लिया। उनका गला रुंध गया था और आंखों में आंसू थे। भुवनप्रसाद ने हरिनाम के साथ आए दूसरे लड़के के विषय में पूछा कि वह कौन है? दरअसल हरिनाम ने जयप्रकाश को बैंगलौर से बेगूसराय बुला लिया था। ताकि वह थोड़ी हिम्मत बंधा सके। हरिनाम ने उसका सबसे परिचय कराया। जयप्रकाश ने परिचय के दौरान हाथ जोड़कर सबका अभिवादन किया व हर सवाल का बड़ी ही शालीनता से जवाब दिया। बुजुर्ग लोगों में जयप्रकाश को लेकर खुसुर-फुसुर शुरू हो गई। वह अभी अविवाहित था। भुवन प्रसाद व उसके भाई को यह लड़का पसंद आ गया। खड़गसिंह व उसकी पत्नी मां-बाप का रोल करने को तैयार थे। जरूरत सिर्फ उसके हां करने की थी। हरिनाम ने उसे पहले ही सब कुछ बता दिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वह भुवन के प्रस्ताव पर उनकी लड़की से विवाह करने को तैयार हो गया। पुनः भुवनप्रसाद ने घोषणा की कि अब उसे उसका खोया हीरा मिल गया है। भुवनप्रसाद ने ज्यों ही अपनी लड़की की शादी जयप्रकाश से करने की इच्छा जताई वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने खुशी का इजहार किया। जयप्रकाश और गरिमा की शादी की तैयारियां शुरू हो गई। भुवनसिंह बोला, शादी जल्द से जल्द हो जाए तो अच्छा रहेगा। इस पर खड़गसिंह ने कहा मैंने अपने बेटे हरिनाम की शादी के बहुत सपने देखे थे। दुर्भाग्यवश उसकी शादी में हम अपना अरमान नहीं पूरा कर सके पर हम अपने इस बेटे (जयप्रकाश) की शादी में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। इसलिए हमें कुछ समय तो मिलना ही चाहिए। दोनों पक्षों की सहमति से शादी की तारीख पाँच दिन बाद तय की गई। दोनों पक्ष अपनी तरफ से कोई कमी नहीं रहने देना चाहते थे। हालांकि जयप्रकाश अनाथ था पर अब उसे एक भरा-पूरा परिवार मिल गया था। जिसमें मां-बाप, भाई-बहन सभी का प्यार था। जयप्रकाश बहुत खुश था। हरिनाम की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था। उसके यार की शादी जो थी और उसने भी सीमा जैसी पतिव्रता और नेक जीवनसंगिनी को पाया था तो खुश होना लाजिमी था।

गाजे-बाजे, गाड़ी-मोटर सभी का इंतजाम खड़गसिंह ने खुद किया। भुवनप्रसाद ने रस्म के तौर पर उन्हें सगाई का रुपया दिया। ढोल मजीरों और नाच-गाने के बीच पाँच दिन का समय कब गुजरा, किसी को पता ही नहीं चला और शादी की तारीख भी आ गई। बड़ी शान से जयप्रकाश की बारात निकाली गई। महिलाएं व बच्चे घर के बाहर छत पर चढ़कर उचक-उचककर देख रहे थे। घोड़ी पर जयप्रकाश के अलावा हरिनाम की चचेरी बहन का तीन साल का बेटा भी सिर पर सेहरा बांधकर दूल्हे की तरह बैठा हुआ था। आतिशबाजी और बैंड-बाजों की शोभा देखते ही बनती थी। घराती व बराती दोनों ही पक्ष नाचने-गाने में मशगूल थे। वे बाजे वालों पर पैसा लुटा रहे थे। कभी शकीरा की धुन पर डांस होता तो कभी 'कजरारे-कजरारे' गाने की धुन पर! जयप्रकाश भी कभी-कभी घोड़ी पर बैठे हुए दोनों हाथ ऊपर उठाकर हल्का-सा डांस का दृश्य पैदा करके माहौल को और नशीला, रंगीला व जोशीला बना देता था। हरिनाम ने भी खूब डांस किया, "आज मेरे यार की शादी है।" सीमा ने तोहफे में गरिमा को एक चैन दी। विदाई के समय भुवनसिंह ने समधी के रूप में खड़गसिंह से गले मिलकर शगुन की विदाई दी। इस तरह गरिमा हरिनाम की होते-होते जयप्रकाश की हो गई। दोनों अपनी पत्नियों के साथ खुश थे। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्मदिन का तोहफा

बच्चे के जन्मदिन पर सुबह से ही बधाइयां आनी शुरू हो गई थी। मां-बाप के लिए बच्चा तो बच्चा ही होता है। चाहे उसकी उम्र जो भी हो। उसको सबसे पहले मां ने बधाई दी और सोते हुए पिता से पहले बधाई देने की शर्त जीत ली। अब वह बीस साल का है। पिछले बीस सालों से अब तक जमाना पूरी तरह बदल गया है। आज बच्चे के पास मोबाइल फोन है जिसमें रात्रि के ठीक बारह बजते ही एस.एम.एस. आने शुरू हो जाते हैं। भोर की पौ फटते ही नाना-नानी, मामा, मौसी, अंकल, चचेरे-मौसेरे भाई-बहिन आदि सभी के फोन आने लगते हैं। मोबाइल में एस.एम.एस. लगातार आ रहे हैं। बच्चा दायें-बायें होकर चुपचाप संदेश पढ़ लेता है। कुटिल मुस्कुराहट के साथ। किसी-किसी को पलटकर जवाब भी भेज देता है। लेकिन किसी के संदेश को वह बार-बार पढ़ रहा है। मगर इस बात का खयाल रख रहा है कि कहीं गलती से कोई और संदेश न पढ़ ले। इसी कारण मोबाइल को दायें-बायें करके छिपाकर पढ़ता है।

नया दिन है... नया जोश... नई आशाएं हैं। बच्चा अपना जन्मदिन पूरे जोश के साथ मनाने को आतुर है। समस्त दिन का प्रोग्राम कई दिन पहले से ही बन चुका है।

सुबह को यहाँ, दोपहर को वहाँ और शाम को फिल्म देखनी है। फिर रात को नरूला में खाना खाना है। सब सुनिश्चित है।

इन बीस वर्षों में जमाना बहुत बदल गया है। बीस वर्ष पहले जब उसके पापा गणपति ने जब अपना जन्मदिन मनाया था, तो इसकी जानकारी केवल चार लोगों को थी। तब मोबाइल भी नहीं था। जगह-जगह पब्लिक बूथ भी नहीं थे। सच तो यह है कि उसे यह भी पता नहीं था कि उसका असल में जन्मदिन कब है। स्कूल में मास्टर जी ने अंदाजे से जो दिन लिख दिया बस वही तय हो गया। सभी दिन तो एक से होते हैं बस यही सोचकर हल्का-फुल्का जन्मदिन दो-चार मित्रों के साथ मना लिया छोटे-मोटे तोहफे दे ले लिए। शाम को आइसक्रीम और चाट खिला दी—बस मन गया जन्मदिन।

गणपति को अपने दोस्तों को स्वयं बताना पड़ा कि आज उसका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जन्मदिन है। परंतु बदलते जमाने के साथ सब कुछ बदल गया है। अब तो मोबाइल में बर्थ डेट फीड कर लेते हैं। और ठीक दिन पर अलार्म बज जाता है। फिर मनाते हैं "हैप्पी बर्थ डे"।

बच्चा करीब रात को नौ बजे घर आता है। थका हुआ। पूरे दिन की थकान से चूर। अभी तक तो पूरा दिन दोस्तों में गुजारा, अब घर पर जन्मदिन मनाने की बारी हे। केक मँगाकर रखा हुआ है। माँ ने कई तरह के पकवान-मिठाईयां तैयार कर ली हैं। बच्चा बहुत थक चुका है। अब केक काटने का मूड नहीं है। सिर्फ औपचारिकता वश थोड़ा बहुत...।

बच्चे को पहली बार मित्रों ने कीमती कपड़े भेंट किए हैं। जिनमें शर्ट, टी-शर्ट, जींस आदि हैं। सभी कपड़े ब्रांडेड व कीमती हैं। माँ को कुछ शंका है कि कहीं इसकी कोई गर्लफ्रेंड तो नहीं। जिस प्रकार की ड्रेस वह लाया है शंका होना स्वाभाविक है।

माँ घुमा-फिराकर बच्चे से सवाल कर रही है –

बेटा! कहां गए थे, साथ कौन था? किस मित्र ने क्या-क्या दिया? ये तो बहुत कीमती शर्ट है आदि।

बच्चा असहज हो जाता है। धीरे-धीरे चार-पाँच मित्रों के नाम गिनाता है। "इन पाँचों ने पैसे इकट्ठा करके खरीदी है।" जबकि असलियत कुछ और ही थी। जिसे वह छुपाना चाहता है। "ये वाली मेरी है।" एक शर्ट को छोटा भाई उठा लेता है।

"यहीं रख! सिर्फ मेरे लिए है।"

माँ फिर सवाल करती है–"पांचों लड़कों ने बहुत कीमती तोहफे दिए हैं।"

"हां-हां"। बच्चा इन सवालों को टालना चाहता है।

माँ संतुष्ट होकर चुपचाप बैठ जाती है और आगे कुछ जानने की जिज्ञासा को वश में कर लेती है।

बाप वहीं बैठा चुपचाप मुस्कुराता रहता है। वह सब कुछ ध्यान से सुन रहा है। उसे लगा कि कहीं कोई गड़बड़ जरूर है। वह हकीकत समझ रहा था अपने अनुभव के आधार पर।

बच्चे के जवाब से असंतुष्ट बाप तनाव में आ जाता है। वह नहीं चाहता कि उसकी कोई गलत संगति हो या कोई लड़की उसके भविष्य निर्माण में बाधा बने। अभी वह बच्चा है। उसका पूरी तरह से दुनियादारी से अलग रहना जरूरी है। उसे अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाना है। पिता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को पुत्र से अंतहीन अपेक्षाएं हैं। उसके मन में आज अजीब सा खौफ छाया है। वह चाहता है कि काश! उसका संशय गलत हो।

वह आंखें बंद करके नारद जी का ध्यान करता है—

नारद जी प्रकट होते हैं, वह बच्चे की असलियत जानने की प्रार्थना करता है।

पहले नारद जी मुस्कुराते हैं और फिर कहते हैं—"गणपति वत्स! बीस साल पहले जब तुमने अपना जन्मदिन अपनी गर्लफ्रैंड के साथ मनाया था तो उसने तुझे गिफ्ट में बहुत सारे कपड़े दिए थे। तब तुने अपनी मां को क्या जवाब दिया था?

याद है, कैसे उसे भी आसानी से इसी तरह बहला दिया था, और वह चुप हो गई थी।

तूने वही जवाब दिया था जो तेरे बाप ने अपनी पत्नी से इसी संदर्भ में ऐसे ही बहाना बनाते हुए दिया था। वही सवाल, वही जवाब, वही परिस्थितियां—बदला है तो बस समय, उत्साह-तरीका-आकांक्षा और पर्व मनाने का ढंग।

बेटे को जींस-टी-शर्ट गिफ्ट में मिली है, तुझे कमीज-पैंट मिली थी और तेरे बाप को कुर्ता-पायजामा मिले थे। और आगे की मत पूछ, यह चक्र बहुत पुराना है।

हर किसी का जवाब दूसरे पक्ष की आंकाक्षाओं को स्वतः कम कर देना है। मुझे लगता है कि तेरे सवाल का जवाब तुझे मिल चुका है। और याद रख! फिर बीस-बाईस साल बाद मुझसे तेरा यह बालक भी यही सवाल फिर दोहराएगा।"

नारद जी चले जाते हैं।

मौन धारण किए हुए गणपति रिमोट से बार-बार टी.वी. चैनल बदल रहा है और मन में आए विचारों के अनंत वेग को कभी रोक रहा है और कभी उनमें स्वयं ही बह रहा है। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसके लिए ?

आजमगढ़ के गाँव आज भी विकास और शिक्षा के क्षेत्र में काफी पीछे हैं। वहीं के एक गाँव में जानकीदास व रामगोपाल नाम के दो मित्र रहते थे। उनकी दोस्ती की गाँव में मिसाल दी जाती थी। जानकीदास मल्लाह और रामगोपाल जात का काही था। दोनों परिवारों में अच्छा मेलजोल था, कोई भेदभाव नहीं था। अच्छे व बुरे वक्त में वे एक-दूसरे की मदद के लिए तैयार रहते थे। दोनों परिवार बहुत धनी भी नहीं थे परंतु संतुष्ट जरूर थे।

जानकीदास का छोटा बेटा अजय और रामगोपाल का मंझला बेटा जयराम दोनों गहरे दोस्त बन गए। आपसी दोस्ती की प्रेरणा उन्हें विरासत में मिली थी। पारिवारिक दोस्ती की ये अगली पीढ़ी उसी आपसी सद्भाव, प्रेम व सहयोग की शृंखला को आगे बढ़ा रही थी। जिसको उम्रभर निभाने की कसम दोनों ने बचपन में हाथ के ऊपर हाथ रखकर मंदिर में खाई थी।

गाँव के एकमात्र सरकारी स्कूल से दसवीं पास करने के बाद जयराम ने अजय को कहा—यहाँ गाँव में कुछ नहीं है, न रोजगार के साधन और न ही मनोरंजन। यहाँ रहे तो सिर्फ खेती तक ही जिंदगी सिमटकर रह जाएगी। उससे भी मुश्किल से दो जून की रोटी मिलती है। क्यों ना हम किसी बड़े शहर में चलकर काम करें। अच्छा रोजगार भी मिल जाएगा और शहर जाकर बसने की इच्छा भी पूरी हो जाएगी। फिर वहाँ पर तो सिनेमा भी होता है, रोज अच्छी-अच्छी पिक्चर देखने को मिलेगी। अजय को प्रस्ताव अच्छा लगा। पढ़े-लिखे लोगों की कद्र तो थी पर रोजगार नहीं था। लेकिन एक ही डर उसे लग रहा था कि कहीं शहर की चमक में हम अंधे न हो जाएं। मन में शंका और खुशी के मिश्रित भाव लिये अजय और जयराम दोनों ने अपने-अपने घरों में बात की। कई दिनों तक इस विषय पर बहस चलती रही। दोस्तों ने भी अपनी-अपनी राय रखी। कुछ लोगों ने कहा अगर नाम और पैसा कमाना है तो ये गाँव में रहकर संभव नहीं है। उन्नति के मार्ग शहर में ही खुलते हैं। अगर गाँव में रह गए तो मिट्टी खोदोगे और लोगों की चिट्ठियाँ बाँचते फिरोगे।

दूसरे पक्ष का कहना था कि शहर जाने से बुरी आदत पड़ जाएगी। न कपड़े पहनने का ढंग और न ही वाणी में मिठास। वहाँ तो बस अंग्रेजी बोलो और पैंट पहनकर घूमते रहो। खाने को न तो दूध मिलेगा न ताजी सब्जी। बस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सूखे आलू और डबलरोटी खाकर शरीर कमजोर हो जाएगा। इन सबके अलावा शहर में आपसी समझ की भी कमी है। सब स्वार्थी होते हैं। सुबह से रात तक मरते रहो, फिर भी चैन नहीं। इसलिए गाँव की जिंदगी ही अच्छी है। कम से कम घर-परिवार के साथ रहोगे। कोई दुःख-तकलीफ होगी तो कह सकोगे, शहर में तुम्हारी कौन सुनेगा?

गहन विचार-विमर्श के बाद तय हुआ कि दोनों शहर जाएंगे, साथ-साथ रहेंगे और हफ्ते में कम से कम एक बार खत जरूर लिखेंगे जिसमें दोनों की राजी-खुशी की खबर लिखी हो। खुशी-खुशी दोनों को विदाई दी गई और वे पंद्रह दिन का राशन, सत्तू और गुड़ बांधकर बंबई की तरफ चल दिए। विदाई के वक्त गांव के मित्रगण व सगे-संबंधी मौजूद थे। दोनों ने पैर छूकर बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया और साथ में आवश्यक निर्देश भी—बेटा, तुम दोनों पढ़े-लिखे हो, मिलकर रहना, हमारा नाम ऊंचा करना, बुरी संगत से बचना, खाने-पीने की कमी न करना... आदि-आदि। औरतें घूंघट के बीच दोनों दुआएं दे रही थीं। इसी तरह गर्मजोशी, आशाओं और शंकाओं के बीच वे बंबई रवाना हो गए। किसी बड़े शहर में जाना उनके लिए पहला अनुभव था। इस कारण वे हर चीज आश्चर्य से देखते और देखते रह जाते। ओह! कमाल है, ऐसा तो पहली बार देखा है! उनके मुंह से अनायास ही निकल पड़ता। वहां जाकर वे सबसे पहले गांव के ही एक अन्य व्यक्ति सरजू से मिले जो दस साल पहले बंबई आया था और यहीं बस गया था। सरजू ने उन्हें एक खोली किराए पर दिला दी। खोली में रहना अजय और जयराम को अजीब लगता था। कहाँ गाँव का खुला-खुला माहौल और कहां एक कमरे की झोपड़ी। गाँव के बगीचे, खेत-खलिहान उन्हें बहुत याद आते थे। लेकिन वे मजबूर थे। सोचते, कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। हफ्ते भर बेकार बैठने के बाद सरजू ने उन्हें एक दुकान पर काम दिला दिया। उसी दुकान पर एक अन्य नौकर था रामटेक, उसके साथ कुछ ही दिन में दोनों घुलमिल गए और अच्छे दोस्त बन गए। रामटेक बहुत मेहनती था। दिन में दुकान पर काम करता और रात में 3-4 घंटे ऑटोरिक्शा चलाता था। जिससे उसकी अच्छी आमदनी हो जाती थी। रामटेक ने जयराम और अजय को भी रिक्शा चलाना सिखाकर रिक्शा दिला दिया और वे भी रात को ऑटोरिक्शा चलाने लगे। महीने में आमदनी का कुछ हिस्सा गांव भी भेज देते थे। चिट्ठी भी आती-जाती रहती थी। इस तरह शहर की जिंदगी खुशनुमा गुजर रही थी।

एक दिन सेठ ने अजय को कुछ रुपए आलमारी में रखने को दिए मगर वो रुपए चोरी हो गए। इस पर सेठ ने समझा कि अजय ने ही रुपए चुरा लिये हैं और उसने उसे पीटा भी और उसका तनख्वाह भी काट लिया। दुःखी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होकर अजय और जयराम दोनों ने सेठ की नौकरी छोड़ दी और दिन-रात ऑटोरिक्शा चलाना शुरू कर दिया। ऑटो एक ही था जिसे बारी-बारी से 12 घंटे अजय और 12 घंटे जयराम चलाता था। जब एक वापस लौटता तो दूसरा उसके लिए खाना-पीना तैयार रखता था। थोड़ी ही देर होने पर एक-दूसरे की चिंता होने लगती थी। इस तरह दिन ठीक-ठाक गुजर रहे थे। एक दिन अजय ऑटो लेकर गया था, जब वो वापस लौट रहा था कि एक शेख ने उसे रेलवे स्टेशन चलने को कहा। हालांकि अजय का मन नहीं था फिर भी शेख के कहने और ज्यादा किराया देने पर वो राजी हो गया। रेलवे स्टेशन आते ही शेख जल्दी-जल्दी उतरा। उसका पर्स जिसमें कुछ रुपए और उसका पासपोर्ट रखा था, ऑटो में ही गिर गया। बाद में अजय ने देखा तो उसने जयराम को बताया, दोनों ने फैसला किया कि पर्स शेख को लौटा देंगे। उसमें एक छोटी डायरी पड़ी थी जिसमें शेख का फोन नम्बर था। इधर शेख बहुत परेशान था। जब उनका फोन आया तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। तुरंत उनके बताए पते पर वो पहुँचा और बहुत शुक्रिया अदा किया। बातचीत के दौरान पता चला कि वो दुबई का व्यापारी है। बंबई से सामान ले जाकर दुबई बेचता है। शेख धर्म-कर्म को बहुत मानता था। पांचों वक्त का नमाज अदा करता था, रोजे रखता था, जरूरतमंदों को दान बांटता था। ये उसकी धार्मिक प्रतिबद्धता थी। शेख ने उन्हें सलाह दी कि वो ऑटो छोड़कर शहर में पटरी लगाकर विदेशी सामान बेचने का काम शुरू करे। एक साथी माल खरीद कर लाए और दूसरा बेचे। इसके लिए उल्लाहनगर सबसे बढ़िया जगह है। परंतु उनके पास इतनी पूंजी इकट्ठी नहीं थी कि वहां पटरी पर माल बेच सकें। शेख ने उनकी बहुत मदद की। कुछ माल उधार भी दिया और उन्होंने घर पैसे भेजने भी बंद कर दिए ताकि पूंजी इकट्ठा हो सके। इस तरह से उनका व्यापार शुरू हुआ।

काम दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया। भाग्य ने उनका साथ दिया और दो वर्ष के बाद नगरपालिका ने पटरी वालों के लिए जगह अलॉट कर दी। इससे उनकी और चांदी हो गई। कहते हैं न, आगे बढ़ने के दिन होते हैं तो ग्रह-नक्षत्र भी उसी तरह साथ देने लगते हैं और दिन दूनी रात चौगुनी वाली बात सत्य हो जाती है।

अजय और जयराम के साथ भी यही हो रहा था। उनमें आगे बढ़ने का साहस भी था और उचित मार्गदर्शन भी मिला। अजय और जयराम तरक्की करते गए। उनका कारोबार विदेशों तक फैल गया। विदेशी ग्राहकों की संगत से उनकी भाषा और व्यक्तित्व में भी परिवर्तन हुआ। यहाँ तक की अजय ए. सिंह और जयराम जे. राम हो गया। दुबई का शेख भी निरंतर मदद करता रहा और तरक्की के नए रास्ते खुलते गए। कुछ ही वर्षों में ए. सिंह और जे. राम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लखपति, फिर करोड़पति बन गए—जयराम ने बंबई में ही सरजू की बड़ी बेटी से शादी कर ली और अजय ने अपने ही दफ्तर में काम करने वाली एक महिला अधिकारी से विवाह रचा लिया। इस तरह से दोनों की गृहस्थी बस गई थी। अजय की पत्नी कारोबार में भी उसका हाथ बंटाती और जयराम की पत्नी एक आदर्श घरेलू स्त्री थी जो अपने पति का भरपूर खयाल रखती थी। दोनों अपनी पत्नियों के साथ बहुत खुश थे। कुछ दिनों बाद अजय को लड़का हुआ जिसका नाम उसने 'हरि' रखा पर प्यार से उसे 'हेरी' कहकर बुलाता था ताकि नाम में देशी और विदेशी दोनों का पुट बना रहे।

अजय और जयराम के बीच की पार्टनरशिप में किसी तरह की लिखा-पढ़ी नहीं थी। पूरी नींव विश्वास पर टिकी थी। एक-दूसरे पर दोनों को अटूट विश्वास था।

जयराम की शादी को तो उसके घर वालों ने मान्यता दे दी पर अजय का परिवार इस शादी से नाराज था। उन लोगों ने अजय से सारे संबंध तोड़ लिये थे। इसलिए गाँव से अजय का संपर्क खत्म हो गया था। परंतु जयराम के घर से राजी-खुशी की खबर आती रहती थी।

पूरे गाँव में हैजा फैल गया था और उसी में जयराम की माँ का देहांत हो गया। जयराम अपनी पत्नी के साथ गाँव गया। वह काफी दिन बाद गाँव जा रहा था सो गाँव की यादें मन में उमड़-घुमड़ रही थीं। हालांकि वह मातम के माहौल में गाँव गया था। इसलिए वहाँ कोई बड़े स्वागत की बात नहीं थी।

गाँव में महामारी पूरी जोरों से फैली थी—कोई दवाई कारगर नहीं हो पा रही थी। हैजा ने जयराम की पत्नी को भी चपेट में ले लिया। इस प्रकार जयराम पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। जयराम करीब दो महीने गाँव में रहा। इस बीच अजय से दो-चार बार बात करके काम की जानकारी भी लेता रहा। अजय की बीवी चालाक थी, उसके मन में लालच समा गया। उसने अजय के कान भरने शुरू किए कि सारा काम-धंधा तो तुम्हीं देख रहे हो। सारा हक तुम्हारा ही बनता है और जयराम की कोई आस—औलाद भी तो नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि गाँव वाले जयराम को हमारे खिलाफ भड़का रहे हों या वह गाँव से कुछ और लोगों को साथ लेकर आए और पूरे कारोबार पर कब्जा कर ले। रुपए-पैसे का मामला है, हमेशा चौकस रहना चाहिए। इसलिए बेहतर होगा कि सभी कागज पहले से ही अपने नाम करवा लिया जाए। ताकि आने वाले समय में कोई झंझट ना रहे। ये बात अजय को जंच गई और उसने जयराम को झटका देने का मन बना लिया।

जैसे ही जयराम गाँव से आया उसे रेलवे स्टेशन पर ही रोक लिया गया और अलग ले जाकर सबसे पहले खाली कागज पर दस्तखत करवाकर सुनसान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह पर उसकी हत्या करके समुद्र में बहा दिया गया। अजय ने इस बात को गोपनीय रखा। गाँव वालों को इसकी भनक ना लगे इसलिए अजय हर महीने जयराम के नाम से गाँव में मनीआर्डर व पत्र भेजता रहा। इस तरह किसी को शक भी नहीं हुआ। शहर वाले सोचते, जयराम गाँव गया है और गाँव वाले सोचते कि वो शहर में है। अजय का काम चलता रहा। अजय और उसकी बीवी सारी संपत्ति के मालिक बनकर बहुत खुश थे। अब सारे बिजनेस पर उनका ही अधिकार था। अजय का बेटा हरि बड़ा हो रहा था और साथ ही उसकी जिद भी। हरि जो कुछ भी मांगता माँ-बाप उसकी हर इच्छा पूरी करते। हरि अपने माँ-बाप का इकलौता लड़का था और बहुत ही लाड़ला। उसको अच्छे व मंहगे स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया। वह पढ़ने-लिखने में भी तेज था और स्कूल के हर इम्तिहान में अव्वल आता था।

कई वर्षों तक जयराम की दौलत पर अजय व उसके परिवार ने खूब ऐश किया परंतु गलत तरीके से हासिल की गई खुशी ज्यादा दिन नहीं टिकती। अजय के बुरे दिनों की शुरुआत हो गई। अजय की बीवी को पीलिया हो गया और अनजाने में बदपरहेजी की वजह से बीमारी ने गंभीर रूप धारण कर लिया। एक दिन अजय की बीवी ने अजय को बुलाया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "मैं आपसे एक वचन लेना चाहती हूं, क्या आप मेरी बात मानेंगे?" अजय ने नम आंखों से अपना सिर 'हां' में हिलाया और उसने हरि का हाथ अजय को पकड़ा कर कहा, "देखो ये बेटा आपको सौंप रही हूं। आपके लिए यह मेरी धरोहर है। ये आपके खानदान की बेल है जो निरंतर आपके वंश को आगे ले जाएगी और यह हमारे प्यार की निशानी भी है। आज एक वादा और करो कि हरि को हरदम खुश रखोगे और यदि अपनी जान की बाजी भी लगानी पड़े तो हरि की रक्षा करोगे।" आंसुओं की धारा के बीच अजय ने गरदन हिलाकर हां कर दी और जैसे ही रोजी की तरफ देखा वह परलोक सिधार चुकी थी।

माँ की मौत का सदमा हरि को बर्दाश्त नहीं हुआ और वह रात-दिन माँ की याद में तड़पने लगा। हरि का अब किसी भी काम में मन नहीं लगता था। दुख के मारे वह पढ़ने कॉलेज भी नहीं जाता था। सारा वक्त इधर-उधर घूमकर निकाल देता था। वह बुरी संगत में पड़ गया। सुबह गाड़ी लेकर महिला मित्रों के साथ घूमने निकल जाता था। शराब व सिगरेट की लत भी बढ़ती चली गई। एक इसाई महिला सोली से उसके संबंध भी बन गए। वो स्वयं भी शराब पीती और उसको भी शराब के लिए उकसाती। साथ में एक और मित्र मिल गया इस तरह तीनों का आवारागर्दी का एक ग्रुप बन गया। जिसका काम माँ-बाप से झूठ बोलना और क्लबों में टाइम पास करना था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब भी उस महिला को शराब पीने की इच्छा होती तो हरि को फोन करके बुला लेती थी। इस तरह समय और पैसे की बरबादी में हरि को नई जिंदगी दिखाई देती थी। ऐसा आभास ही नहीं होता था कि जिंदगी का कोई और मकसद बचा है और कुछ करना भी है।

हरि को उस लड़की से लगाव हो गया था। वह उससे प्यार करने लगा था और जिंदगी भर साथ रहने के सपने भी देखने लगा था। वह उससे एक मिनट की जुदाई भी बर्दास्त नहीं कर सकता था। सोली जिस दिन नहीं मिलती हरि परेशान हो जाता था। घर में बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगता था, नौकरों को डांटने लगता था। एक बार जब दो दिन सोली हरि को नहीं मिली तो वह बैंग्लोर जाकर उसे ढूंढ निकाला। वहाँ वह डिस्को में एक मित्र के साथ बैठी मिली। हरि को बहुत गुस्सा आया। सोली ने कहा मैंने तुमको कभी भी प्यार नहीं किया और मैंने कभी तुमको ऐसा कहा भी नहीं, यह तो सिर्फ दोस्ती थी। अगर तुमने इसे गंभीरता से लिया तो इसमें मेरा क्या दोष? 'आई वाज जस्ट फ्रेंडली!' इस घटना के बाद हरि और उदास रहने लगा। वह हमेशा खोया-खोया सा लगता और पूरी तरह से उसने खुद को शराब में डुबो लिया। ज्यादा शराब की वजह से उसके गुर्दे खराब हो गए। अजय ने उसका इलाज बंबई के सबसे महंगे अस्पताल में कराया पर कोई फायदा नहीं हुआ। डॉ. ने विदेश ले जाने की सलाह दी। हरि को अमरीका ले जाया गया। छह महीने तक इलाज चला पर कोई फायदा नहीं हुआ। इस दौरान काम-धंधा भी कम होते-होते खत्म-सा हो गया। डॉक्टरों ने लॉस एजंल्स ले जाने की सलाह दी। ताकि वहाँ के प्रसिद्ध अस्पताल में इलाज हो सके।

व्यवसाय बंद होने से पैसे की तंगी सामने आने लगी और मकान, दुकान, खरीदे हुए प्लाट आदि धीरे-धीरे बिकने लगे। लॉस एजंल्स में लगभग साढ़े तीन महीने तक इलाज के बाद डॉक्टरों ने जवाब दे दिया और भारत वापस भेज दिया। अजय की सारी पूंजी समाप्त हो चुकी थी और ऐसी स्थिति में उसे गांव की याद आई।

अजय ने गाँव वापस जाना ही बेहतर समझा। विदेश से बंबई लौटकर उसने दो-तीन दिन में सारा काम समेट लिया और बीमार हरि को लेकर गाँव चला गया। गाँव में सभी उदार प्रकृति के लोग थे इसलिए अजय को किसी तरह के प्रतिशोध का सामना नहीं करना पड़ा।

यद्यपि हरि की बीमारी का इलाज मुख्यतया बंद हो चुका था। फिर भी दर्द निवारक गोलियां, विटामिंस के इंजेक्शन रोज दिए जाते थे। अजय की आर्थिक स्थिति बदूतर हो गई थी। अब तो दवाइयां भी उधार आने लगी थी। स्थिति यहाँ तक पहुँची कि उधार दवाइयां देने से मेडिकल स्टोर वालों ने भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना कर दिया।

कहते हैं गरीबी के जैसा दुश्मन कोई नहीं। अजय को गाँव वाले भी नफरत की निगाह से देखने लगे। कोई भी मदद के लिए सामने नहीं आया। सच तो यह है कि अजय ने भी अपने भरे-पूरे दिनों में किसी की मदद नहीं की थी। जो जैसा करता है वैसा ही आगे पाता है, यही कुदरत का नियम है। इसके आगे सब लाचार और बेबस हैं पर इस बात को समझता कौन है?

अजय को बार-बार एहसास होता कि जयराम ही उसके नाश का कारण है। हो न हो वही अपना बदला मुझसे ले रहा है। सच ही है, आत्मा कभी मरती नहीं है, वह तो अजर-अमर होती है। एक शरीर छोड़ती है तो दूसरे में प्रवेश कर जाती है। परंतु लोग कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति अपमृत्यु में मरता है तो उसकी आत्मा तब तक नया जामा नहीं पहनती जब तक प्रकृति के नियंता के यहां उनके दिन पूरे नहीं होते और वे इधर-उधर भटकती अपने दुश्मनों का नाश करती फिरती है।

भोर के लगभग चार बजे थे। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। टिटहरी की आवाज सुबह की शांति भंग कर रही थी। ताजी हवा बह रही थी। यह ऐसा समय होता है जब कुछ लोग गहरी नींद में, तो कुछ स्वप्न लोक की सैर कर रहे होते हैं। परंतु अजय को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। उसके मन में कुछ कुंठा थी, एक अपराधबोध था। कहीं न कहीं कोई ऐसा गुनाह हो गया है जिसका फल आज सामने है। यही सोचते हुए रात भर जागने के बाद अजय को हल्की नींद आई थी कि हरि ने आवाज दी और कहा—"मेरे मुंह के ऊपर की चादर उठाकर मुझे देखो। आओ! अभी आओ, मैं तुमसे मिलने को बेचैन हूं। हरि की आवाज में कंपन था। अजय तुरंत हरि के पास जाता है। धीरे से चादर उठाकर हरि का मुंह देखने को झुकता है तो पाता है कि जयराम हरि की शैय्या पर लेटा है। जिसका 10 साल पहले उसने कत्ल करवाया था। वह चीखता है मैं जयराम हूं।" तेरे बेटे के अंदर! तूने मुझे बर्बाद किया और मैंने...। देखो ये अपना हाल। मैं अब जा रहा हूं और देखते ही देखते हरि का शरीर निर्जीव पड़ गया। वह जोर-जोर से चीख-चीखकर रोने लगा कि अचानक उसकी नींद टूट गई। यह तो भयानक सपना था मगर हरि...?

हरि अब इस दुनिया में नहीं था। अजय फफक-फफककर रोने लगा। अजय की आंखों से आंसू स्वतः ही निकलते जा रहे हैं और वो थमने का नाम नहीं ले रहे। किसके लिए? यह एक अनुत्तरित सवाल है। आज सब कुछ खोकर गांव में पुनः उसी स्थिति में है जैसा पहले था। क्या सोच रहा है?—पत्नी, बेटा, मित्र सब कहां गए? ☐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परछाइयाँ

मास्टर जी की आस-पास के क्षेत्रों में बहुत इज़्ज़त थी। गणित के अध्यापक थे, रात-दिन ट्यूशन भी करते थे। इस कारण आमदनी दूनी हो गई थी। शहर के मुख्य बाजार में तिमंजिला मकान था। उसके नीचे दुकानें बना रखी थी और उन्हें किराए पर लगा दिया था। यह भी आमदनी का अच्छा जरिया था। फिजूलखर्ची न तो मास्टर जी के आदत में शुमार थी, न उनके पाँचों बेटों के। इस तरह हर प्रकार से जिंदगी खुशहाल थी।

मास्टर जी अपने सभी भाइयों में सबसे छोटे हैं। उनके सभी भाई ज्यादा से ज्यादा मिडिल क्लास तक पढ़े हैं और मास्टर जी को बहुत चाहते हैं। जब भी गर्मी की छुट्टी होती तो मास्टर जी किसी न किसी भाई के घर सपरिवार पहुँच जाते। वहाँ उनकी खूब खातिरदारी होती कि शहर से मास्टर जी आए हैं। ज्यादा पढ़े-लिखे होने के कारण वे उनसे सलाह भी लेते कि बच्चों को कौन-सा कोर्स कराना है। मास्टर जी उनके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनका विचार था कि बच्चों के बड़े होने पर उन्हें शहर भेजें और वहाँ मास्टर जी उनकी मदद करेंगे...। क्योंकि मास्टर जी शहर में रहते है और शिक्षा जगत से जुड़े हैं।

मास्टर जी के पास जब भी कोई भाई या भतीजा मिलने आता तो मास्टर जी उनका परिचय 'गाँव वाले' भाई कहकर कराते थे।

मास्टर जी की प्रतिष्ठा का एक कारण यह भी था कि उनके पिता एक सुप्रसिद्ध जमींदार थे। जब जमींदारी प्रथा खत्म हुई तब प्रदेश सरकार ने मुआवज़े के रूप में एक बड़ी रकम दी जो उनके पिता ने मास्टर जी के नाम कर दी थी।

मास्टर जी का बड़ा बेटा बंटी पढ़ने में बहुत होशियार था। उसने शहर के प्रतिष्ठित कॉलेज से कॉमर्स में स्नातक किया था। पढ़ाई पूरी होते ही उसे बैंक में नौकरी मिल गई। बंटी को स्कूल में तरुण कह कर बुलाते थे। तरुण का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था। अच्छी कद काठी, गोरा रंग, अच्छा स्वास्थ्य हर विषय में निपुण।

तरुण ने बैंक में नौकरी के दौरान बहुत मेहनत और लगन से काम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया। उच्च अधिकारियों से अच्छे विश्वसनीय संपर्क बनाए। इस कारण कम समय में ही उसे अच्छा प्रमोशन मिल गया और क्लर्क से तरक्की पाकर उसने सहायक मैनेजर का पद प्राप्त किया। तरुण की शादी एक पढ़ी-लिखी लड़की से हुई जिसने दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर किया था। वह सिंचाई विभाग के इंजीनियर की इकलौती संतान थी। खूब दिल खोलकर दहेज दिया गया था। तरुण की शादी में खानदान के सभी लोग पूरे उत्साह से शामिल हुए। सबके ठहरने की व्यवस्था तीसरी मंजिल पर की गई थी। सभी अतिथि स्वयं को किसी कैद में महसूस कर रहे थे क्योंकि उनके दो पुत्र बार-बार तीसरी मंजिल पर चक्कर लगाते रहते थे और इस बात का ध्यान रख रहे थे कि कहीं कोई सामान गायब न हो जाए। उन्हें छिपाकर रखा गया था कि कहीं ये शहर के किसी मित्र से ना मिल लें जिससे उन्हें लज्जित होना पड़े कि मास्टर जी के गाँव के परिवार में असभ्य लोग भी रहते हैं।

तरुण की शादी के अगले दिन दहेज में आई चीजों को एक हॉल में सजाया गया। जैसे गाँव के दुकानदार अपने सामानों की नुमाइश लगाते हैं। शाम में भव्य रिसेप्शन का भी आयोजन किया गया। दुल्हे-दुल्हन के बगल में मास्टर जी व मास्टरनी जी पर्स और डायरी लिये हुए रुपए, पैसे व उपहारों का हिसाब रख रहे थे। तरुण के दो मित्र उसकी देखभाल व निगरानी का जिम्मा संभाल रहे थे। मास्टर जी के परिवार को चोरी का डर अपने गांव वाले बंधुओं से ही ज्यादा था कि कहीं कीमती उपहार देखकर गाँव वालों का मन न भटक जाए। तरुण का चचेरा भाई भी गाँव से आया हुआ था। उसे यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। फिर भी अपने चाचा की शोहरत व तरुण के व्यक्तित्व और परिवार के प्रति अपने रिश्ते की गरिमा को समझते हुए उसने चुप रहना ही बेहतर समझा।

तरुण का चचेरा भाई चेतन इस वर्ष आई.एस.सी. प्रथम वर्ष में था और अगले दो वर्षों बाद उसे भी इसी शहर में आगे की पढ़ाई करने आना था। उसका इरादा मेडिकल का कोर्स करने का था। वह तरुण से दोस्ती करना चाहता था परंतु तरुण उसे पास भी नहीं फटकने देना चाहता था।

तरुण ने अपनी प्रतिष्ठा बड़े साहब के रूप में बना रखी थी। बातों-बातों में कम्बख्त कह देना, हां-हूं में चलते-चलते जवाब देना, व्यस्त होने का दिखावा करना उसकी आदत में शुमार था।

दो साल बाद चेतन शहर आया। वह पढ़ने में बहुत होशियार था। उसने मेडिकल में दाखिले की परीक्षा पास कर ली और दिल्ली के प्रतिष्ठित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कॉलेज में उसका दाखिला हो गया। दाखिला होने के बाद वह सबसे पहले अपने चाचा से मिलने गया। उसने मुस्कान के साथ घर में प्रवेश किया। सामने तरुण था, उसने अनदेखा कर दिया और बाहर की तरफ निकल गया। चेतन ने चाचा के पैर छुए और दाखिले के बारे में बताया। चाचा कुछ सोचते रहे फिर नौकर को बुलाया और सामने दुकान से चाय लाने को कहा। चेतन को यह नागवार गुजरा परंतु चुप रहा। तरुण ने चेतन को इस तरह देखा जैसे दोनों के बीच कोई रिश्ता है ही नहीं। थोड़ी देर बाद चाची अंदर से आई। चेतन ने उनके भी पैर छुए। थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोली—"चल खाना खा ले।"

चाचा के साथ चेतन घर के अंदर गया। खाना परोसते हुए चाची ने मजाक में कहा—"चीनी-गुड़ ले आऊँ क्या?" क्योंकि गाँव वाले मीठे के शौकीन होते हैं। ये सुनकर चाचा मुस्कराने लगे। परंतु यह भूल गए कि वे स्वयं भी गांव से ही शहर में बसने आए हैं।

चेतन ने महसूस किया की सब उसकी बेइज़्ज़ती कर रहे हैं। इसके बाद साल भर तक चेतन उनके घर नहीं गया। कॉलेज के हॉस्टल में चेतन को कमरा नहीं मिल पाया था। उसके एक सहपाठी ने चाचा के घर से कुछ दूर पर एक कमरा चेतन को किराये पर दिलवा दिया था। चेतन वहाँ अकेला रहता था। कभी-कभी गाँव से उसके माँ-बाप, भाई-बहन भी आकर उसके साथ रहते थे। परंतु आत्मसम्मान की खातिर वे कभी चाचा के पास नहीं गए।

चेतन के चाचा को चेतन का यहाँ रहना पसंद नहीं था। कारण जो भी हो। इसी वजह से चाचा के लड़के भी चेतन को देखकर कन्नी काट लेते थे। इसी तरह वक्त बीतता रहा। मास्टर जी के व्यवहार में आए परिवर्तन से चेतन के मां-बाप बहुत परेशान थे। क्योंकि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि जिस व्यक्ति को वह इतना प्यार और सम्मान देते हैं वो उनके साथ एक दिन इस तरह रूखा व्यवहार करेगा। जब तक चेतन वहाँ रहा तरुण व उसके भाइयों ने चेतन से बात भी नहीं की। यद्यपि एक दो बार चेतन ने संबंध सुधारने की कोशिश की और चाचा के घर गया भी परंतु वहाँ अपना निरादर देखकर फिर कभी जाने की हिम्मत नहीं की। एक बार चेतन तरुण से मिलने बैंक भी गया, पर तरुण ने कोई बात नहीं की। इसके बाद चेतन ने निर्णय ले लिया कि भविष्य में कभी भी चाचा या तरुण से नहीं मिलेगा।

इस तरह काफी दिन बीत गए। चेतन अपनी पढ़ाई में जी-जान से लगा था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन चेतन को तरुण की माँ ने अपने घर बुलाया और पास बैठाकर कहा—"देखो चेतन, हमने सुना है कि तुम सबको यह बताते हो कि हम तुम्हारे चाचा-चांची हैं। तुम ही नहीं, खानदान का हर व्यक्ति हमारे नाम का जाप करता है। ये तो गलत बात है। हम तुम लोगों से किसी बात का मतलब नहीं रखना चाहते। तुम्हारे लिए यह सलाह है कि किसी को भी हमारे विषय में न बताओ। हम तुम्हारी गारंटी नहीं ले सकते हैं।

चेतन चुपचाप यह सब सुनता रहा, उसकी आँखों में आँसू थे। वह कुछ भी नहीं बोला। उसका कारण यह था कि यदि चेतन से कोई यह पूछता कि शहर में तुम्हारे परिवार के अन्य कौन लोग यहाँ रहते हैं तो वह गर्व के साथ अपने चाचा का नाम बताता था। यह सब उसके चाचा और चाची को बुरा लगता था। चेतन ने फैसला किया कि अब वह उन लोगों से कोई ताल्लुक नहीं रखेगा। धीरे-धीरे तरुण व चेतन के बीच की दूरी बहुत बढ़ चुकी थी। तरुण एक ख्याति प्राप्त बैंक अफसर था जबकि चेतन जिंदगी के भंवर में जद्दोजहद करते हुए स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ रहा था।

कहते हैं कि लक्ष्मी का गृहप्रवेश उतना कठिन नहीं होता जितना कि उनको रोक के रखना। लक्ष्मी चलायमान है, आज यहां तो कल कहीं और। धन को वही लोग संभालकर रख सकते हैं जो उसके साथ तालमेल बनाकर चले।

ऐसा ही चाचा के परिवार के साथ हुआ। धन बढ़ने के साथ-साथ बच्चों का निकम्मापन और लापरवाही बढ़ गई। दूसरा कोई बच्चा ग्रेजुएशन भी नहीं कर पाया। चाचा ने एक कन्सट्रक्शन कंपनी खोल दी और यही कंपनी उनकी बर्बादी का कारण बनी। सरकारी ठेकों में हो रहे लगातार घाटे ने उन्हें हिलाकर रख दिया। धीरे-धीरे पूंजी खत्म होती गई। तरुण ने स्वयं मास्टर बनकर बैंक लोन उस फर्म को दे दिया। समय पर लोन को जमा नहीं कर पाने के कारण बैंक ने गबन के आरोप में तरुण को निलंबित कर दिया और मजबूरी में उसने एक फाइनेंस कंपनी में नौकरी कर ली। पाँचों भाइयों में बंटवारा हो गया। मकान बेचकर सभी को बराबर ही हिस्सेदारी दी गई। मगर इतना पैसा भी किसी को नहीं मिला कि शहर में एक मकान खरीद ले। इसलिए शहर के पास स्थित गांव में जाकर रहने लगे। भाग्य अब चेतन का साथ दे रहा था। उसने अव्वल दर्जे में डॉक्टरी की परीक्षा पास कर ली और एक शोध भी पेटेंट करा लिया जिसके कारण उसे विदेशों से बहुत आमदनी होने लगी। उसकी अस्थमा की दवाई बाजार में चल निकली थीं। चेतन की फैक्ट्री में कुल मिलाकर 400-500 मजदूर काम करते थे। देश के कई हिस्सों में उसके कार्यालय थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राजनीति में भी उसकी अच्छी पहचान बन गई थी। इस तरह चेतन एक प्रसिद्ध व्यक्ति बन गया।

चेतन ने एक साधारण लड़की से बिना दहेज के शादी की। उसकी गृहस्थी बस गई और खुशी-खुशी चल रही थी। चेतन को तरुण से मिले लगभग तेईस वर्ष हो गए थे। बीती हुई बातें एक सुखद व दुखद याद बनकर रह गई थी जिनको न तो फिर याद करने की जरूरत थी और न ही दोहराने की।

सब ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक एक दिन सुबह-सुबह ही आए एक टेलीफोन कॉल ने सब कुछ नया कर दिया और भूले हुए अतीत को फिर स्मरण करा दिया।

"हैलो, मैं तरुण बोल रहा हूँ। तेरा नम्बर दो दिन पहले ही मिला, तुझसे मिलना चाहता हूँ।"

चेतन को बड़ी हैरानी हुई क्योंकि यह पूर्णतया अप्रत्याशित कॉल थी जिसका उसे पूरे 23 वर्षों से इंतजार था।

चूंकि तरुण बहुत घमंडी था, परिवार-खानदान से दूरी बनाकर चलने वाले इस व्यक्ति ने बड़ी मुश्किल से इस कॉल के लिए खुद को तैयार किया होगा। चेतन को फोन करना कोई आसान निर्णय नहीं होगा। चेतन सोच में पड़ गया। इसका मतलब कोई खास काम होगा।

इस तरह की तमाम बातें चेतन अपने मन में सोचता रहा फिर बोला—"ठीक है भइया, कब मिलोगे?"

"जब टाइम हो बता देना, मैं तो अभी भी तैयार हूं।" तरुण बोला।

चेतन ने कहा—"मैं अभी व्यस्त हूँ।"

तरुण बोला—"ओके, जब फ्री होना बता देना।"

तीन दिन बाद चेतन ने फोन करके तरुण को अपने कार्यालय बुला लिया। ठीक समय पर तरुण चेतन के ऑफिस पहुँच गया। इतने लंबे समय की मुलाकात के बाद भी कोई गर्मजोशी नहीं थी। आते ही तरुण अपनी शान व बड़प्पन दिखाने की नीयत से बोला कि वो ऑटो से आया है। उसके पास गाड़ी भी है और एक कोठी भी बना ली है। उसने कहा कि उसके बेटे ने मेडिकल का कोर्स कर लिया है।

तरुण का आकर्षक व्यक्तित्व समय के प्रवाह में ढलान पर था। सिर के बाल उड़ चुके थे। चेहरे पर वह पुराना रौब नहीं था जो पहले कभी होता था। चेतन कुछ देर चुप रहा। तरुण ने कहा कि वह बहुत मुश्किल से समय निकालकर आया है और उसे उससे कुछ काम है। चेतन ने पूछा कि मैं आपकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्या सेवा कर सकता हूं। तरुण शांत रहा। इधर-उधर देखता रहा। कुछ ही देर में चपरासी चाय लेकर आ गया। बीवी-बच्चों के हालचाल से बातचीत शुरू हुई। तरुण की निगाह चेतन की मेज पर रखी फाइलों पर थी।

चुप्पी तोड़ते हुए तरुण ने कहा, "देख भई। मेरा तो सब काम-धाम ठीक है, कोई दिक्कत नहीं है। मुझे तुझसे एक शिकायत है कि इतना टाइम बीत गया और तूने किसी की कोई खैर-खबर नहीं ली। चल कोई बात नहीं, अब तू बड़ा आदमी बन गया है। मेरे भाइयों की हालत ठीक नहीं है। यदि राशन की दुकान का लाइसेंस मिल जाए तो छोटा भाई, जो कि बेरोजगार है 10वीं के आगे नहीं पढ़ पाया, उसका गुजारा हो जाएगा।"

"बाकी लोग क्या कर रहे हैं?" चेतन ने पूछा।

मेंहनत-मजदूरी... सब परेशान हैं, एक चाय की दुकान लगाता है, एक परचून की। कोई भी पढ़ नहीं पाया। उसकी आवाज में वो बात नहीं थी। खेद था, कहीं शर्मींदगी भी थी।

चेतन ने फोन उठाया—मंत्री जी से बात की और फोन पर ही राशन की दुकान का लाइसेंस पक्का कर दिया।

तरुण जो कल तक चेतन को कुछ नहीं समझ रहा था। अब सब समझ गया। वो जान गया कि चेतन अब पहले वाला चेतन नहीं रहा, अब वो बदल गया है। उसकी पहुँच बहुत ऊपर तक है।

चेतन ने तरुण को विदाई के वक्त कुछ डायरियां, कैलेंडर और किताबें उपहार में दीं। तरुण बहुत हैरान था, समय के इस परिवर्तन को देंखकर।

वक्त के फेर के साथ चेतन एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति डॉ. चेतन हो गया था। यद्यपि तरुण चेतन की ठाठ-बाट और प्रसिद्धि पर हैरान था, पर उसने ये बात जाहिर नहीं होने दी। वह अपने आपको वही तरुण दिखाना चाहता था जो वह पहले था। लेकिन अंदर ही अंदर खिन्न और दुखी भी था कि उसने अपने खानदान से क्यों दूरी बनाए रखी। वह चेतन के सामने चुप रहा। उसने न तो उसकी प्रसिद्धि की प्रशंसा की और न ही अपनी लाचारी पर खेद जाहिर किया।

रास्ते में तरुण चेतन के बारे में ही सोचता गया। वह रातभर सो नहीं सका। अतीत में उसने अपने परिवार पर चेतन और गाँव वालों की परछाईं भी नहीं पड़ने दी। कहीं शहरी संस्कृति गाँव की हवा से प्रदूषित न हो जाए। इसे हम अर्थ का दुष्प्रभाव ही कहेंगे कि एक ही परिवार के लोग एक शहर में रहकर 23 वर्षों तक एक-दूसरे की परछाईं से भी दूर रहे। कभी किसी भी तरह की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातचीत का भी रिश्ता तरुण ने चेतन के साथ नहीं रखा। उसकी बीवी और बच्चे तो यह जानते भी नहीं थे कि उनके खानदान का कोई अन्य व्यक्ति भी यहां रहता है। जब तरुण ने ही उसे कभी अपना नहीं समझा तो उसके परिवार वाले क्या समझेंगे? यह तो और भी दूर की की बात है। तरुण दौलत और शोहरत को अहमियत देता था। इसके विपरीत चेतन अलग प्रवृत्ति का इंसान था। अगर वह चाहता तो तरुण से न मिलता परंतु उसने धन को नहीं जन को महत्व दिया। चाहे जो भी हो तरुण उसका अपना है, उसका भाई है। उसके मन में तरुण के लिए आज भी वही प्रेम और इज्जत है जो वह उसे बचपन के समय से दिया करता था। तरुण के लिए वह अप्रत्याशित था। उसने सोचा था कि अब तो चेतन बड़ा आदमी बन गया है, वह हमारे द्वारा की गई बेइज्जती का बदला अवश्य लेगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ, तरुण अंदर ही अंदर कुढ़ रहा था। अपने बर्ताव पर और चेतन की महानता पर। फिर भी वह खुश था कि उसका काम हो गया। वह भी एक ही मुलाकात में। तरुण आज स्वयं चेतन की यशोगाथा अपने परिवार को सुना रहा था कि उसने खानदान का नाम ऊंचा किया है, विदेशों में भी उसकी जान-पहचान है। वो जो चाहे करा सकता है। उसमें जरा भी घमंड नहीं है, तरुण को चेतन पर नाज है। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुआ का घर

दरभंगा वाली बुआ का नाम तो वर्षों से यानी होश सम्हालने के समय से ही सुन रहा था पर मिलने का मौका कभी नहीं मिला था मानष को। उसे घर पर सभी प्यारं से मन्नू बुलाते थे, बचपन से ही पढ़ने में मेधावी था वह। मगर मां-बाप नहीं चाहते थे कि वह पढ़ाई-लिखाई के झंझट में पड़े, गांव में ही मेहनत-मजदूरी करे और 25-26 की उम्र में उसकी शादी कर दी जाए। मगर उनकी इच्छा के विरुद्ध मन्नू ने 10वीं की परीक्षा पास कर ली। गांव से 4 मील दूर था स्कूल जहां रोजाना पढ़ने जाता था वह। सर्दी, बरसात या भीषण गर्मी भी मन्नू को स्कूल जाने से नहीं रोक सकती थी। मन्नू घर में सबसे छोटा था। उसकी बड़ी बहन की बचपन में ही शादी हो गई थी। वह साल में एक-दो बार घर आया करती थी।

घर में मन्नू की पढ़ाई का विरोध होने लगा क्योंकि दसवीं के बाद पढ़ाई के लिए आसपास कोई स्कूल भी नहीं था और घर में इतना पैसा नहीं था कि उसे शहर भेज कर पढ़ाई का खर्चा उठाया जा सके। एक कारण यह भी था कि इतनी छोटी उम्र में उसे घर से दूर भेजना किसी को ठीक नहीं लग रहा था।

मन्नू को प्यार से समझाया गया कि अब पढ़ाई छोड़ दे। ये तो बड़े लोगों का काम है। वैसे भीं नौकरी कहां मिलती है? गांव के मुंशी का लौंडा तो बी.ए. करके भी खेती कर रहा है। इससे तो अच्छा है कि घर ही रहे, मिलकर खेत में काम करे। मगर मन्नू को बस एक ही रट थी कि पढ़ना है—बाहर जाना है। बहुत समझाने पर भी वह नहीं माना तो चाचा ने कान पर चार-पांच थप्पड़ रसीद कर दिए। मन्नू रात भर रोता रहा, खाना-पीना छोड़ दिया पर जिद नहीं छोड़ी। मन्नू की जिद के आगे सब बेबस थे। बहुत डराया-धमकाया कि अब पढ़ के का करोगे, सामने वाले मुंशी जी ने भी समझाया कि 10 क्लास पास भी बहुत ऊँची पढ़ाई होती है, अब आंखें मत फोड़, चश्मा लग जाएगा। "कलट्टर तो बनौगे ना"। मन्नू कुछ सुनने को तैयार नहीं था, उसका तर्क था कि शहर में धर्मशाला में सो जाएगा और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कभी-कभी बूट पॉलिस कर दिया करेगा जिससे खर्चा निकल आए।

अंत में जीत मन्नू की हुई। अब सवाल ये था कि मन्नू को कहाँ भेजा जाए। किसी ने सुझाया कि मन्नू की बुआ दरभंगा में रहती है। वो दिमागी तौर पर कमजोर है, पागल है पर मन्नू को वहां रखने में क्या दिक्कत है। मन्नू बुआ के घर रहे, चाचा कभी-कभी जाकर इकट्ठा खर्चा-पानी दे दिया करेंगे। फूफा कई वर्ष पहले गुजर गए थे और बुआ भी अकेली ही रहती थी।

उन्होंने मन्नू को बुआ के विषय में कुछ भी नहीं बताया। उसका नाम कांता था। गाँव के रीति-रिवाज के अनुसार उनकी बचपन में ही दरभंगा में शादी कर दी गई थी क्योंकि उस समय उसके मां-बाप दरभंगा में ही मजदूरी करते थे। मन्नू को यह समझाया गया कि बुआ से मिलकर रहना होगा क्योंकि पागलपन में वो कुछ भी कर सकती है। इसके सिवाय दूसरा चारा भी नहीं है। कभी-कभी भोजा चाचा वहाँ जाते रहते हैं और घर का सामान वहाँ पहुँचाते हैं पर ये सब मन्नू को नहीं पता था। मन्नू को सबने अच्छी तरह समझा दिया कि खाली समय में बूट-पॉलिस का काम भी कर लिया करे और बुआ पर निर्भर ना रहे। हो सकता है मन्नू के हरदम पास रहने से बुआ भी ठीक ठीक हो जाए।

सबको यह बात पसंद आ गई और मन्नू का दरभंगा जाना तय हो गया।

मन्नू के लिए नए कपड़े बनवाए गए, किताबों का थैला, नए जूते, चप्पल, पेन-पेंसिल आदि सब गाँव की ही दुकान से खरीद लिए गए। सामने वाले मुंशी का लड़का और चाचा दोनों ही मन्नू को लेकर दरभंगा चले। रात को रेलगाड़ी से चलकर सुबह सात बजे तक वहाँ पहुंचे।

मुंशी के लड़के की यहां के एक सरकारी स्कूल के क्लर्क से जान-पहचान थी। भोजा नहीं चाहता था कि मुंशी का लड़का कांता से मिले इसलिए स्टेशन से सीधे वे स्कूल ही चले गए। मन्नू को वहां मास्टर जी व प्रिंसिपल से मिलवाया गया। सरकारी स्कूल था इसलिए पिछड़ी जाति का होने की वजह से दाखिले में पैसे भी नहीं लगे तथा यह भी आश्वासन दिया गया कि क्लास शुरू होने पर किताब-कॉपी भी मुफ्त में मिलेगी। इसलिए ज्यादा चिंता की बात नहीं है।

मुंशी के लड़के का आभार व्यक्त करते हुए उसे रेल में बैठाकर वापस कर दिया गया और मन्नू एवं चाचा बुआ के घर चल पड़े। आधा घंटा पैदल चलने के बाद वे कांता के घर पहुंचे। तंग गलियों के अंदर एक छोटा-सा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान था। मकान के अंदर भी और बाहर चारों तरफ घास उगी हुई थी। छोटा-सा व गंदा घर। दरवाजे खुले हुए थे। अंदर दो-तीन कुत्ते आराम फरमा रहे थे। कुछ एल्यूमीनियम के बर्तन उल्टे पड़े हुए थे। एक कटोरी में कुछ सब्जी रखी थी जिस पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। ऐसा लगता था कि मुद्दत से घर में कोई नहीं रहा हो। टूटी चारपाई, जिस पर बैठते ही, आदमी अंदर घंस जाए, कहीं घास-फूस का ढेर... गंदगी... बदबू... औह कैसा है बुआ का घर! मन्नू अंदर ही अंदर परेशान होने लगा और सोचा कि घर के कामकाज में बुआ की मदद करने से सब ठीक हो जाएगा।

धीरे-धीरे रात हो चली थी। भोजा व मन्नू बैठे-बैठे उकता गए थे। अचानक एक पागल औरत का घर में प्रवेश हुआ। सिर पर कपड़े व प्लास्टिक की कतरनों का ताज बांधा हुआ था। अर्द्धनग्न शरीर, फटे कपड़े...।

ओह! ये बुआ है? मन्नू ने सवाल किया। भोजा को कुछ कहते नहीं बना और वह नीचे देखता रहा। "बोल? कैसे आया?" उस पागल औरत ने कहा।

साथ लाए आटे की थैली बुआ को देते हुए चाचा ने कहा, "ये तुम्हारा भतीजा है, यहां पढ़ने आया है। यहीं रहेगा। मैं छोड़ने आया हूँ कि बुआ के यहाँ रह लेगा।"

बुआ ने हाथ में डंडा उठाया और हवा में लहराते हुए बोली—"बोल पढ़कर क्या करेगा! मरना है! मैं अभी मार देती हूं।" यकायक गुस्से में उसकी आँखें लाल हो गयी थी।

भोजा ने उठकर हाथ पकड़ लिया और दोनों हाथ जोड़कर बिनती करने लगा, "बच्चा है! भइया ने भेजा है। अभी ना समझ है", "इसे समझा दे नहीं तो... मैं अभी इसे खत्म कर दूंगी... ले जा यहां से।" बुआ ने कहा। बुआ की आंखें गुस्से से लाल थीं। डंडा कसके पकड़ रखा था। ऐसा लग रहा था कि अभी मार देगी।

भोजा और मन्नू ने बुआ के पैर पकड़ लिए और कहा कि कोई शिकायत नहीं आएगी। थोड़ी देर में बुआ का गुस्सा ठंडा हो गया और भोजा मन्नू को छोड़कर चला गया।

सुबह उठकर मन्नू ने देखा कि उसकी नई बनियान को काटकर कतरने बना दी गई हैं और उन कतरनों को बुआ अपने सिर पर बांध रही है, जैसे किसी बादशाह का ताज हो। मन्नू बहुत दुखी हुआ, इस तरह कैसे यहां रहा जा सकता है? दो-चार दिन में यहां से भागना ही पड़ेगा और पढ़ाई बीच में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर अनपढ़-सी जिंदगी गुजारनी होगी। एक कोने में बैठा मन्नू टूटा हुआ सा ये सब देखता रहा। अचानक बुआ ने कनस्तर खोला और उसको भी टांग दिया। लड्डू बाहर बैठे कुत्तों को खिला दिए और जोर-जोर से हंसने लगी। फिर तेल की शीशी का आधा तेल सिर में उड़ेल लिया और शहर की तरफ निकल गई। मन्नू दबे पांव बाहर निकला तो देखा कि कुछ कदम आगे ही बच्चों ने बुआ का पीछा करना शुरू कर दिया है और गोबर, पानी, मिट्टी फेंककर मार रहे हैं। पर वह खुश होकर नाच रही है... चारों ओर 'पागल-पागल' का शोर मच गया है। बुआ ने भी हाथ में पत्थर का टुकड़ा लिया हुआ है। कभी वो बच्चों के पीछे भागती थी कि पत्थर फेंककर मार देगी, कभी बच्चे उसे पीट देते थे।

मन्नू अब समझ गया कि बुआ तो पूरी तरह पागल है और यहां रहना संभव नहीं है, उसे अनपढ़ रहकर ही गुजारा करना पड़ेगा। यह सोचकर वह रोने लगा। बहुत देर तक रोता रहा। लगभग दो घंटे बाद बुआ वहां आई, हाथ में कुछ रोटियां थीं जो कपड़ों में छिपाकर लाई थी। मन्नू को रोते देखकर बुआ को दुख हुआ और प्यार से अपनी गोदी में बैठाकर वह मन्नू को रोटी खिलाने लगी। बुआ पर हुए इस मनोवैज्ञानिक प्रभाव को मन्नू महसूस कर रहा था—उसे लगा कि बुआ के पागलपन को ठीक किया जा सकता है।

मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। थोड़ी देर में बुआ फिर उठकर कहीं चली गयीं। मन्नू के पास बूट-पॉलिस का सामान था, उसे बूट--पॉलिस भी करना आता था। बुआ के जाने के बाद थैले में से उसने बूट-पॉलिस का सामान निकाला और बाहर निकल पड़ा, शायद कुछ आमदनी हो जाए। एक घंटे घूमने के बाद भी कोई ग्राहक नहीं मिला तो वह वापस आ गया।

बुआ अभी तक आई नहीं थी। मन्नू अब पूरी तरह समझ गया था कि बुआ पूरी तरह पागल हैं और यहां सिर्फ रहने का ठिकाना ही मिल सकता है। यद्यपि मन्नू की उम्र बहुत ज्यादा नहीं थी पर समय व परिस्थिति ने उसे समझदार बना दिया था। मन में दृढ़ संकल्प था, भविष्य की आशाएं उसके मन व मस्तिष्क को मजबूत बना रही थीं। यही मजबूती, दृढ़ संकल्प मन्नू के लिए पर्याप्त थी।

शाम को बुआ फिर आई—बच्चों की भीड़ के साथ, पीछे-पीछे बच्चे आगे-आगे पागल बुआ, एक हाथ में ईंट—दूसरे हाथ में रोटी—सिर पर कतरनों की टोपी।

मन्नू से न रहा गया। जोर से बोला, "बुआ क्या है ये सब? मुझे मार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालो, अब मैं हूँ तुम्हारे साथ।''

इतना कहते हुए वह बच्चों की तरफ लपका—'अभी ठहरो! मैं बताता हूँ कौन पागल है! एक-एक को सीधा कर दूँगा! ...दोनों हाथों की मुट्ठियाँ गुस्से से कस गई थीं और चेहरा लाल हो उठा। इतना गुस्सा मन्नू को पहले कभी नहीं आया था।

बुआ सब चुपचाप सुनती रही। थोड़ी देर में सब शांत हो गया। बच्चे चले गए। बुआ ने बाहर से लाई रोटी उसे खाने को दी पर मन्नू ने मना कर दिया। बुआ प्यार से उसे सहलाने और मनाने लगी। बुआ की आंखों में आंसू देखकर मन्नू मान गया और रोटी खाने लगा। ''देखो बुआ, अब सब कुछ भूल जाओ। मैं हूँ तुम्हारे साथ। कल से स्कूल जाना है और शाम को स्कूल के बाद मैं बूट-पॉलिस करके खर्चा चला लूंगा। तुम फिक्र मत करो।

''यदि तुम ऐसा करोगी तो स्कूल के बच्चे मजाक बनाएंगे और मैं नहीं पढ़ सकूँगा।

''मुझे आगे चलकर पुलिस में भर्ती होना है। एक बड़ा अफसर बनना है। इन बच्चों को मैं देख लूँगा। बुआ, तू फिक्र मत कर।''

बुआ चुप थी, वह कहता रहा, ''घर में सब तुम्हें याद करते हैं, बुआ तुम बहुत अच्छी हो। मेहरबानी करके घर रहो और मैं नौकरी कर लूँगा।'' इतना कहकर उसने बुआ के पैर पकड़ लिए। बुआ यह सब देखकर स्तब्ध थी। मन में मातृत्व का भाव जग रहा था।

अगले दिन मन्नू सुबह स्कूल गया और थैले में बूट-पॉलिस का सामान भी ले गया। तीन बजे स्कूल की छुट्टी होने पर दो घंटे बाजार में घूमता रहा। वह बूट-पॉलिस की आवाज लगाता रहा। पहले ही दिन दो रुपए की कमाई हो गई। वो खुश था। बार-बार दो रुपए देखता हुआ घर वापस आ गया।

बुआ घर पर ही थी। घर साफ था। घर पहुंचते ही उसने बुआ के पैर छूए और दो रुपए बुआ के हाथ में थमा दिए। चेहरे पर विजय व आत्मविश्वास का भाव। बुआ बहुत खुश थी पर बोली कुछ नहीं। शांत! पहले की तरह, हमेशा की तरह।

इसी तरह सिलसिला चलता रहा। रोज़ाना मन्नू स्कूल जाता। शाम को बूट-पॉलिस करके कुछ पैसे कमाता और बुआ को लाकर देता। बुआ एक टीन के डब्बे में पैसे इकट्ठे करती। उसी में से मन्नू घर का सामान ले आता था। रात को दीए की रोशनी में पढ़ता था।

पर बुआ दिन में दोपहर को गायब रहती थी। घूमने का एरिया बदल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया था। मन्नू के सामने थोड़ा ठीक तरह से रहती थी। बच्चों की भीड़ कम हो गई थी। बुआ में धीरे-धीरे सुधार हो रहा था।

पर यह भी मन्नू की गलत-फहमी निकली। एक दिन दोपहर वह अचानक घर आया तो देखा कि बुआ उसकी कमीज को काटकर कतरनों की लंबी पट्टी बना रही है और सिर पर बांध रही है। यह देखकर मन्नू के गुस्से का ठिकाना ना रहा। बस्ता वहीं फेंककर बुआ के हाथ से कैंची छीन ली और अपने गले पर लगा ली, "लो बुआ! तुम तो नहीं बदलोगी पर मैं बदल जाता हूं। अपना गला काट लेता हूँ। फिर तुम खुश रहना..." मन्नू बहुत जोर-जोर से बोल रहा था। आसपास के लोग इकट्ठे हो गए और उसे रोक लिया। बुआ चुपचाप सिर झुकाए सब देख रही थी। सब बुआ को पागल बताकर मन्नू को शांत करने की कोशिश कर रहे थे।

अचानक बुआ उठी और मन्नू को सबसे छुड़ाकर घर के अंदर ले गई और फिर गोदी में बैठा लिया–जैसे बुआ बहुत पछता रही हो और भविष्य में ऐसा कुछ नहीं करेगी।

इसी तरह दो साल बीत गए। मन्नू के इम्तहान खत्म हो चले थे। मन्नू का विचार था कि छुट्टियों में पूरे दिन बस अड्डे पर कोई ठीया देखकर बैठे जाए और बूट-पॉलिस करके कुछ पैसे कमा लें।

अचानक रात को बुआ ने सोए हुए मन्नू को जगाया। "उठो बेटा!" यह शब्द आज मन्नू ने बुआ से पहली बार सुने थे। चौंककर उठ बैठा! देखा कि घर में जगह-जगह रोशनी है। गंदे कपड़े पहनने वाली बुआ ने अच्छे कपड़े पहन रखे थे। नीले रंग की सीपी की साड़ी मद्धिम रोशनी में जगमगा रही थी। चांदनी रात थी, घर के बाहर तारों की चमक। ठंडी बयार का सुहाना मौसम। मन्नू के लिए यह सब एक चमत्कार था।

धीरे-धीरे बुआ मन्नू के पास आई। हाथ में सोने की चूड़ियां पहन रखी थी। शृंगार किया हुआ था। हाथ में खीर का कटोरा था, एक थाली में पूड़ियां, आलू की सब्जी थी। बुआ ने शायद खुद ही बनाई थी। कभी खाना न बनाने वाली बुआ के हाथ में खाना देखकर मन्नू को हैरानी हुई कि सच्चाई क्या है? कहीं कोई दैवी चमत्कार तो नहीं।

"उठ बेटा! खाना खा ले! मैंने बनाया है।"

बुआ हमेशा शांत रहती थी। आज उसकी आवाज में जादू था, मिठास थी। चेहरे पर चमक थी। ये वही बुआ थी जिसे मन्नू दो साल से पागल समझता रहा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्नू ने भरपेट खाना खाया। बुआ ने भी। अचानक बुआ तेजी से उठ खड़ी हुई। "चल अब उठ! रात के चार बज रहे होंगे, सामान उठा और वापस गाँव जा। मैं पागल हूँ, पागल ही रहूँगी। इस घर में सिर्फ़ पागल ही रह सकते हैं।

"आज से आठ साल पहले इसी घर में इसी गाँव में कुछ अपराधियों ने मेरे घर को उजाड़ दिया। यहाँ आदमी नहीं दरिंदे बसते हैं। सब लूट लिया।"

बुआ की सांस चल रही थी। क्रोध से शरीर तमतमा रहा था—"मैं तबसे ऐसे ही जी रही हूं पागल की तरह—मैं तुझे नहीं खोना चाहती मेरे लाल। कल फिर कोई मुझे मार देगा या तू अपराधी बन जाएगा। भाग यहाँ से—इंसानों की नगरी में जा! देख, लोग मुझे पागल समझते हैं और मैं उन्हें।"

बुआ ने मन्नू का सामान पहले ही इकट्ठा कर रखा था। जल्दी से बुआ ने धकियाते हुए मन्नू को घर के बाहर निकाल दिया। मन्नू गिड़गिड़ाता रहा, बुआ ने एक न मानी।

बुआ फिर से अपने रंग में आ चुकी थी। आस-पास के बच्चों को फिर से खोया खिलौना मिल गया था। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोने की चेन

मंदिर सें बाहर जो भी 8-10 लोग निकले उनमें से अधिकांश के चेहरे उतरे हुए थे और कुछ व्यक्ति प्रसन्न थे।

सुदीप को वहाँ पहुंचने में देरी हो गई थी। इसका कारण था कि उससे सब कुछ छिपाया गया था। दो दिन पूर्व सुदीप के पिता व साहूकार के बीच पंच फैसले में यह निर्णय लिया गया कि गाँव के 8-10 लोग सुबह सात बजे मंदिर में उपस्थित होंगे और रमाशंकर वहाँ कसम खाएगा कि यदि उसका परिवार निर्दोष है तो भगवान उसके साथ धोखेबाजी करने वाले को उचित दंड दे। लेकिन अगर उसने गुनाह किया है या झूठ बोल रहा है तो भगवान उसको भी उचित सजा दे।

मंदिर में रमाशंकर जग्गी व अन्य 8-10 लोग उपस्थित थे। इस मंदिर के विषय में लोगों में यह धारणा है कि यहाँ दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। इसलिए इसी मंदिर को शपथ के लिए चुना गया है। यह मंदिर करीब 100 साल पुराना है। मंदिर में कृष्ण की मूर्ति के आगे 2000 रुपए रखकर रमाशंकर ने कहा कि—"हे देवता, यदि मैं झूठ बोलूं तो मेरा सत्यानाश हो जाए और यदि कोई और बोले तो उसका।"

इतना कहकर उसने वहां रखे पैसे उठा लिए। इन सबको देखने के लिए जग्गी ने पंचों के अलावा और लोगों को भी इकट्ठा किया था ताकि रमाशंकर को सबके सामने लज्जित होना पड़े।

वहां उपस्थित सभी व्यक्ति प्रतिष्ठित थे। सिवाय दो लोगों, गोपी किशन और जयचंद के। ये दोनों सुदीप के मित्र हैं और नहीं चाहते थे कि बात यहां तक बढ़े। परंतु कोई निर्णय न होने पर कुछ प्रभावशाली पंचों द्वारा यही एकतरफा निर्णय लिया गया कि रमाशंकर मंदिर में सौगंध खाकर अपनी बेगुनाही का परिचय दे।

रमाशंकर के बेटे सुदीप से नहीं रहा गया। उसने सबको मंदिर की सीढ़ियों से उतरते देखा तो समझते देर नहीं लगी कि उसके पिताजी को मंदिर में ले जाकर न केवल उनकी ईमानदारी की परीक्षा ली गई है, बल्कि बेइज्जत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी किया गया है।

सुदीप का गुस्सा बढ़ गया और वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा कि "तुम सब बेईमान हो और हमारी इज्जत का जनाजा निकाल रहे हो। तुम सब लोगों की मिलीभगत है। तुम लोग पूँजीपति हो तो क्या हुआ? हम भी तो इंसान हैं और यह तो समय-समय का फेर है। आज तुम सबने यह अच्छा नहीं किया है।" वह जोर-जोर से चीख रहा था—"कमीनो, तुम सब पछताओगे।" इतना कहकर वह जग्गी साहूकार की तरफ लपका। परंतु जयचंद ने उसे पकड़ लिया और दो-तीन थप्पड़ रसींद कर दिया। सुदीप चीखता रहा, रोता रहा और फिर अपने पिताजी के साथ घर लौट गया।

जग्गी सुनार गाँव का बड़ा साहूकार है। उसकी एक फैक्ट्री भी है। वो अपने दोनों बेटों के साथ फैक्ट्री चलाता है। ब्याज पर रुपया भी उधार देता है। इस व्यवस्था से साहूकार को ब्याज की आमदनी हो जाती है और जरूरतमंदों को समय पर बिना किसी परेशानी के उधार भी मिल जाता है।

रमाशंकर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उसकी सारी जमा-पूंजी साहूकार के कर्ज चुकाने में चुक गई थी। हाथ में रोजाना के खर्च के लिए भी पैसा नहीं होता था। इसलिए घर के सारे गहने साहूकार के यहाँ गिरवी रखकर उसने पैसे उधार लिया था। इस पर भी काम नहीं चला तो छोटी बेटी का चेन गिरवी रखकर 2000 रुपए ले लिए थे। सोचा था, जैसे ही पैसे होंगे छुड़ा लेगा।

इस तरह जग्गी का रमाशंकर के ऊपर बहुत कर्ज हो गया। तीन महीने बाद छोटी बेटी का खत आया कि उसको अपनी ननद के यहां जाना है। गले में पहनने के लिए कुछ भी नहीं है। इसलिए जल्दी ही चेन भिजवा दे तो अच्छा रहेगा। इस समय रमाशंकर के पास पैसे का इंतजाम आसानी से हो गया। सूद मिलाकर 2200 रुपए बनते थे। उसने अपने बेटे सुदीप के मार्फत पैसा जग्गी के पास भिजवा दिया। पहले दो दिन तो वहां कोई नहीं मिला। बाद में जग्गी का छोटा बेटा मंगल मिला। जिसने दो हजार रुपए लेकर यह आश्वासन दिया कि एक-दो दिन में उसे चेन मिल जाएगी। क्योंकि वो लोग सोना घर में नहीं रखते है। बैंक के लॉकर से निकालकर देनी होगी। सुदीप वहां से लौट आया। दो दिन बाद सुदीप जब चेन लेने गया तो वहाँ मंगल नहीं था और जग्गी ने किसी भी प्रकार के पैसे मिलने से अनभिज्ञता जाहिर कर दी।

रमाशंकर को लगा कि जरूर दाल में कुछ काला है और वह सुबह-सुबह अचानक सुदीप के साथ जग्गी के घर पहुँच गया। जग्गी और उसका बेटा दोनों घर पर ही थे। आमना-सामना होने पर जग्गी के बेटे मंगल ने पैसा मिलने से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंकार कर दिया। सुदीप ने मंगल को बहुत तरह से समझाया, पूरे घटनाक्रम को विस्तार से बताया। परंतु मंगल ने सब कुछ सिरे से नकारते हुए कहा कि उसे कोई पैसा नहीं मिला है। जग्गी ने विनम्रतापूर्वक कहा कि उसका बेटा इस प्रकार झूठ नहीं बोल सकता और रमाशंकर को सलाह दी कि वह अपने घर में तलाश करे और अपने बेटे पर ज्यादा भरोसा ना करके उससे प्यार से, तरीके से पूछताछ करे। इतना कहकर जग्गी ने रमाशंकर व उसके बेटे को विदा कर दिया।

रमाशंकर बहुत परेशान था—एक तो बेटी की सोने की चेन वापस करनी थी और दूसरी यदि दामाद को पता चलेगा तो बहुत बदनामी होगी। बेटी के साथ उसके ससुराल में किसी दुर्व्यवहार की भी आशंका थी।

दो-तीन रात उसे नींद ही नहीं आई।

हारकर गाँव के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सहारा लेना उसे उचित लगा। रमाशंकर ने जग्गी के कई मित्रों को अपनी व्यथा सुनाई और हस्तक्षेप की प्रार्थना की।

सुदीप शांत स्वभाव का बी.ए. प्रथम वर्ष का छात्र है। गाँव का ही एक अन्य प्रतिष्ठित, समाजसेवी व धनाढ्य व्यक्ति चंद्रमोहन के पास उसका आना-जाना है। चंद्रमोहन गाँव में चंदू सेठ के नाम से जाना जाता है। समाज में उसकी अच्छी इज्जत है। दूसरी खासियत उसकी यह है कि वह अपनी बेबाकी और बड़बोलेपन के लिए भी मशहूर है। सुदीप ने अपनी व्यथा चंदू सेठ को सुनाई। परंतु चंदू सेठ ने कोई जवाब नहीं दिया। जग्गी और चंदू घनिष्ठ मित्र हैं। इसलिए सुदीप को एक उम्मीद थी कि शायद चंदू की मदद से सारा मामला सुलझ जाएगा।

एक दिन शाम को रमाशंकर के पास जग्गी का बुलावा आया कि अपने बेटे के साथ उसके घर पर तुरंत पहुंच जाए। रमाशंकर तुरंत ही तैयार हो गया और जग्गी के घर अपने बेटे के साथ पहुंच गया। वहां पर जग्गी व उसका बेटा मंगल दोनों ही इंतजार कर रहे थे। कुछ ही क्षणों में गाँव के अन्य लोग भी यह कहते हुए उसी कक्ष में दाखिल हुए कि उन्हें इस फैसले के लिए बुलाया गया है। कुछ व्यक्ति यह कहते हुए दाखिल हुए कि रास्ते से गुजर रहे थे सोचा जग्गी से मिलने चलें। वे दोनों बैठे ही थे कि चंदू व एक अन्य व्यक्ति दाखिल हुए और बोले, हम तो बस ऐसे ही आए हैं।

रमाशंकर को माजरा समझते देर नहीं लगी कि इस तरह तो जग्गी ने पंचायत बुला ली है और उसका घेराव किया जा रहा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जग्गी, सुदीप से बोला—"अब कह, किस समय पैसे दिए थे, रुपए किस प्रकार के थे, क्या-क्या बातें हुई थीं आदि। सुदीप ने सारी बात सिरे से शुरू की—"पहली मंजिल पर सायंकाल के छह बजे सौ-सौ के बाईस नोट दिए थे। वहाँ चपरासी ने पानी भी पिलाया था आदि।"

शुरू में तो मंगल ने कहा उसे कुछ याद नहीं आ रहा कि सुदीप उसके घर कब आया था। परंतु बहुत जोर डालने पर... और सुदीप द्वारा सारी बात सिलसिलेवार याद दिलाने के बाद मंगल मान गया कि सुदीप आया था परंतु पैसे लेने की बात उसने नहीं मानी।

वह बोला—"सुदीप आया तो था पर उसने पैसे नहीं दिए थे।"

चंदू बोला—"अगर आप दोनों समस्या आपस में नहीं सुलझा सकते हो तो पंच चुन लो। मेरे लिए तो दोनों पक्ष एक जैसे हैं।"

"मैं चाहता हूं कि दोनों पक्ष त्याग की भावना से फैसला मानने को तैयार हो जाए।" चंदू पुनः बोला।

जल्दी ही रमाशंकर और जग्गी दोनों ने पंच चुन लिये। चंदू का इशारा साफ था कि उसे पंच चुन ले तो वह आधे-आधे में फैसला करा दे।

रमाशंकर ने कहा—"मेरे लिए सभी आगंतुक महानुभाव व जग्गी भी पंच है। आप जो फैसला करेंगे हमें मंजूर है, परंतु पंच फैसला करने से पहले हर हालत में जग्गी को भी पंचों में शामिल कर लिया जाए।"

सुदीप दौड़कर अपने मित्रों में से जयचंद और गोपीकिशन को बुला लाया। जग्गी उनके आने पर नाराज हुआ, और बोला कि वह तो पंचायत कराने के हक में कतई नहीं है। उसकी इच्छा है कि मामले को निपटाया जाए ताकि आपस में मिल जुलकर कर रहें।

"कैसे?" रमाशंकर ने पूछा।

"न मैंने कोई पैसा लिया और न ही मेरे बेटे ने, इस बात को मानकर पूरा मामला खत्म किया जाए।" बीच में ही जग्गी ने कहा।

"पर हमने तो पैसे दिए हैं।" क्रोध पर काबू करते हुए भर्राई आवाज में रमाशंकर ने कहा।

"सबूत?" जग्गी ने सवाल किया।

"तुम्हारा बेटा जो सामने बैठा है, उसी से पूछ लो।" रमाशंकर ने कहा।

इस दौरान जग्गी का बेटा मंगल शांत बैठा रहा। बाकी सभी व्यक्ति सुन रहे थे कि चंदू ने बीच में ही रोक दिया—"हम सब फैसला कराने आए हैं। मुझे एक कागज और पैन दो, पहले सारी बात मैं लिखकर समझ लूं। उसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद हम फैसला कर देंगे।"

रमाशंकर ने कहा—"मैंने पैसे दिए थे और मुझे अपना सामान वापस चाहिए।"

"फिर भी पंच तो बनाना ही पड़ेगा।" चंदू ने कहा।

"मैं किसी एक को ही नहीं, तुम सबको पंच मानता हूं, बोलो क्या फैसला है?" रमाशंकर की आंखों में आंसू थे। चंदू बार-बार यही कहता रहा कि रमाशंकर तुम अपना पंच चुन लो। मेरे लिए तो दोनों पक्ष एक जैसे हैं।

बाकी सब लोग चुपचाप सुन रहे थे। बीच में कोई कुछ नहीं बोला।

एक कोने में सबने खुसुर-पुसुर की, जग्गी के कान में चंदू ने कुछ कहा और सभी बिना फैसला किए वहां से चले गए।

अगले दिन सुबह-सुबह रमाशंकर को जग्गी ने अकेले में बुलाया। वहां पर पिछले दिन उपस्थित सभी लोग मिले और सबने मंदिर में कसम खाने का एक तरफा फैसला सुनाया जिसे रमाशंकर ने मान लिया।

फैसला होने के बाद जग्गी ने एक लाइन और ज़ोड़ दी कि सोने की चेन तब मिलेगी जब रमाशंकर बाकी सारे गिरवी रखे गहने यहां से उठा लेगा। रमाशंकर की वित्तीय हालत खराब थी। एक साथ सारे रुपए चुकाकर गहने लेना संभव नहीं था। वह समझ गया कि यह चंदू और जग्गी की नई साहूकारी चाल है। क्योंकि वह अच्छी तरह जानते थे कि रमाशंकर इतना रुपया कहां से लाएगा? परंतु रमाशंकर ने यह भी स्वीकार कर लिया।

जग्गी व चंदू ने सभी साहूकारों को मना कर दिया कि कोई भी रमाशंकर को उधार न दे। परंतु रमाशंकर ने हिम्मत नहीं हारी और बेटी से मदद की गुहार लगाई। उसने अपने सारे गहने रमाशंकर को दे दिए। जिसे एक दिन के लिए गिरवी रखकर रमाशंकर ने जग्गी से सारे गहने छुड़वा लिये और उसे पुनः गिरवी रखकर अपनी बेटी के गहने छुड़वा लिये।

चंदू का बर्ताव सुदीप को अच्छा नहीं लगा। उसके मन में चंदू के लिए घृणा हो गई। फिर भी एक दिन हिम्मत करके वह चंदू के पास गया और बोला कि "आपने पंच बनकर ऐसा क्यों किया? क्या आपको मैं दोषी लगता हूं?" चंदू ने कहा—"लोग पूंजीपति से जलते हैं। कभी-कभी पैसे की तंगी के कारण किसी भी साहूकार पर ऐसा आरोप लगाते हैं। मैं इस परिवार के काफी निकट हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि वो ऐसा कर ही नहीं सकते। जो फैसला मैंने किया है, वो सर्वोत्तम है।" सुदीप इतना सुनकर बिना कुछ कहे वापस चला गया। इस बात को लगभग 8-10 वर्ष हो चुके हैं। सुदीप उच्च शिक्षा प्राप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके अपनी जमीन बेचकर एक छोटी-सी फैक्ट्री खोली और अपनी मेहनत, लगन और सूझ-बूझ से कुछ वर्षों में बड़ी कंपनी का मालिक बन गया। लगभग 2000 व्यक्ति उसकी कंपनी में काम करते हैं। अचानक एक दिन चंदू के आने की स्लिप देखकर सुदीप को हैरानी हुई। इज्जत के साथ चंदू को बुलाया गया। चाय मंगाई। चंदू फैक्ट्री देखकर बहुत हैरान हुआ। सुदीप की तरक्की पर उसने उसे बधाई दी और याद दिलाया कि वह किस प्रकार उसकी दुकान पर बैठकर घंटों विचार-विमर्श करता था।

चाय खत्म होने पर चंदू ने आने का कारण बताया कि वह अपने दामाद के लिए नौकरी की तलाश में आया है। किसी विदेशी कंपनी के लिए उसने सुदीप को सिफारशी पत्र लिखने को कहा। अचानक सुदीप उदास हो गया और उसकी आंखों के आगे 20 वर्ष पुराना घटनाक्रम घूमने लगा।

सुदीप ने विनम्र भाव से चंदू से कहा—"कपड़ों पर लगा दाग तो साबुन से धुल सकता है। पर आपने एक दाग़ मेरे परिवार के ऊपर 20 साल पहले लगाया था वह आज तक नहीं धुल पाया है। आज भी मुझे इस बात का रंज है कि आप सबने हमें गलत माना...।"

इस तरह सुदीप ने पूरी व्यथा चंदू को याद दिलवा दी। चंदू के लिए यह अप्रत्याशित था। उसे इस बात का घमंड था कि गाँव के पुराने साहूकार होने के नाते उसकी बहुत आवभगत होगी। उसी तरह जैसे 20 साल पहले सुदीप करता था।

सुदीप की बात सुनकर चंदू 'अभी आता हूं' कहकर चला गया।

इस घटना के तीन दिन बाद अचानक जग्गी रमाशंकर के घर पहुंचा और अतीत की घटना पर शर्मिंदगी जाहिर की और बोला, "मेरे मुंशी ने बताया था कि मेरे छोटे बेटे ने चालबाजी की थी। पैसे उसके पास ही थे और घर की तलाशी के बाद मिल भी गए। शर्मिंदगी के मारे मैं आपसे माफी भी मांगने न आ सका। तब से आज तक कोई हमारे परिवार में सोने की चेन नहीं पहनता है यह हमारा सामूहिक प्रायश्चित है। आप महान हृदयी हैं। माफ कर सकते हैं।"

इतना कहकर जग्गी ने रमाशंकर के पैर पकड़ लिये। कुछ ही दूरी पर साहूकार का छोटा बेटा मंगल भी खड़ा था। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी का रस

सुभाष और वहीद दोनों आपस में मित्र हैं। सुभाष नाई का लड़का है और वहीद कसाई का। दोनों एक ही गाँव में रहते हैं। जाति भिन्नता होने पर भी दोनों घनिष्ठ मित्र हैं और साथ-साथ कमाते-खाते हैं।

सुभाष वहीद से कुछ छोटा है। अतः वह वहीद के साथ बड़े भाई का व्यवहार रखता है।

दोनों रोजगार के लिए शहर गए थे। कई माह तक मेहनत-मजदूरी की कमाई करने के उपरांत वे दोनों अपने गाँव बादलपुर लौट रहे थे। दोनों ने ही तहमद में एक मोटी रकम बांध रखी थी। शाम हो गई थी और रास्ता बहुत खराब था। कहीं भी लुट जाने का भय था क्योंकि दिन छिपने के बाद वहां राहजनी की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं। ऐसे में और आगे चलना जानबूझकर खतरा मोल लेना था। उन दोनों ने आसपास के किसी गाँव में ही रुक कर रात बिताने का निश्चय किया और सूर्य अस्त होने तक नजदीक के धौलाना गाँव पहुंच गए।

अब समस्या यह थी कि वे कहाँ ठहरें? किस प्रकार अपनी जाति छिपाई जाए। उस गाँव में न तो कोई नाई का घर है और न ही कसाई का। यदि जाति छिपा भी ली जाए तो, बोलचाल के ढंग से लोग पहचान ही लेंगे। फिर तो बहुत ही किरकिरी होगी।

वह जाट और ठाकुरों का गाँव था। दोनों ने ही अपनी-अपनी तरह से रात में ठहरने की जगह के लिए प्रार्थना की कि उन्हें रात्रि भर के लिए ठहरने दिया जाए। चाहे घर के बाहर छप्पर के नीचे या घेर में या कहीं भी आसपास उन्हें सिर छिपाने के लिए जगह मिल जाए। परंतु वहीद के कसाई होने के कारण किसी ने उन्हें जगह नहीं दी। सभी यह कहते कि कसाई को घर में झांकने देना भी पाप है, अतः हमारे पास जगह नहीं है। कहीं और जाकर देखो।

इस गाँव में कुत्ते बहुत थे। अच्छे डील-डौल के बारह-तेरह कुत्ते उनके पीछे पड़ गए और भौंकना शुरू कर दिया। इस कारण उन्हें आगे कदम बढ़ाना भी मुश्किल हो गया। वे दोनों परेशान, आखिर जाएँ तो जाएँ कहाँ? यह उनके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए बहुत बड़ी समस्या थी। यदि वहाँ से चुपचाप रात में ही चल देते हैं तो रास्ते में लुटने का डर है। रुकें तो कैसे रुकें? कोई अपने घर शरण दे नहीं रहा था और ऊपर से कुत्तों की नई आफत उनके पीछे पड़ गई है।

कुत्ते भी एकदम निडर थे। जितना धमकाते उनका साहस उतना ही बढ़ जाता। कई भौंकते हुए बार-बार आगे बढ़ते तो इसके विपरीत कुछ कुत्ते पीछे रहकर ही अपने साथियों की हौंसलाअफजाही कर रहे थे।

अंधेरे का फायदा उठाकर दोनों दीवार की ओट में कुछ देर शांत खड़े रहे इस तरह बड़ी मुश्किल से किसी तरह उन दोनों ने कुत्तों से अपना पीछा छुड़ाया।

दोनों दोस्त ठिकाने की तलाश में आगे बढ़ रहे थे।

सुभाष को अपनी वाक्पटुता पर पूरा विश्वास था और वहीद को अपनी मर्दानगी पर। परन्तु अब उनका किसी भी प्रकार से वश नहीं चल रहा था।

कुछ दूरी चलकर उन्होंने देखा कि एक अहाते के अंदर खूब रौशनी है। बाहर से झांकने पर उन्हें अंदाजा हो गया कि यहां कुछ लोग बैठे हुए हैं। इस अहाते में ठाकुरों की एक छोटी चौपाल लगी हुई थी। सुभाष ने साहस बटोरा और भगवान को याद किया। अंदर पहुंचकर वह ठाकुरों की चौपाल के पास हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

सुभाष ने कहा—"ठाकुर साहब हम परदेशी हैं...! आज आपके गाँव में हमें रुकना पड़ा है। कृपया हमें रातभर सोने के लिए शरण दीजिए। सुबह होते ही हम यहाँ से चले जाएंगे। सड़क के किनारे या अपने चबूतरे पर रात काटने की मंजूरी दे दीजिए, हमारा काम हो जाएगा। आपकी बड़ी दया होगी।"

अजनबी को यकायक सामने पाकर एक ठाकुर ने गुस्से से कहा—"चल अपना रास्ता देख, हमें परेशान मत कर, बाहर निकल जा यहाँ से। परंतु सुभाष की बातों पर कुछ को दया भी आ गई और उन्होंने उससे पूरा परिचय देने को कहा जिसका सुभाष ने बहुत ही विनम्रता से जवाब दिया। उन्हीं में से एक सज्जन उठ खड़े हुए और उससे बोले—"नाऊ भाई, यहीं सामने वाले चबूतरे के नीचे सो जा।"

दोनों के लिए यह एक बहुत बड़ी मदद थी उन्होंने उन सभी को हाथ जोड़कर धन्यवाद किया और सामने वाले चतूबरे पर ही एक कोने में रात बिताने के लिए चले गए। दोनों ने अपने सिर में बंधा अंगोछा निकाला और वहीं सोने की तैयारी करने लगे।

अब समस्या यह थी कि पहले सोए कौन? क्योंकि जेब की रकम की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षा के लिए बारी-बारी से दोनों को जागना था। वहीद को गहरी नींद आ रही थी। अतः वह तुरंत ही सो गया और सुभाष दीवार से कमर टेककर बैठ गया और बीड़ी पीने लगा। परंतु सुभाष को ज्यादा देरं इस तरह नहीं बैठा गया। उसने एक तरकीब निकाली। वह जोर-जोर से अपनी सुरीली आवाज में गाने लगा—

"प्रभू मेरे जीवन को कुंदन बना दो,
कोई दोष इसमें रहने न पाए...!
प्रभू हर घर में उजियारा ला दो,
कोई जन अंधेरे में रहने ना पाए।
प्रभू हर खेत में हरियाली ला दो,
दुनिया में कोई भी भूखा सोने न पाए।
प्रभू दुनिया से पाप को मिटा दो,
कोई भी पापी बचने न पाए।
प्रभू मेरे जीवन को कुंदन बना दो...!"

कुछ दूरी पर चबूतरे के ऊपर चारपाई पर कुछ युवक सो रहे थे। उन्होंने गुनगुनाती हुई इस आवाज को सुना। वे उठकर अपनी चारपाई पर बैठ गए। उनमें से एक ने आधी नींद में जम्हाई लेते हुए पूछा—"कहाँ से आए हो?"

"दूर शहर से आए हैं, बादलपुर जाना है।" सुभाष ने कहा।

"तुम्हारी जात क्या है?" दूसरा व्यक्ति बोला।

"हुजूर नाई हूं।" सुभाष ने उत्तर दिया।

"कहानी तो सुनाते होगे।" उनमें से एक ने पूछा।

सुभाष बोला—"मैं नहीं जानता साहब।"

"बताओ आदमी खतरनाक होता है या नहीं?"

इस बिना मतलब के प्रश्नोत्तर से सुभाष घबरा गया। परंतु वह वाक्पटु था। समय पर ठीक निर्णय लेने का उसमें सामर्थ्य था। सुभाष ने साहस बटोरा और दिमाग पर जोर डालते हुए बोला—"साब खतरनाक मतलब, आदमी तो बहुत खतरनाक होता है।"

"सिद्ध करो नहीं तो भगा दिए जाओगे।" उन लोगों ने कहा।

इस नई आफत का सामना करते हुए वह बोला, "अच्छा साब सुनो—एक बार खरगोश और शेर आपस में बात कर रहे थे। यकायक खरगोश भाग गया और शेर खड़ा रह गया। आधा घंटे बाद शेर फिर खरगोश के पास आया तब शेर ने पूछा—"भई खरगोश तुम ऐसे कैसे छिप गए थे।" तब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

खरगोश ने कहा—"शेर राजा मैंने एक आदमी देखा था।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर मेरे होते हुए तुम डर गए?" शेर अकड़ता हुआ बोला।

खरगोश बोला—"अकड़िए मत, आदमी बहुत खतरनाक होता है, समझे।"

"अच्छा मैं पहले आदमी को देखता हूं, फिर तुमसे मिलूंगा।" शेर ने गरज कर कहा और वहाँ से चल दिया।

रास्ते में शेर को एक बच्चा मिला। उससे शेर ने पूछा—"तुम आदमी हो?"

बच्चे ने जवाब दिया—"मैं आगे चलकर आदमी बनूंगा, अभी बालक हूं।"

इतना कहकर बालक चलता बना। तभी शेर को एक औरत मिली। उसने उससे पूछा—"तुम आदमी हो।"

"मैं आदमी नहीं औरत हूं।" यह कहकर वह भी चली गई। आगे चलकर एक आदमी मिला शेर ने उससे भी यही पूछा—"क्या तुम आदमी हो?"

"हां, मैं आदमी हूं।" वह बोला।

"अच्छा अब तुम तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें खाऊंगा।" शेर बोला। आदमी ने कहा—"इसमें कौन-सी बड़ी बात है, तुम मुंह फाड़ो मैं स्वयं ही उसमें घुस जाऊंगा।"

शेर ने जैसे ही मुंह फाड़ा, उसने तुरंत चाकू निकालकर शेर पर वार किया। चाकू शेर के जबड़े को फाड़ता हुआ निकल गया। अब शेर जान-बचाकर भाग गया। वह खरगोश के पास पहुंचा।

खरगोश ने पूछा—"कहो कैसी रही?"

"कुछ नहीं, आदमी तो सचमुच बहुत खतरनाक होता है।" शेर नीचे गरदन करके बोला।

गाँव के लोग यह सुनकर सुभाष के वाक्चातुर्य पर बड़े खुश हुए। उन्होंने उसे तकिया, खेस आदि भी दे दिया और गाँव के चौकीदार से कह दिया कि इनकी सुरक्षा का ध्यान रखना। ये परदेशी आदमी हैं। हमारे गाँव में रुके हैं, यानी हमारे मेहमान हैं।

सुभाष अब बिल्कुल निश्चिंत हो गया। रात ज्यादा हो गई थी। वहीद खर्राटे भर रहा था, वह भी सो गया। ☐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदर्स डे

दिन निकलने के साथ उर्वशी के दोनों बेटों ने माँ को घेर लिया। एक सिरहाने खड़ा था तो दूसरा पायताने खड़ा था। दोनों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। "हैप्पी मदर्स डे—हैप्पी मदर्स डे"। उर्वशी ने आंखें खोली तो दोनों बच्चों को शोर मचाते देख उसे याद आया। "अरे आज तो मदर्स डे है"। बच्चों ने मां के कमरे को गुब्बारों से सजा रखा था। मां के सोने के बाद तुरंत ही वे दोनों उसका कमरा सजाने लग गए थे। कहीं माँ को पता न लग जाए। क्योंकि 'सरप्राइज' जो देना है। माँ ने तकिए को जैसे ही उठाया। उसके नीचे आर्चीज के कार्ड रखे थे। जिसका शीर्षक था "Dear Mother, you are great" ठीक आंखों के सामने एक औरत का फोटो लगा था जो बच्चों ने कमरे की सजावट के लिए बाहर से लाए थे। उसे देख बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। मां अभिभूत थीं और खुशी से गद्गद् भी। दोनों बच्चों को गले लगा लिया—"मेरे महान बच्चों" 'My loving Sons' और दोनों को पुच्च-पुच्च करने लगी। बच्चों को मम्मी के गले लगकर मातृत्व के अमूल्य सुख का अनुभव हो रहा था।

माँ ने अपना पर्स खोलकर बच्चों को 500-500 के नोट रिटर्न गिफ्ट में दिए। और यह भी घोषणा की कि अब से तुम दोनों की पॉकेट मनी दुगनी। बच्चे भी उस्ताद थे, वो इसी घोषणा की फिराक में थे।

पैसे हाथ में लेकर बच्चों ने भी माँ को और खुशी देने का मन बनाया। शाम को मॉल में घूमने व फिल्म देखने का प्रोग्राम तय हो गया। खाना भी बाहर ही खाएंगे। इतनी देर में उर्वशी का पति मंजीत भी वहीं पहुंच गया। बच्चों को सुबह-सुबह घूमने व योगासन के लिए पार्क भेजने की उसकी हिदायत थी। बच्चों को घर में देख उसे गुस्सा आया। परंतु उर्वशी ने उसका यह मूड भांप लिया था। वह बच्चों को डांटने की शुरूआत करता इससे पहले ही वह बोल उठी—"आज बच्चों को कुछ मत बोलो, आज ये अच्छे मूड में हैं।"

पत्नी के हस्तक्षेप के आगे मंजीत ने माँ-बेटों के प्यार का संगम होना बेहतर समझा। अक्सर ऐसा होता था कि जब कभी मंजीत बच्चों को डांटने या समझाने की कोशिश करता या किसी काम के लिए कहता तो उर्वशी का मातृत्व जाग उठता था। वह बीच में ही हस्तक्षेप कर देती थी। मंजीत से उसकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस बात पर अक्सर कहा-सुनी हो जाती थी। इस स्थिति में मंजीत चुप होकर अक्सर स्वयं को व्यस्त कर लेता था।

दुनिया में हर दिन कोई न कोई 'डे' मनाया जाता है। जैसे—फ्रैंडशिप डे, वेलेन्टाइन डे, चॉकलेट डे, रोज डे, इत्यादि। 'मदर्स डे' का नाम उसने पहली बार सुना था। मन में 'मदर्स' को लेकर संशय भी था कि यह शब्द एकवचन है या बहुवचन। ये दिन कहीं उनके लिए तो नहीं जिनकी कई माँ होती हैं। क्योंकि पहले राजा-महाराजा कई पत्नियां रखते थे तो उनके बच्चे सभी को ही माँ कहकर बुलाते थे जैसे कि बड़ी माँ, छोटी माँ आदि। एक दिन इकट्ठे उनके साथ रहते होंगे। परंतु अब भारत में तो सिंगल मां का युग है। इसलिए इसे 'मदर डे' होना चाहिए। मंजीत को अभी भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर 'मदर्स डे' की जरूरत क्यों पड़ी? घर से बाहर आकर अपने एक पत्रकार मित्र को फोन किया कि ये 'मदर्स डे' क्या बला है? उसने पहले मजाक में एक पंक्ति सुनाई—"बोइया में बोइनी, बोइनी में जौ, श्वसुर मेरा एक, और सास मेरी सौ"। हंसी-ठहाकों के बीच ही गंभीर मुद्रा में मुँह बनाते हुए उसने बताया कि आजकल संयुक्त परिवार खत्म हो रहे हैं। घर में एक या दो ही बच्चे होते हैं। विदेशों में जहाँ बच्चे खासतौर पर मां-बाप से दूर रहते हैं। वहाँ एक दिन निर्धारित कर दिया है कि कम से कम उस दिन तो माँ के पास ही रहे। इसलिए यह मदर्स डे मनाया जाता है। समझे! मित्र ने समझाया।

इसी बीच उर्वशी भी वहाँ पहुँच चुकी थी। उसने मंजीत का हाथ झटका—"कहाँ घूम रहे हो, अंदर आओ ना"।

मंजीत को घर में खींचते हुए उर्वशी ने उसे कोर्डलेस फोन थमा दिया—"लो बच्चों ने तो बड़ी माँ यानी नानी माँ को भी 'मदर्स डे' पर विश कर दिया है। तुम भी उन्हें विश कर दो—मंजीत ने सासू माँ को मदर्स डे पर फोन मिलाकर नतमस्तक होकर "हैप्पी मदर्स डे" कहा। सासू माँ बड़ी खुश हुईं, उसने तुरंत उन्हें खाने पर आने का न्यौता दे दिया। मंजीत मना नहीं कर पाया। शाम का खाना तो बाहर का तय हो चुका था बीवी बच्चों के साथ। दोपहर का लंच दफ्तर में करना था। बचा सुबह का 'नाश्ता', चलो नाश्ता वहीं कर लेते हैं। मंजीत ने कहा तो उर्वशी खुश हो गई। बंच्चे भी तैयार बैठे थे। स्कूटर स्टार्ट करके एक को आगे खड़ा कर लिया और एक बच्चा उर्वशी के साथ बैठ गया। लगभग 20 कि.मी. दूर ससुराल पहुंच गए। वहां सासू मां इंतजार कर रही थीं—मंजीत और उर्वशी दोनों ने पैर छुए और 'मदर्स डे' पर उनका आशीर्वाद माँगा—बच्चों ने हाथ हिलाकर "हैप्पी मदर्स डे' कहा। माँ को बधाई देने व माँ से आर्शीवाद पाने का यह अनुपम अवसर था। वैसे तो मंजीत माता रानी के प्रसिद्ध भक्तों में था। माता के जागरण में पूरी रात माँ रानी की सेवा में गीत गाकर अरदास भेंट करता था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ का गुणगान सुंदर शब्दों में उस जैसा कोई अन्य नहीं कर पाता था। माँ के लिए उसने कई गीत भी लिखे जो अत्यंत प्रसिद्ध थे।

आधा दिन ससुराल में गुजारने के बाद उसने पूरा दिन घर में ही गुजारने का मन बनाया। क्योंकि अब दफ्तर जाने का समय भी नहीं रह गया था। घर आने के बाद पूरा दिन बच्चों के साथ घूमने-फिरने के लिए निकल पड़े। गाड़ी में एफ.एम. चला रखा था। जिसके प्रसारण का सभी आनन्द ले रहे थे। 'मदर्स डे' पर मनमाफिक गीतों की फरमाईश एस.एम.एस. के जरिये रेडियो एफ. एम. पर सुने जा रहे थे। रेडियो एफ. एम. पर श्रोतागण माँ के नाम तरह-तरह के बधाई संदेश भी भेज रहे थे, " मां तुम महान हो! ईश्वर का दूसरा रूप हो. ...."। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि समूचा देश 'मां-मय' हो गया है।

मंजीत को पहली बार एहसास हुआ कि 'मदर्स डे' वाकई में बहुत महान 'डे' होता है क्योंकि उसने तो अपने बचपन से अबतक न तो 'मदर्स डे' सुना था न ही मनाया था। परिवार के साथ गुड़गाँव पहुँचकर मॉल में बच्चों ने खूब शॉपिंग की, बरिस्ता में काफी पी व मैकडोनाल्ड में पीज़ा का लुत्फ उठाया। सायं काल को यादगार बनाने के लिये 6 से 9 बजे की फिल्म शो 'खोसला का घोसला' का टिकट ले लिया। हॉल में जाने से पहले पॉपकार्न, कोल्ड ड्रिन्क, अंकल चिप्स के पैकेट आदि खरीद लिए।

सिनेमा हॉल में जाने को तैयार ही थे कि पड़ोसन का उर्वशी के मोबाइल पर फोन आ गया कि गाँव से मंजीत की माँ आई है। एक घंटे से इंतजार कर रही है। इस खबर से उर्वशी का चेहरा उतर गया। वह उदास हो गई। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने मंजीत को यह बात बताई। "बुढ़िया को गाँव में कोई काम नहीं है। जब देखो यहाँ चली आती है।"

"कौन" मंजीत ने पूछा

"तुम्हारी माँ और कौन?"

"क्या हुआ, माँ गावँ से आई है क्या?

"हां दो घंटे से बैठी है, पड़ोसी के घर। मूड खराब कर दिया। मुश्किल से आज बच्चों के साथ निकले हैं " पत्नी झल्लाकर बोली।

मंजीत सिर खुजलाना शुरू कर देता है। उसके माथे पर शिकन आ जाती है। उर्वशी वापस फोन पड़ोसन को मिलाती है—"कह दो उनसे मंजीत तो किसी जरूरी काम से बाहर गए हैं। तीन-चार दिन बाद आएंगे। मैं मम्मी के पास हूँ। उनकी तबियत खराब है। सुबह आऊँगी। चाहे तो आपसे चाबी लेकर घर में ही रुक जाएँ या बड़े भाई के पास चली जाएँ। सामने से ऑटो दिलवा देना।

इतना कहकर वह फोन डिस्कनेक्ट कर देती है। और पूरा परिवार फिल्म देखने हॉल में चला जाता है। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं दोषी नहीं!

सर्दियों की रात थी। कोयले की अँगीठी से गर्म कमरे में मैं पौने नौ बजे वाला समाचार सुन रहा था। अचानक द्वार पर किसी ने दस्तक दी। मेरे नौकर रामू ने दरवाजा खोला और वहीं से उसने बताया कि आगन्तुक मुझे बुला रहा है। मैंने उसे अपने पास ले आने को कहा। वह व्यक्ति कमरे में दाखिल हुआ। परिचय से ज्ञात हुआ कि वह मेरा बहुत पुराना मित्र रामौतार था जिसे मैं बहुत दिनों से न मिलने के कारण पहचान नहीं पाया।

रामौतार और मैं कई वर्ष तक सहपाठी रहे थे। हम साथ-साथ खेलते और पढ़ते थे। मैट्रिक करने के बाद मैं दूसरी जगह चला गया था। अब वह चार बच्चों का बाप था तथा जूते-चप्पलों की एक दुकान खोल रखी थी। यकायक रामौतार के रात्रि में आने से मैं असमंजस में पड़ गया। वह सर्दी से ठिठुर रहा था। उसने एक मैला-फटा हुआ खेस ओढ़ रखा था। दाढ़ी बढ़ी हुई थी। बालों में भी कुछ सफेदी उग आई थी। आते ही धम्म से वह पलंग के नीचे बैठ गया, जैसे बहुत थका हुआ हो। फिर नीचे की ओर मुंह करके सिसकने लगा। कांपती आवाज में बोला—"कुछ सुना आपने?"

"क्या?" मैंने पूछा। उत्तर में वह फिर सिसकने लगा। मैंने ढांढस बंधाते हुए कहा—"अरे भाई, बताओ तो सही। बताओगे नहीं, तो मुझे कैसे पता चलेगा!"

"राकेश को फांसी की सजा हो गई।" इतना कहते ही वह फिर रोने लगा।

मैं बहुत देर तक सांत्वना देता रहा। काफी कोशिश के बाद मैं उसे चुप करा पाया।

"क्यों? क्या कारण था? कुछ बात तो होगी?" मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"मेरे मित्र! पहले तुम मुझे मारो, घर से धक्का देकर निकाल दो,...मैंने बहुत कसूर किए हैं। मैं दोषी हूँ। मुझे सजा दो!"

"रामौतार! मैं तुम्हारी पूरी-पूरी मदद करूँगा, तुम मुझे बताओ तो सही।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बताऊँ क्या? ...यदि कोई बुरा आदमी होता है... तो उसे सजा मिलनी ही चाहिए...!" रुंधे कंठ से रामौतार बोला।

"फालतू की बातें न करो। सही-सही बताओ। क्या कारण है, जो ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ा।"

उसने कहा—"राकेश मेरा सबसे बड़ा लड़का है। आपको तो वह शायद जानता भी होगा। उससे छोटे 3 बच्चे और हैं। राकेश 22 वर्ष का है, सबसे छोटा 11 वर्ष का है। मैं इन सबमें राकेश को बहुत चाहता हूँ। मुझसे भी अधिक प्यार उसकी माँ उसे करती है। जब भी मैं उसे कुछ अच्छा-बुरा कहता, तो वह मुझे झिड़क देती और राकेश को दुलारने लगती थी।" इतना कहकर रामौतार चुप हो गया।

"तो...?" मैंने पूछा!

"दुःख और विडंबनाओं से भरी मेरी जीवन-गाथा जरा लम्बी है, मित्र!" उसने लंबी और ठंडी आह भरते हुए कहा। मैंने उत्तर में कहा—"कोई बात नहीं।"

अब वह थोड़ा इत्मिनान से बताने लगा—

"मैंने चंडीगढ़ में दुकान खोल रखी है। काम से मुझे फुर्सत नहीं मिलती थी। मैंने राकेश को गाँव के पास ही एक इंटर कालेज में पढ़ने के लिए भेज दिया, जिसका पूरा खर्चा मैं अपनी पत्नी के पास भेज दिया करता था। एक दिन विद्यालय के प्रधानाचार्य का एक पत्र मेरे पास आया, जिसमें लिखा था कि आपका पुत्र राकेश बिल्कुल भी नहीं पढ़ता है। कई माह से फीस भी जंमा नहीं की है। रोजाना के झगड़ों तथा असभ्य व्यवहार से हम परेशान हैं। आप एक समझदार व प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं; यह आपको शोभा नहीं देता।

अगले दिन मैं गाँव गया, तो वहाँ मुझे राकेश नहीं मिला। लेकिन उसकी शिकायतें कई लोगों से सुनने को मिलीं। मैंने सब कुछ राकेश की माँ को बताया, तो उसने मुझे समझाते हुए कहा—"राकेश सबसे बड़ा बेटा है। अभी कुछ भी कहना ठीक नहीं होगा। आगे चलकर अपने आप समझदार हो जाएगा। मैंने मंदिर में आज विशेष दक्षिणा भी बोल दी है। कल पंडित जी को भोजन भी करा दूँगी। इस पर से शुक्र ग्रह के दुष्प्रभाव पंडित जी उतार देंगे। बाद में आप भी चुपचाप पंडित जी के मंदिर में विशेष प्रसाद बंटवा देना। फिंकर मत करो। पंडित जी सऽऽब ठीक कर देंगे।"

अपनी पत्नी के इस अंधविश्वास के सम्मुख मुझे कुछ भी कहने का साहस नहीं हुआ। मैं मन मारकर चुपचाप चंडीगढ़ अपनी दुकान पर आ गया।

लगभग एक महीने के बाद मुझे दो पत्र प्राप्त हुए। एक विद्यालय के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्रधानाचार्य का था जिसमें लिखा था कि राकेश नशे की हालत में विद्यालय में
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पकड़ा गया था। वह यदा-कदा ही विद्यालय आता था। अतः अनुशासनात्मक कार्यवाही के अंतर्गत उसका नाम विद्यालय से काट दिया गया है। दूसरे पत्र में लिखा था कि राकेश ने यहाँ सभी को परेशान कर रखा है। कल यह सप्रू हाउस के पास शराब के नशे में बेहोशी की हालत में पाया गया। चार दिन से हमारे यहाँ था। आज हमने यहाँ से रेल में बैठा दिया है, क्योंकि रोज का भारी जेब खर्च हमारे बस का नहीं। इसे अब हमारे यहाँ मत भेजना। यह पत्र मेरी बहिन का था और दिल्ली से आया था। मैंने तुरंत ही घर को प्रस्थान किया।

"घर पहुँचकर आपने क्या किया?" मैंने पूछा।

"जब मैं घर पहुँचा, उस समय भी वह थोड़ा नशे में था। बाल बहुत बढ़े हुए थे। मैंने उन दोनों पत्रों की ओर उसकी माँ का ध्यान दिलाया। वह बोली—"पंडित जी ने एक अच्छा गंडा तैयार कर दिया है। अब वह कभी नशा इत्यादि नहीं करेगा। शराब को तो पंडित जी ने शिव का भोग बताया है, इसके पीने में कोई बुराई नहीं है।" इतना सुनते ही मेरी आंतें-पांतें जलकर राख हो गईं। क्रोधवश मैंने एक कमरे में बंदकर राकेश की डंडों से खूब मरम्मत की। उसकी माँ से उसका जेब खर्चा भी बंद कर देने को कहा। यद्यपि उसकी माँ उसे बचाने आई, परंतु मैंने उसकी एक न सुनी। इसके बाद मैं चंडीगढ़ लौट आया।

कई दिन बाद मुझे उसकी माँ का एक पत्र मिला, जिसमें उसने लिखा था कि पिटाई के बाद कुछ दिन तो वह ठीक रहा, लेकिन अब उसने छुटपुट चोरियाँ भी शुरू कर दी हैं। तुमने उसकी पिटाई करके अच्छा नहीं किया। मैंने भगवान से उसके दिमाग को बदलने की प्रार्थना की थी, परंतु तुमने भगवान की शक्ति पर विश्वास न करके अच्छा नहीं किया है, भगवान अब नाराज हो गए होंगे। इसीलिए मैंने मंदिर में राकेश की मंगल कामना हेतु व्रत रखने शुरू कर दिए हैं, ताकि भगवान का आशीर्वाद उसे प्राप्त हो। तुम भी भगवान पर भरोसा रखो।

मैंने अपने मित्र को बीच में ही टोका—"तुम भी तो कोई सार्थक प्रयास कर सकते थे?"

लेकिन वह मुझे अनसुना करके अपनी बात आगे बताने लगा।

"पत्र में आगे लिखा था कि पंडित जी का गंडा उसे अवश्य ही सुधार देगा... लेकिन कुल चार दिन ही बीते थे कि हमारे गाँव के कुछ व्यक्ति आए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने भी राकेश की शिकायत की और बताया कि वह एक हत्या के मामले में गिरफ्तार हो चुका है।

यह सुनकर मैं दंग रह गया। मैं तुरंत ही रवाना हुआ। मालूम हुआ कि राहजनी के चक्कर में राकेश ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी थी। वह पुलिस द्वारा हिरासत में ले लिया गया है। मेरा आंतरिक भाव न दुखी था न प्रसन्न। लेकिन उसकी माँ के वात्सल्य ने मुझे परेशान कर दिया। उसे छुड़ाने के लिंए मैंने अच्छा वकील किया। तत्पश्चात् अदालत से उसे दो लाख रुपए की जमानत पर छुड़ा कर लाया। अदालत में मुकदमा चला, उसके नाम के साथ मेरा नाम भी जोड़कर बोला जाता था। अंततः उसको फांसी की सजा सुना दी गई।''

बात खत्म करते-करते उसका गला रुंध गया। क्षणिक विराम के बाद उसने फिर कहना शुरू किया—''दोस्त! यहाँ तक तो ठीक है, लेकिन पुत्र के साथ मेरा भी मरना हो गया है। सभी दुःख प्रकट करने मेरे पास ही आते हैं। कंचहरी में राकेश के नाम के पीछे पिता का नाम भी बोला जाता था। कल समाचार-पत्र में प्रकाशित खबर में भी उसके नाम के साथ मेरा नाम जुड़ा हुआ था। इस तरह मेरा नाम पुत्र की कारगुजारियों के कारण स्वतः बदनाम हो गया। जब फाँसी होगी तब भी उसके नाम के साथ मेरा नाम बोला जाएगा। राकेश की माँ भी मुझसे लड़कर मायके चली गई है। सब मेरा ही दोष बताते हैं।''

11 बजे चुके थे और वह अब बहुत आर्त्त में स्वर रोने लगा था। जैसे-तैसे मैंने रामौतार को शांत किया।

इस मामले में कुछ भी करने से पूर्व मैं राकेश से एक बार मिलना चाहता था। उससे मिलने मैं बरेली जेल गया। वहाँ इस प्रकार के कैदी से मिलने की अनुमति आसानी से नहीं मिलती। लेकिन पैसे में बहुत ताकत होती है। वह सबल साधन बना। राकेश मुझे नहीं जानता था, लेकिन परिचय देने पर वह मुझे पहचान गया। उसने मेरा नाम घर में कई बार सुन रखा था। जब वह छोटा था तब उसने मुझे देखा भी था। मेरे मन में यह जानने की प्रबल जिज्ञासा थी कि आखिर एक शरीफ बाप के बेटे ने ऐसा कदम क्यों उठाया कि उसे फांसी की सजा सुनाई गई? क्या कारण रहा? ...तरह-तरह के सवाल मेरे मन में उठ रहे थे।

राकेश को अपनी इस सजा का क़ोई विशेष गम नहीं था। वह बहुत कमजोर दिखाई दे रहा था। मेरे प्रश्न करने पर कुछ क्षण के लिए वह चौंका और आकाश की ओर देखने लगा। फिर उसने कहना शुरू किया—''यह तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आप जान ही चुके होंगे कि मैं एक नामी लुटेरा बन चुका था। मेरे पीछे पुलिस भी हाथ धोकर पड़ी रहती थी। यह ठीक ही था, क्योंकि जब मैं नशे में होता था, तब किसी को कुछ नहीं समझाता था। यहाँ तक कि एक गरीब की मैंने हत्या भी कर दी। इन सब दोषों की जननी है शराब पीने की आदत। शराब पीने के लिए मैं हर प्रकार से पैसा इकट्ठा करता था।''

यह आदत मुझे तब पड़ी जब मैं कक्षा नौ में था। मेरे तीन मित्र थे जो बीड़ी पीते थे। उन्हें धुएं के छल्ले निकालते देख मेरी भी इच्छा हो उठती थी। चंचल मन था। वे तीनों मित्र मुझे अपने साथ मुफ्त में बीड़ियां पिला दिया करते थे। लेकिन बाद में यह आदत बहुत बढ़ गई और मैं घर से पैसे चुराकर उन मित्रों के साथ बीड़ी पीने लगा। कभी-कभी तो लगातार पीते हुए जल्दी ही बीड़ी के पूरे बंडल को समाप्त कर देता था। यदि कभी अध्यापक हमें देख लेते थे, तो कुछ नहीं कहते थे, बल्कि अपने वास्ते उस बंडल को हमसे ले लेते थे।

एक बार मेरी माँ मुझे अपने साथ भैरव बाबा के मंदिर ले गईं। वहाँ एक बाबा चिलम में कुछ चरस रखकर धुआँ निकाल रहे थे। नशे का यह दूसरा रूप था। मेरी भी कुछ इच्छा हुई, परंतु उनसे कहता क्या!''

''तो फिर, क्या किया तुमने?'' मैंने पूछा।

''दो दिन बाद मैंने विद्यालय की तीन घंटे पढ़ाई के छोड़ दी और बाबा से मिलने मंदिर गया। वहाँ देखा कि बाबा ने शरीर पर राख मल रखी है और उनके कुछ शिष्य भी वहाँ बैठे हैं। वे बारी-बारी से बम भोले, शिव-शिव कहते हुए चिलम के कश भरकर धुआं निकाल रहे थे। वहाँ एक बोतल शराब भी रखी थी, जिसे वे गिलास में थोड़ा-थोड़ा करके पी भी रहे थे।''

हालांकि समय पूरा हो चुका था तथापि मेरे साथ जेलर भी बात को ध्यान से सुन रहा था। लगा कि राकेश का हृदय पश्चाताप की अग्नि में तप रहा है। उसने आगे कहा—''मेरी इच्छा तो हुई, लेकिन पहले दिन मैं वहाँ से लौट आया। दूसरे दिन विद्यालय छोड़कर पुनः बाबा के पास गया, तो बाबा ने मुझे प्यार किया तथा कहा कि तू होनहार है, संत लोगों की संगति चाहता है, आगे चलकर बड़ा आदमी बनेगा। मैं इस आशीर्वाद से खुश हो गया। चिलम की इच्छा जोर मार रही थी। हिम्मत जुटाकर बाबा से चिलम पीने की इच्छा प्रकट की, तो बाबा खुश हो गए और कहा कि यह शिव का प्रसाद सभी के लिए है। तुम भी इसका स्वाद ले सकते हो। इस भभूत को बहुत-सी माताएं अपने घरों के रोग, क्लेश दूर करने के लिए ले जाती हैं। वे करोड़पति घराने की होती हैं, मुझे हजारों रुपए दक्षिणा देती हैं। मैं इस शिव-प्रसाद के सामने उनके दान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को कुछ भी नहीं समझता, शिव मेरी मान्यता बढ़ाते हैं।

"इतना कहने के पश्चात उस बाबा ने एक पैग शराब मुझे पीने को दी, जिसे पीकर मैं खुश हो गया और रोजाना वहाँ जाने लगा। मैंने विद्यालय भी छोड़ दिया। बाबा के आदेश के सामने मैंने प्रिंसिपल के आदेश को कोई तरजीह नहीं दी।

"मैं बाबा के रंग में रंग चुका था। यद्यपि पिताजी के कई पत्र माँ के पास आए और मुझे डराया भी गया, परंतु अब इसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होता था।

माँ बाबा की भभूत लाकर मुझको चटाती थी, ताकि मैं शराब पीना छोड़ दूं। वह मंदिर में जाकर मुझे शुद्ध करने की प्रार्थना करती थी, प्रसाद बोलती थी, पैसे देकर बाबा से गंडा बनाकर मुझको देती थी। लेकिन किस्सा था कुछ और। मेरे वहाँ पहुँचने पर, बाबा मुझे उस दिन की पूरी रिपोर्ट दे देते थे और उन पैसों से चरस यानी शिव-प्रसाद और शराब मंगाते थे, जिसे हम कई लोग बांटकर स्वर्ग का आनंद प्राप्त करते थे—बाबा के कथनानुसार शिव-प्रसाद प्राप्त कर सातवें आकाश में पहुँचने की अनुभूति होती थी जहाँ शिव निवास करते हैं! ...और हम सब मूर्ख बाबामय हो जाते थे!

एक दिन बाबा शहर में बड़ी डकैती डालने के पश्चात् वहाँ से रवाना हो गए। मुझे भी बाबा ने अपने साथ रखा था। हमने यह अफवाह फैलाई कि किसी एक स्थान पर सिद्ध महात्मा अधिक दिन नहीं रुका करते। बाबा के जाने के बाद मैंने अपने दोस्तों के साथ पैसे आने की खुशी में खूब छक कर शराब पी। एक बार बाबा का संदेश किसी को कत्ल करने का आया। आज्ञा मानकर मैंने कत्ल कर दिया। हुआ वही जो होना था। अन्य साथी तो भाग गए, मुझे वहीं छोड़ गए। मैं पकड़ा गया। खूब मरम्मत हुई। केस चला और अंत में मुझको फांसी की सजा बोल दी गई!"

इतना कहने के बाद राकेश फूट-फूट कर रोने लगा। जब उसे सहायता का आश्वासन दिया तो उसने कहा—"मुझे फांसी का कोई गम नहीं है, क्योंकि यह मेरे कर्मों का फल है। मेरे कारण ही आप सबको दुख हुआ है, मेरा घर बर्बाद हो गया है। छोटे भाई-बहिन सभी दुःखी हैं। मेरे बाद आप सबको राहत मिल जाएगी। लेकिन इतना बता दूं अंकल कि इसमें दोष मेरा नहीं। दोष तो मेरे माता-पिता का है जो मुझसे अंधा प्यार करते रहे, मेरे ऊपर कभी ध्यान नहीं दिया कि मैं कहाँ आता-जाता था।" राकेश की बातें सुनकर मैं हतप्रभ रह गया! ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नाटक

बिनती की माँ संतो ने अपने आखिरी समय में एक ही इच्छा जाहिर की थी कि उसके मरने के बाद गाँव के बाहर बरगद के पेड़ की छाँव में एक बड़ा सा भोले का मंदिर बनवा दें।

माँ की आज्ञा को मानकर चारों बेटों ने पूरी श्रद्धा के साथ मंदिर का निर्माण करवा दिया। इस कार्य में गाँव वालों ने भी पूरे उत्साह के साथ सहयोग किया। किसी ने ईंट दिए, किसी ने सीमेंट, किसी ने नगद पैसे दिए और जिनके पास कुछ भी नहीं था, उन्होंने खुद श्रम करके अपना सहयोग इस पुंण्य कार्य में दिया। गाँव में यह अकेला ही मंदिर था, जहाँ हर बुधवार को भारी तादात में भक्तों की भीड़ जमा होती है। लोगों का मानना है कि इस मंदिर में जो भी मांगो वह पूरा होता है।

इस मंदिर की प्रसिद्धि काफी दूर-दूर तक फैली हुई है। जिससे दूर-दूर के साधु-महात्मा अक्सर यहाँ आते रहते हैं और जप-तप में लीन रहते हैं। बड़ी-बड़ी जटाएं, गेरूआ वस्त्र और शरीर पर भस्म लगाए साधु एक अलग ही शोभा पाते हैं। पूरा गाँव साधुओं की सेवा में तत्परता से खड़ा रहता है। और साधु उन्हें आर्शीवाद देकर दीर्घायु व सुखी जीवन का वरदान देते हैं। मंदिर के चारों तरफ दुकानें खुल गई हैं। जिसमें पूजा के लिए नारियल, सिंदूर, व भोग लगाने के लिए मीठा प्रसाद आदि उपलब्ध है। रात-दिन मंदिर में भक्तगणों की भारी भीड़ रहती है। यहाँ सेवक अपनी सेवाएं प्रदान करके तृप्त होते हैं। उनमें एक अजीब उत्साह व आत्मविश्वास होता है। ईश्वर के प्रति, अपनी सेवा भाव के प्रति व मंदिर में विद्यमान साधु समाज के प्रति। इस प्रांत के राजा अक्सर वेश बदलकर प्रजा का सुख-दुख जानने के लिए हर गाँव में जाया करते हैं।

महाराज जब इस गाँव से गुजर रहे थें तब भीड़ को देखकर साथ में चल रहे दरबान से पूछा—"यह क्या है?"

दरबान चुप रहा। महाराज की उत्सुकता और बढ़ गई... पुनः पूछा—"इस गाँव में कोई खास बात है क्या?"

परंतु दरबान फिर भी चुप रहा। कुछ देर बाद बोला—"महाराज यहाँ एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मंदिर है। वहाँ साधु धूनी रमाए हैं, और भक्त उसकी पूजा कर रहे हैं।"

"पूजा! एक साधु की पूजा! या मंदिर में भगवान की पूजा!

महाराज ने फिर पूछा।

दरबान बोला—"महाराज! मंदिर में भगवान की पूजा के साथ-साथ किसी साधु की भी पूजा हो रही है।"

महाराज—"लेकिन ऐसा क्यों?"

दरबान—"महाराज, शायद ये साधु छयोगी है। अभ्यास के द्वारा इसने अपने शरीर पर विजय प्राप्त कर ली है। इसी चमत्कार से इसने सबको मंत्रमुग्ध कर रखा है। जिसका परिणाम है कि लोग इनकी पूजा कर रहे हैं।"

बातों-बातों में गाँव पीछे छूट चुका है।

महाराज—"क्या वास्तव में यह साधु चमत्कारिक नहीं है?

दरबान—"महाराज! छयोग की मदद से ये साधु योगी का नाटक कर रहा है। परंतु वास्तव में पाखंडी है।

महाराज ने कहा—"विस्तार से बताओ।

दरबान—"महाराज यह नाई कई तरह का होता है—जैसे कि खड़ेसरी बाबा, ये बाबा भूत भगाना, रोगों से मुक्ति दिलाना, स्त्री रोगों का इलाज करना पुत्र प्राप्ति का आर्शीवाद देना आदि करते हैं। लोग इन गुरुओं को भगवान से भी ऊपर मानकर पूजते हैं।"

"भगवान से भी ऊपर?"

"जी महाराज।"

"तुम मुझे गलत समझने की कोशिश कर रहे हो। तुम नास्तिक तो नहीं?"

"क्षमा करें महाराज।"

महाराज की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। साधु समाज की निंदा के कारण महाराज क्रोधित हो गए और वहीं रास्ते में ही दरबान को गाड़ी से उतरने का हुक्म दिया और एवज में 200 अशर्फियां देते हुए दो वर्ष के लिए नौकरी से हटने का फरमान जारी कर दिया।

अचानक आयी इस मुसीबत से दरबान कुछ न कह सका। दुख का पहाड़ सिर पर था। महाराज का आदेश मानने के सिवाय कोई दूसरा चारा न था। गरीब दरबान 200 अशर्फियां लेकर महाराज के पैर छूकर, नौकरी दो वर्ष के बाद पाने का आश्वासन पाकर अपने घर चला गया।

महाराज ने नियम यह बना रखा था कि वेश बदलकर दूर-दूर गाँवों में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाते थे और जनता के सुख-दुख का स्वयं आकलन करते थे। जनता में अमन-शांति थी। अपराध कहीं भी नहीं था। जनता व महाराज के बीच सीधा संवाद कायम था। इस कारण जनता महाराज की बहुत इज्ज़त करती थी। महाराज का स्वभाव बहुत शांत था, लेकिन दरबान की बातचीत से उपजे असंतोष को वे काबू न रख सके। दरबान को नौकरी से दो वर्ष के लिए निकालने का पछतावा महाराज को न था।

महाराज की धर्म-कार्य में कोई रुचि नहीं थी, यद्यपि वे इसके विरुद्ध भी नहीं थे। जनता को अपने धर्म-कार्य में पूरी आजादी थी। कोई धार्मिक उन्माद नहीं था। सर्व-धर्म-समभाव की भावना के साथ सभी जनता भाईचारे से रह रही थी। इस घटना के बाद महाराज की धर्म में तो आस्था नहीं बढ़ी, लेकिन रुचि बढ़ गई। लगभग दो महीने के भ्रमण के बाद महाराज राजधानी से वापस आ गए, लेकिन उनके पसंदीदा दरबान की कमी मन में खलती रही। परंतु महाराज दिया हुआ फरमान कैसे वापस लेते?

अगले महीने श्रावण मास शुरू होना था और इस माह में जनता खीर की दावतें दिया करती थी। मंदिरों में साधु महीनों का मौनव्रत व उपवास रखकर अपनी शक्ति का परिचय देते थे। किसी-किसी मंदिर में तो कोई साधु 60 दिन का उपवास तक रखकर जनता को आकर्षित करता था। जनता भी उपवास तोड़ने वाले दिन साधु को शॉल, वस्त्र, धन आदि दान देकर अपने को धन्य समझती थी। साधु के चरण स्पर्श करने वालों की लंबी कतार होती थी। औरतें, बूढ़े, बच्चे सभी कतार में खड़े होकर घंटों अपनी बारी का इंतजार करते।

राजधानी से लगभग 3 कि.मी. दूर बने महिषासुर मंदिर में तो ज्यादा ही भीड़ थी, क्योंकि इस समय वहाँ जो उपवास पर बैठे थे, उनका दावा था कि उनके छुए हुए पानी को पी लेने से हर बीमारी का इलाज हो जाएगा। कारण यह कि उपवास से तप की शक्ति साधु के अंदर आ गई है। वह जिस वस्तु को छुएंगे, वह न केवल पवित्र हो जाएगी, बल्कि चामत्कारिक दैवीय शक्तियां उसमें समा जाएंगी। मंदिर में उपस्थित स्वामी भुजानंद यह चमत्कार दूर-दूर तक के देशों में सिद्ध कर चुके हैं और विदेश में फैले उनके शिष्य इस बात के गवाह हैं कि स्वामी भुजानंद एक चामत्कारिक महात्मा हैं। जप-तप व त्याग के बल पर स्वामी जी के पास चामत्कारिक दैवीय शक्तियां हैं।

यद्यपि राजधानी के अंदर व बाहर बहुत से मंदिर थे, पर स्वामी भुजानंद द्वारा चलाए जा रहे इस मंदिर की प्रसिद्ध दूर-दूर तक फैली थी। मंदिर में किसी भी प्रकार का चढ़ावा देने की मनाही थी। स्वामी जी स्वयं भिक्षा मांगकर भोजन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे। नंगे पैर चलना, सर्दी-गर्मी में तपस्या में लीन रहना, दो माह सिर्फ जल के सहारे रहना उनकी विशेषताएं थीं। स्वामी ने भक्तों के सम्मुख चतुर्मास व्रत शुरू करते समय यह घोषणा कर दी कि वे अब जीवन-पर्यन्त कभी अन्न ग्रहण नहीं करेंगे। सिर्फ गाय का दूध व फल खाकर ही जीवन-यापन करेंगे। व्रत के दौरान जो ग्रहण करते थे, उसका बचा हुआ जल, भक्तों में व दीन-दुखियों में एक-एक चम्मच करके बांट दिया जाता था। जल ग्रहण करने के लिए बहुत लंबी कतार लगती थी। सप्ताह में एक बार स्वामी जी के दर्शन होते थे। दर्शन के उपरांत भक्तगण स्वामी जी का चित्र लेकर ताबीज बनवाकर पहनते थे, जिससे उनकी भूत-प्रेतों से रक्षा होती थी। बुरे स्वप्न भी नहीं आते थे। एक भक्त ने तो यहाँ तक दावा किया कि ताबीज पहनने के बाद से उसका व्यवसाय चल निकला और आज वह स्वयं को धन्य मानता है।

मंदिर बहुत छोटा था। कई बार भक्तों ने आग्रह किया कि वे विशाल मंदिर बनवा देंगे, लेकिन स्वामी भुजानंद ने इशारे से मना कर दिया। स्वामी जी का कहना था कि धन समस्त झगड़ों की जड़ है। धन के लालच में मनुष्य के विचार बदलते हैं और वह स्वयं को भूलकर अर्थ के लिए हो जाता है। एक भक्त ने स्वामी को अपनी समस्त संपत्ति दान करनी चाही, पर स्वामी ने मना कर दिया और कहा, "धन का त्यागपूर्वक भोग करो" स्वामी जी के त्याग के चर्चे जगह-जगह प्रसिद्ध हो गए। हर किसी के पास स्वामी जी के दो-चार किस्से मौजूद रहते थे।

भक्तों की भीड़ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। स्वामी जी के यहाँ सभी धर्मों के लोग आते थे और दर्शन करके धन्य महसूस करते थे। स्वामी जी किसी-किसी को गुरु-मंत्र भी देते थे। परंतु माह में एक बार पूर्ण चंद्रमा की रात को पूर्णमासी के अवसर पर भीड़ बेकाबू हो जाती थी।

धीरे-धीरे यह बात राजा तक पहुँची। शुरू में तो इतनी भीड़ की बात सुनकर राजा को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन बाद में स्थानीय कोतवाल को आदेश दिए गए कि किसी भी तरह वहाँ कानून-व्यवस्था बनी रहे और हर आने-जाने वाले को ठहरने व जल आदि की सुविधा दी जाए।

महाराज की पुत्री को दमे की बीमारी थी। कई वैद्य-हकीम दवा दे चुके थे, पर कोई असर नहीं हो रहा था, इस कारण महाराज व महारानी दोनों चिंतित रहते थे। राजकुमारी की बढ़ती उम्र भी एक कारण थी, क्योंकि उपयुक्त वर तलाश करने से पहले वे राजकुमारी को पूर्ण स्वस्थ देखना चाहते थे। महाराज के पास भी स्वामी जी के चामत्कारिक दर्शन व जल की खबर पहुँची।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले तो महाराज को बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ और अनसुना कर दिया, लेकिन बार-बार रानी के कहने पर महाराज ने कोतवाल को वहाँ से जल लाने का आदेश दिया। स्वामी जी के एक कार-सेवक भक्त ने कोतवाल को सलाह दी कि यदि रानी स्वयं पूर्णिमा की रात्रि में जल व आर्शीवाद लेने आएं, तो राजकुमारी को स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है। महारानी को स्वामी जी पर पूरा विश्वास था। राजा के मना करने पर रानी रूठ गयी। आखिर राजा को महारानी की बात माननी पड़ी।

पूर्णिमा की रात को राजा व रानी दोनों स्वामी के आश्रम के बाहर कतार में खड़े हो गए। वहाँ राजा व प्रजा का कोई भेद-भाव नहीं था। सभी भक्त एक समान थे। पंक्ति तोड़कर या प्रभाव का प्रयोग कर कोई भी स्वामी जी नहीं मिल सकता था। जैसे ही रात के नौ बजे स्वामी जी कुटिया से बाहर निकले, भीड़ की उत्सुकता बढ़ी। सभी ने हाथ उठाकर स्वामी जी का अभिवादन किया। गेरूआ वस्त्र पहने, गले में माला, एक हाथ में कमंडल लिए चांदनी रात में स्वामी जी ने भी हाथ उठाकर सभी का अभिवादन स्वीकार किया।

भक्त एक-एक करके स्वामी जी के पास आते, चरण छूकर स्वामी जी का अभिवादन करके आशीर्वाद प्राप्त करते। स्वामी जी दोनों हाथ भक्त के सिर पर रखकर आशीर्वाद देते, फिर गले लगाकर कान में धीरे से कुछ कहते। भक्त गदगद हो जाता कि स्वामी जी ने अपना नाम दे दिया। बाहर निकलने पर स्वामी जी का चित्र लगा एक ताबीज भक्त को दिया जाता था। यह एक निःशुल्क सेवा थी। स्वामी जी के दर्शन का एक दूसरा पहलू यह भी था कि सभी भक्तों को यह सौभाग्य नहीं मिल पाता था, क्योंकि स्वामी जी केवल दो घंटे तक ही दर्शन देते थे। इसलिए लोगों को निराश होकर वापस जाना पड़ता था। कुछ तो कई महीनों से आकर भी निराश लौट जाते थे। पुनः इस उम्मीद से आते थे कि स्वामी जी का आशीर्वाद व नाम इस बार जरूर मिलेगा। ऐसा ही हाल महाराज के साथ हुआ। शाम को महाराज व महारानी पंक्ति में खड़े हो गए थे और कई घंटे यानी रात्रि को दस बजे तक इंतजार करने के बाद भी स्वामी जी से मिलने का मौका नहीं मिला। अंत में निराश होकर वापस आना पड़ा।

अन्य भक्तों की तरह, महाराज ने भी हार नहीं मानी। हर माह पूर्णिमा को सुबह ही जाकर पंक्ति में लग जाते, ताकि स्वामी जी से भेंट हो सके। कई माह की कोशिश के बाद महाराज के भाग्य का सितारा चमका और समय खत्म होने से कुछ ही क्षण पूर्व महाराज की बारी आ गई। महाराज व महारानी ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

नतमस्तक होकर श्रद्धा के साथ स्वामी के चरण स्पर्श किए। जल ग्रहण किया।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राज्य की खुशहाली के लिए स्वामी जी से आशीर्वाद मांगा। स्वामी जी ने महाराज को स्वयं ताबीज भेंट किया, कान में कुछ बोलकर गुरुमंत्र दिया। महाराज गदगद थे। अपने गले से उतारकर हीरे की माला स्वामी जी को भेंट करनी चाही, लेकिन भक्तों ने इशारा कर दिया कि स्वामी जी कुछ भी ग्रहण नहीं करते। यदि उन्हें कुछ देने की जिद की तो क्रोध में शाप भी दे सकते हैं। महाराज ने स्वामी जी से राजभवन आने की प्रार्थना की। कंई बार प्रार्थना सुनने के बाद स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया और पंद्रह दिन के बाद प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में चलने का आश्वासन दे दिया।

राजभवन में तैयारियां शुरू हो गईं। चारों तरफ सफाई व सजावट का काम शुरू हो गया। कोई तामसिक तस्वीर या वस्तु पर स्वामी जी की निगाह न पड़े, इसलिए पूरे भवन को फिर से संवारने का काम शुरू कर दिया गया। जगह-जगह फूलों के गुलदस्ते रखे गए। दीवारों पर सभी पर्दे सफेद रंग के लगवाए गए। पूरे कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा तैयार की गई थी। कहीं कोई चूक न हो जाए, इसलिए महाराज स्वयं पूरे कार्यक्रम की निगरानी कर रहे थे। स्वामी जी के आने की सूचना से पूरे राजभवन में उत्साह का माहौल था। स्वामी जी किसी का भी निमंत्रण स्वीकार नहीं करते थे। यह पहला अवसर था, कि स्वामी जी ने निमंत्रण स्वीकार किया था। स्वामी जी के चरण को धोने के लिए ताम्रपात्र में जल रखा गया था, ताकि स्वच्छ जल ज्यादा से ज्यादा लोगों में बांटा जा सके। पंद्रह दिन का समय बहुत कम था। इसलिए दिन-रात महल को सजाया-संवारा जा रहा था। राजा को एक-एक दिन इंतजार करना भारी पड़ रहा था। इच्छा थी कि किसी भी तरह वह शुभ घड़ी शीघ्र आ जाए और स्वामी जी के चरण राजभवन में पड़ें और राजा धन्य हो जाएं। यही हाल महारानी का भी था। वह भी रात-दिन प्रार्थना करती थी कि किसी भी तरह यह शुभ मुहूर्त आ जाए। महारानी स्वामी जी के आगमन की प्रतीक्षा में बेचैन थीं। राजभवन में आगमन तक के रास्ते को पूरी तरह ठीक करवाया गया था। जहाँ गड्ढे थे, वहाँ मिट्टी डलवाई गई और सफाई के लिए मजदूर लगाए गए थे। दो दिन पहले से ही सड़क के आस-पास आम आदमी को उधर आने की मनाही थी, ताकि गंदगी न फैले। महाराज सभी तैयारियों से संतुष्ट व प्रसन्न थे।

अंततः वह शुभ घड़ी आ ही पहुँची। महाराज व महारानी बग्घी लेकर स्वामी जी को लेने पहुँच गए। मगर ऐसी तैयारियाँ देखकर स्वामी जी को क्रोध आ गया और उन्होंने महाराज को सादगी से रहने व साधु-संन्यासी को किसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दिखावे से बचने की शिक्षा दी। राजा ने इसके लिए हाथ जोड़कर माफी मांगी। मुश्किल से स्वामी जी चलने को तैयार हुए, लेकिन उन्होंने कहा कि वे पैदल ही चलेंगे। नंगे पैर कच्ची सड़क पर चलेंगे। हाथ में कमंडल लेकर स्वामी जी कच्ची सड़क पर नंगे पैर चल दिए। स्वामी जी के चारों तरफ भीड़ थी। स्वामी जी कई जगह तो गंदी सड़क पर भी चले और भक्तों को कहा कि हमें कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। हमें भूमि माता से जुड़कर रहना चाहिए। राजा, रानी भी पैदल ही संन्यासी के पीछे चलने लगे। उन्होंने भी नंगे पैर चलने का निर्णय लिया था। राजा ने गले में संन्यासी का दिया ताबीज पहन रखा था।

महल पहुँचकर स्वामीजी का जोरदार स्वागत हुआ। महाराज ने उन्हें सिंहासन पर बिठाया। चरण धोए। चरणामृत को राजभवन में बांटा गया। सभी ने चरणामृत श्रद्धा से ग्रहण किया। स्वामी ने सभी को प्रसन्नता से आशीर्वाद दिया। महाराज की दीर्घायु की कामना की, राजकाज से संबंधित हिदायतें दीं। राजकुमारी को आशीर्वाद दिया कि वह शीघ्र ही ठीक हो जाएंगी तथा योग्य वर मिल जाएगा। कुछ समय रुकने के बाद स्वामी जी ने विदा ली। महाराज द्वारा दिए गए सभी उपहार वहीं छोड़ दिए तथा पाँच वर्ष बाद आने का वादा भी किया।

स्वामी जी के आने के बाद महाराज ने महसूस किया कि राजकाज में सुधार हो रहा है। स्वास्थ्य भी ठीक है। उन्हें स्वामी जी की कई दिन तक याद आती रही, लेकिन पुनः बुलाने की हिम्मत नहीं हुई।

इस दौरान महाराज को पूर्व कर्मचारी दरबान की बहुत याद आती रही, लेकिन दरबान का कहीं अता-पता नहीं था। उसे दो वर्ष पूरे हो चुके थे। लगभग एक महीने बाद अचानक दरबान ने महल में प्रवेश किया। दो वर्ष बाद दरबान को देखकर महाराज को प्रसन्नता हुई। हालचाल पूछने के बाद महाराज ने फिर सवाल दोहराया कि दरबान ने उस समय मंदिर में भीड़ को देखकर योगी का नाटक क्यों कहा?

दरबान मुस्कुराया और दृढ़ता से हाथ जोड़कर कहा, "महाराज आज भी मैं अपने बयान पर कायम हूं। योगी का नाटक भी होता है।"

"कैसे कह सकते हो? सिद्ध करो नहीं तो..."

महाराज को पुनः हल्का क्रोध आ गया। संयत भाव से दरबान ने कहा, "महाराज अभी तो योगी का नाटक खत्म हुआ है, आपको नहीं मालूम?"

"कैसे?" महाराज ने पूछा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज, अभी कुछ समय पहले जो साधू आपके दरबार में आया था और आपने जिसका पैर धोकर चरणामृत लिया था, वो मैं ही तो था–" दरबान ने कहा।

"क्या मतलब?" राजा चौंके!

"महाराज! विश्वास न हो तो अपना ताबीज उतारकर उसमें मेरा चित्र देख लो, आपको विश्वास हो जाएगा। साथ ही यह भी समझ में आ जाएगा कि योगी का नाटक भी होता है।"

महाराज पहले तो हतप्रभ रह गए, फिर शर्म से लाल हो गए और अंत में जोरदार ठहाका लगाते हुए दरबान को गले लगा लिया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ

गाँव के पश्चिम की ओर से शहर जाने वाली सड़क पर लगभग 500 मीटर की दूरी पर एक खंडहर है। इस खंडहर में हरदम घनघोर अंधेरा रहता है। लेकिन साल में एक दिन दिवाली की रात में जैसे ही गाँव वाले अपने घरों में दीये जलाते हैं, तो उस दीपक के उजाले से समूचा खंडहर जगमगा उठता है। मकान के कौने में पीपल का एक पेड़ उग आया है जो अब काफी बड़ा हो गया है। मकान की छतों में जगह-जगह चमगादड़ों ने अपना घर बना लिया है। अंधेरा होते-होते खंडहर बहुत डरावना प्रतीत होता है। चूहे और दीमक इसके स्थाई निवासी हो गए हैं जो धीरे-धीरे इस खाली पड़े घर को खत्म करने पर उतारू हैं।

समय के साथ-साथ इस खंडहरनुमा घर की दीवारें छीजती जा रही हैं। इसमें छिपी है एक दास्तान, इस घर का इतिहास! घर के बाहर के आले में दीया रखते हुए कमल गुनगुनाया—"इस घर में आग लगा दी घर के चिराग ने।" कमल थोड़ा और आगे बढ़ जाता है। सिर झुकाए।

धीरे-धीरे... एक कदम... दूसरा कदम... तीसरा... और कुछ सोचता हुआ। मौन! हवेली के बाहर निकल आता है। वह सोचता है कि एक दिन बिरजू जरूर लौटकर आएगा, मगर जाने कब...?

बिरजू अपनी माँ का अकेला बेटा था। उसकी एक बहिन भी थी। जो उससे करीब आठ साल बड़ी थी। उसका नाम मिथिलेश था। उसकी शादी लगभग 100 किमी. दूर पुणे के पास हुई थी। उस समय यातायात का कोई खास साधन तो था नहीं इसलिए उसका मायके आना-जाना न के बराबर था। मिथिलेश अनपढ़ थी। परंतु बिरजू ने मेहनत करके उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

बिरजू के पिता का स्वर्गवास उसके बचपन में ही हो गया था। तब से उसके परिवार की देखभाल चाचा करते थे। मिथिलेश की शादी भी उन्होंने ही कराई थी। बहन की शादी के समय से ही चाचा से अनबन हो गई। माँ चाहती थी कि लड़की की शादी आस-पास ही हो, ताकि सुख-दुख में एक-दूसरे का सहारा बन सकें। परंतु चाचा ने उनकी बातें नहीं मानी। माँ तब से चाचा से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

नाराज रहने लगी। चाचा ने भी माँ को मनाने का कोई प्रयास नहीं किया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरजू, उसका प्यार का नाम था। उसका असली नाम तो बृजकिशोर था, जो उसके बाबा ने रखा था।

कमल और बिरजू बचपन के मित्र थे। इसकी गाढ़ी दोस्ती तीसरी क्लास से है। जब दोनों गाँव के ही प्राइमरी पाठशाला में पढ़ते थे। बिरजू पढ़ने में बहुत होशियार था। ठिगना कद, गेंहूआं रंग और शांत स्वभाव का बिरजू मितभाषी था।

बिरजू की माँ उसकी पढ़ाई-लिखाई में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती थी। उसने बिरजू की पढ़ाई में पैसे की कोई कमी नहीं आने दी। बारहवीं कक्षा पास करने के बाद बिरजू शहर चला गया। परंतु जब भी बिरजू छुट्टियों में गाँव आता तो दोनों दोस्त गाँव की पुरानी पुलिया पर बैठकर घंटों बातें किया करते थे। बिरजू अपने कॉलेज की बातें बताता कि किस तरह से उसका रैगिंग हुआ? अध्यापक और सहपाठी कैसे हैं? और भी बहुत सारी बातें। बिरजू की बातें कमल ध्यान से सुनता और रोमांचित हो उठता।

बिरजू के शहर चले जाने पर कमल उसे बहुत याद करता था और अतीत की यादों में खो जाता था।

बिरजू की पढ़ाई का सारा खर्च उसकी माँ ने उठाया था। माँ बढ़ती उम्र के कारण बूढ़ी हो गई थी। उसकी कमर कमान की तरह झुक गई थी। स्वेटर बुनकर और खरबूजे के बीज छीलकर वह घर का खर्चा चलाती थी। कभी बिरजू तो कभी कमल बाजार जाकर सब्जीवाले से शाम को खरबूजे का बीज मटके में लाते और माँ उसे धोकर धूप में सुखाकर छीलती और बाद में बिरजू इन्हें बेच आता था। आंखें जवाब दे रही थी पर उसकी कोशिश यही रहती की देर रात तक काम कर सके।

बिरजू अलग कमरे में पढ़ता रहता और दूसरे कमरे में उसकी माँ काम करती रहती थी। बीच-बीच में उठकर माँ बिरजू से चाय-पानी भी पूछ लेती थी। कभी-कभी तो वह किताब लिये ही सो जाता तब माँ उसका किताब हटाकर उसे अच्छे से लिटाती और तकिया लगाकर चादर ओढ़ा देती थी।

कमल ने बिरजू को अपनी माँ से ज्यादा बातें करते नहीं देखा था। न ही वह कभी अपनी माँ को किसी बाहरी व्यक्ति से मिलवाता था। कमल को लगा शायद गरीबी इसका कारण हो या वह एकाकी जीवन ज्यादा पसंद करता हो।

एक बार बिरजू बिना खाना खाए ही घर से बाहर चला गया तो उसकी माँ खाना लेकर स्कूल गई। इस पर बिरजू को बहुत गुस्सा आया। उसने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिगड़ते हुए कहा कि मना करने के बाद भी मेरे स्कूल क्यों आई और उसने विरोध स्वरूप कई दिनों तक खाना भी नहीं खाया। यह तब की बात है जब कमल और बिरजू आठवीं में पढ़ रहे थे।

इस घटना के बाद माँ कभी उसके स्कूल नहीं गई और न ही उसके किसी मित्र के सामने आई। कोई उससे कभी मिलने आता भी तो वह घर के अंदर छिपकर रोती थी।

बारहवीं के बाद स्कूल से निकलकर कॉलेज जाना होता है। यहाँ विभिन्न विद्यार्थियों से संपर्क होता है जो अलग-अलग संस्कृति और स्थानों से कॉलेज में पढ़ने आते हैं। यह एक सुनहरा समय होता है जब हम उम्र की दहलीज पर कदम रख रहे होते हैं। कहने का मतलब यह है कि यह उम्र का वह पड़ाव है जहाँ से भविष्य का निर्धारण शुरू हुआ करता है। बचपन साथ छोड़ जाता है मगर बचपन की सुनहरी यादें साथ रह जाती हैं। कुछ अच्छे रास्तों पर निकल जाते हैं, तो कुछ बुराई की दलदल में फंस जाते हैं।

बिरजू की मंजिल तो तय थी। बारहवीं के बाद उसकी शहर जाने की इच्छा थी। वो दो महीने की कोचिंग के लिए शहर गया। फिर उसका दाखिला इंजीनियरिंग कॉलेज में हो गया। पढ़ाई में पैसे की कमी आने पर माँ ने एक कमरा किराए पर दे दिया। बिरजू ने दिन-रात मेहनत की। उसकी सिर्फ एक ही इच्छा थी कि वह विदेश जाए।

भगवान ने या यों कहें माँ की दुआओं ने असर दिखाया और उसकी यह इच्छा भी पूरी हो गई। इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करने के बाद उसने अपने प्रोफेसर की सलाह पर नेहरू प्लेस में एक प्लेसमेंट एजेंसी में इंटरव्यू दिया। यहां विदेशों में नौकरियों के लिए इंटरव्यू लिये जाते हैं। एक कंस्ट्रक्शन कंपनी की टीम इंडोनेशिया से इंटरव्यू के लिए आई थी।

बिरजू ने इंटरव्यू में पूछे गए सभी सवालों का सही जवाब दिया और उसका चुनाव कर लिया गया। कंपनी ने उसके पासपोर्ट, वीजा वगैरह का इंतजाम किया। उसे नौकरी मिल गई।

वह सुबह जल्दी जाता और रात को देर तक काम करता था। उसे जो भी काम दिया जाता वह पूरी मेहनत और लगन से पूरा करता था। विनम्रता बिरजू का स्वभाव था। बिरजू की नौकरी इंडोनेशिया में पक्की हो गई और छह महीने के बाद उसे कंपनी का घर भी मिल गया। बिरजू ने उसी कंपनी में नौकरी करने वाली एक लड़की से विवाह कर लिया। अपनी शादी की खबर भी उसने अपनी माँ के पास नहीं भेजी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरजू की माँ ने अपने इकलौते बेटे की शादी के बहुत सपने देखे थे। उसने सोचा था कि बिरजू विदेश से आएगा तो वो स्वयं कोई अच्छी सी लड़की देखकर उसकी शादी करा देगी। परंतु उसके सारे सपने बिरजू ने तोड़ दिए। उसने एक मंदिर में दो-तीन लोगों के सामने सात फेरे ले लिए।

लड़की सुशील और समझदार थी। उसका नाम वर्षा था। शादी के एक वर्ष बाद बिरजू एक बेटे का पिता बन गया। बिरजू की पत्नी ने ज़िद की कि इसकी खबर माँ को भिजवा दी जाए। बिरजू ने पत्र द्वारा इसकी सूचना कमल को दे दी और कहा कि यह शुभ समाचार वह माँ को भी दे आए।

कमल उसी समय यह खुशखबरी माँ को देने पहुंचा। रास्ते में उसने मिठाई भी खरीद ली। अचानक कमल को कई माह बाद प्रसन्न मुद्रा में आते देख माँ ने खुश होकर पूछा, क्या बात है बेटा! तू बड़ा खुश लग रहा है! और ये मिठाई का डिब्बा? जरूर कोई खुशख़बरी है। क्या मैं दादी बन गई? माँ की ये बातें सुनकर कमल मुस्कुराया और हां में सिर हिलाकर बोला, "हां आप दादी बन गई हो। आपका भी जवाब नहीं, तीर ठीक निशाने पर लगा है।"

इतना सुनते ही माँ की खुशी का ठिकाना ना रहा। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। एक दीर्घकालीन मनोकामना जिसकी वह हर पल भगवान से प्रार्थना करती थी, वह आज पूरी हो गई।

मां ने कमल को गले लगा लिया, उसे बिठाया और पानी दिया। फिर संदूक से साड़ी निकालकर अपने चिथड़े कपड़े बदले और मिठाई का डिब्बा लेकर पूरे मुहल्ले में यह समाचार सबको सुनाने व रात में गीत गाने का न्यौता देने निकल पड़ी। कई दिनों तक हर रोज रात को गांव की औरतें काम-काज निबटाकर उसके घर इकट्ठा होती और देर रात तक नाच-गाना होता। बिरजू की माँ गुड़ बांटकर सबको विदा करती थी। वह रात-दिन अपने पोते के बारे में सोचती रहती थी कि वो कैसा होगा? राह चलते छोटे-छोटे बच्चों को देखती तो उन्हीं में अपने पोते की कल्पना करती थी।

एक दिन घूमते-घूमते अस्पताल पहुँच गई। वहाँ छोटे बच्चों को बहुत देर तक देखती रही कि उसका पोता भी इन्हीं जैसा होगा। अस्पताल के बाहर ही उसे कमल मिल गया। उसने उससे कहा कि बेटा एक बार मुझे मेरे पोते से मिला दे। मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूं।

माँ के निरंतर जिद के कारण कमल तैयार हो गया। अब वह दिन-रात अपने पोते का ही सपना देखती। सोचती कि मैं विदेश जाकर उसकी तेल मालिश करूंगी, उसकी पूरी देखभाल करूंगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरजू की माँ के पास पैसे तो ज्यादा थे नहीं पर पुराने जमाने के कुछ जेवर बचे हुए थे। कुछ जेवर तो बिरजू की पढ़ाई के लिए ही उसने बेच दिए थे। हाथ की दो चूड़ियाँ और गले का एक सोने का कंठा बचा हुआ था। उसे बेचकर पैसे इकट्ठे किए। किराएदार से भी गुजारिश किया तो उसने छह महीने का अग्रिम किराया दे दिया।

विदेश जाने के लिए वीजा और पासपोर्ट की आवश्यकता थी। उसने गाँव के मास्टर जी से विनती की तो उन्होंने स्थानीय विधायक की मदद से उन दोनों का वीजा और पासपोर्ट बनवा दिया जिसके लिए माँ को दो बार दिल्ली भी जाना पड़ा। विदेश जाने की सारी तैयारियां पूरी हो गई थीं। उसने वर्षा के लिए देशी घी के लड्डू, मेवा और घी आदि लिये और पोते के लिए छोटे-छोटे कपड़े, स्वेटर, मोजे और टोपी बनाई। स्वेटर बड़ा बनाया ताकि वह कम से कम दो साल तक पहन सके। गाँव की औरतों ने भी उपहार स्वरूप कपड़े, स्वेटर और खिलौने दिए।

कमल ने इतना सामान देखकर कहा, "ये सब कैसे जाएगा, हम खाली हाथ ही इतनी दूर पहुँच जाएं, यही बहुत है।" लेकिन माँ नहीं मानी। वह सोचती कि क्या ले चलूं क्या न ले चलूं। आखिरकार उसने सारा सामान बांध लिया।

माँ बहू से पहली बार मिलेगी। ऐसा ध्यान करते ही वह गर्व से रोमांचित हो उठी और सोचा बहू को मुंह-दिखाई की रस्म में कुछ नेग देना चाहिए। परंतु अब उसके पास कुछ भी नहीं बचा था। तभी याद आया कि उसके पास पुराने जमाने की एक बनारसी साड़ी पड़ी है। वह तुरंत उठी अपना बक्सा खोला और साड़ी निकाली। ये साड़ी उसे उसकी सास ने दी थी। वर्षों बीत जाने के बाद भी साड़ी बिल्कुल नई लग रही थी। उसने कमल से छिपाकर साड़ी अपने थैले में डाल लिया। वो सोचती, मिलने पर बहू उसे पैर छुआई देगी, साड़ी देगी परंतु मैं कुछ भी नहीं लूंगी।

अब उसकी तैयारी पूरी हो गई थी।

मन में उत्साह, दादी बनने की खुशी, बहू के लिए स्नेह, पोते के लिए दुलार... कैसी अजीब हालत थी उसकी? लगता था खुशी के मारे पागल हो जाएगी। अक्सर सोचती, भगवान, मेरे पास पंख होते तो मैं अभी अपने पोते के पास चली जाती। माँ की आंखों में खुशी की चमक देखने लायक थी।

आखिरकार वो पल भी आ गया जिसका उसे बेसब्री से इंतजार था। कमल माँ को लेकर हवाई अड्डे पहुँचा। माँ ने पहली बार ऐसी जगह देखी थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसे बड़ी हैरानी हो रही थी। उसने कमल से पूछा—"जहाज में बैठकर हम कैसे उड़ेंगे। कहीं हम गिर न जाएं।" परंतु पोते को देखने की खुशी में वो सब कुछ सहने को तैयार थी। उसने कमल के हाथ को कसकर पकड़ रखा था। उसे डर था कि कहीं वो इस भीड़ में खो ना जाए।

एयरपोर्ट पर लड़कियों को छोटे-छोटे कपड़े पहने देख माँ शर्म से अपनी आंखें मूंद लेती थी। कहती, "कितनी बेशर्म लड़कियां हैं, कैसे कपड़े पहन रखे हैं। मेरी बहू ऐसी नहीं होगी। वो तो सलीके से अच्छे कपड़े पहनती होगी। सर पर पल्लू रखती होगी।"

दोनों प्लेन में बैठे और विदेश रवाना हुए।

इंडोनेशिया पहुँचने के बाद कमल सोच रहा था कि किस तरह बिरजू के घर पहुँचा जाए। उसकी यह मुश्किल भी भगवान ने हल कर दी। उसने जो टैक्सी किराए पर ली उसका ड्राइवर एक भारतीय सरदार था। उसने बिरजू के घर तक पहुँचने में उसकी बहुत मदद की।

माँ और कमल बिरजू के घर पहुँचे। उस समय बिरजू वहाँ अकेला था। माँ की निगाहें पोते और बहू को ढूँढ रही थी।

बिरजू का घर बहुत अच्छा था। नौकर ने पानी लाकर दिया। परंतु बिरजू शांत बैठा रहा फिर यकायक बोला, "तू यहाँ क्या करने आई है? अभी यहाँ से चली जा। मैं तेरी बद्सूरत शक्ल नहीं देखना चाहता इसलिए तो सात समुंदर पार चला आया हूँ। मैं नहीं चाहता कि वर्षा तुझे देखे और मैं शर्म महसूस करूं।"

माँ पत्थर बनी उसकी बातें सुनती रही। कमल ने बिरजू को समझाने की कोशिश की तो उसने कहा, 'ये हमारा पारिवारिक मामला है तुम बीच में मत बोलो।"

उस समय वर्षा बच्चे को लेकर डॉक्टर के पास गई थी।

काफी देर चुप रहने के बाद माँ ने कहा, "बेटा, मैं इतनी दूर बहुत अरमान लेकर आई हूँ। तुम एक बार मुझे बहू और पोते को देख लेने दो। उसके बाद मैं वादा करती हूँ कि अपनी शक्ल तुमको दुबारा कभी नहीं दिखाऊँगी।"

इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। परंतु बिरजू का पत्थर दिल नहीं पिघला और वो चिल्लाते हुए बोला, "कमल तू इसे यहाँ से ले ज़ाता है कि...।"

इतना कहकर उसने अपनी मुट्ठियाँ भींच ली, उसकी सांसें तेज गति से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल रही थी।

कमल ने माँ का हाथ पकड़ा और बाहर आ गया। माँ हाथ छुड़ाकर फिर बिरजू के पास गई और बोली, "ये सब चीजें मैं बहू और पोते के लिए लाई थी। इसे उन्हें दे देना।" सामान से भरा थैला फर्श पर ही रखकर वह रोते हुए बाहर निकल गई।

कमल ने टैक्सी ली और माँ के साथ वापस हवाई अड्डा आ गया। बड़ी मुश्किल से दो दिन बाद का टिकट मिला। परंतु भगवान ने उनकी मदद करने के लिए उसी सरदार ड्राइवर से फिर मिला दिया। वो उन दोनों को अपने घर ले गया और दो दिन बाद भारत के लिए रवाना किया।

माँ इतनी जल्दी वापस आ गई, ये सारे मुहल्ले के लिए आश्चर्य की बात थी। सारी औरतें आतीं और पूछतीं कि इतनी जल्दी क्यूं आ गई? बहू और पोता कैसा है? माँ कहती मेरी बहू बहुत ही सुंदर और सुशील है। उसने मेरी बहुत सेवा की। पोता भी बहुत प्यारा है। मेरा तो आने का मन ही नहीं कर रहा था, पर यहाँ भी तो किसी को रहना चाहिए। झूठ बोलते हुए अनायास ही उसकी आँखों में आँसू आ जाते जिसे वो बड़ी सफाई से छिपा लेती थी। परंतु जब भी अकेली होती तो बहुत रोती थी। रो-रोकर उसकी आँखें सूज गई थीं। उसने अन्न-जल त्याग दिया और धीरे-धीरे बहुत कमजोर हो गई। बीमार होकर उसने खाट पकड़ ली। कुछ ही दिनों में माँ ने संसार छोड़ दिया। कहते हैं कि मरने के बाद भी माँ की आँखें खुली हुई ही थीं। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखांत

बंदर की घुड़की के सामने अच्छों-अच्छों का वश नहीं चलता। आप नहीं डरते हैं तो क्या हुआ! मैं जरूर डरता हूँ। बचपन में, एक बार शाम को छत पर घूमते-घूमते मैंने देखा कि बहुत से बंदर पंचायत कर रहे हैं। बस फिर क्या था, मैं भी पहुँच गया। बंदरों के नेता को मेरा वहाँ पहुँचना रास नहीं आया। पहले उसने घुड़का, जिस पर मैंने जोर से ठहाका लगाया और बोला—"क्या बंदर घुड़की है।" बंदर समझ गया कि यह ऐसे नहीं मानने वाला, वह और जोर से घुड़का। मैंने और जोर से ठहाका लगाया। फिर वहीं पहुँच गया। बस, फिर क्या था, बंदर ने मेरी उंगली मुंह में दबा ली। मैं जोर से चीखा। ओह! क्या बात है। अरे ये तो कोरी घुड़की नहीं, कहीं इसके भीतर असलियत भी छिपी है। बंदर के काटे का निशान आज भी मेरी उंगली पर पर मौजूद है।

असल में, बंदरों की बातें ही निराली हैं नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय सचिवालय में वे नियमित रूप से फाइलों को पढ़ते हैं, यानी सब कुछ उलट-पुलट कर डालते हैं। अफसर परेशान रहते हैं। प्रार्थना करते हैं कि प्यारे हनुमान जी, हमें माफ कर दो, बख्श दो! हर मंगल को हम तुम्हारी पूजा करेंगे, केले बांटेंगे। पढ़ाई-लिखाई का काम हम पर छोड़ दो। हम तुम्हारे नाम की हनुमान चालीसा का पाठ नियमित करेंगे।

खैर... या तो बंदर की सुनो, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं! तुम खैरियत से नहीं रह सकते। बंदर से पंगा लोगे तो खैर के लोग तुम्हारी खैरियत जानेंगे। खैर... खैर भी कोई साधारण नहीं। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले की मशहूर तहसील का नाम है। खैर और किसी बात के लिए प्रसिद्ध नहीं, केवल बंदरों के लिए प्रसिद्ध है।

बंदरों के लिए प्रसिद्ध उसी खैर के एक घर की छत पर बंदरों की भीड़ देखकर सत्यप्रकाश जी के होश उड़ गए। वैसे तो ये कोई नई बात नहीं थी। पर जिस तरह से बंदर इकट्ठा होकर छत पर आए थे और एक-एक करके लोहे के बने जाल से नीचे झांक रहे थे, उससे डर लग रहा था। सत्यप्रकाश का दो महीने का बच्चा पलंग पर सो रहा था। उसे सुबह नहलाने से पहले तेल मालिश करके बिना कपड़ो के हल्की चुनरी उढ़ा कर सुला दिया था। छत की जाली से बन्दरों की भीड़ को इस तरह झांकते हुए देख, उनकी पत्नी सविता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजी से आकर बच्चे को घर के अंदर ले गई। बंदर शांति से ऊपर बैठे रहे। धीरे-धीरे सारे बंदर वापस चले गए, लेकिन दो-तीन बंदर वहीं रह गए। अब वे रात-दिन छत पर ही दिखाई पड़ने लगे। सभी बंदरों की शक्ल एक जैसी लगती है। बहुत ध्यान से देखने पर ही पहचान हो पाती है। इसलिए यह कहना मुश्किल है कि वही 2-3 बंदर हर समय छत पर रहते थे या आपस में बदलते रहते थे।

अचानक छत पर बंदरों का यह जमावड़ा लग जाना लाला सत्यप्रकाश की समझ में नहीं आया। एक बांस का बड़ा डंडा उठाया, "हू-हू" करते हुए, डंडे को खट-खट जोर से बजाते हुए छत पर चढ़ गया। डंडा जोर से जमीन पर पटका। हवा में लहराया। भागने के बजाय बंदर हुड़क कर उनके पास आने लगे। लाला को उलटे पांव वापस भागना पड़ा। छत पर जाने-आने वाले सभी रास्ते बंद कर दिए गए, सीड़ियों पर ताला लगा दिया गया, ताकि बंदर घर के अंदर ना आने पाएं। परंतु ऐसा सम्भव नहीं हुआ। यह तालाबंदी ज्यादा दिन नहीं चल पायी। शरारती बंदर हिम्मत से डटे रहे और समय-समय पर बारी-बारी से दरवाजा धकियाते रहे जोर से ताला तब तक हिलाते रहे जब तक ताला टूट न गया।

कुछ दिन बीतने के बाद तो और आठ दस बंदरों ने आकर छत पर अड्डा जमा लिया। सविता ने सोचा, बंदर तो हनुमान के वंशज हैं। यह हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। हनुमान जी का हमारे घर में निवास है। बच्चे को गोदी में उछालकर बोली, "मेरे हनुमान जी, मेरा बंदर! बंदर का बच्चा! मेरा बंदर ऊपर देख! बंदर...!! देख...!!" इस तरह बच्चे को प्यार से उछाल रही थी। ऊपर 3-4 बंदरों का झुंड लोहे की जाली से मुंह निकाल कर नीचे बड़े ध्यान से देख रहा था बंदर यह सब बारी बदल-बदल कर कर रहे थे। कुछ देर में लाला सत्यप्रकाश भी आ गए। मंदिर होकर आए थे। हनुमान के भक्त थे। आज बंदरों के लिए केले भी लाए थे। बंदरों की भीड़ देखकर छत पर जाने की हिम्मत न हुई। घर की खिड़की से हाथ बाहर निकालकर छत की तरफ डाल दिए, ताकि वहाँ मौजूद बंदर केले खा सकें। पर, इसका उलटा हुआ। बंदरों ने सारे केले वापस उनके घर में फेंक दिए।

बंदरों का यह प्रेम देखकर सत्यप्रकाश जी को आश्चर्य हुआ। शायद हनुमान जी खुश हो गए हैं और प्रसाद स्वरूप केले वापस भिजवाए हैं। सत्यप्रकाश ऊपर जाने वाली सीढ़ियां खोलकर छत पर पहुँचे। एक हाथ में गेहूं के दानों से भरा कटोरा एवं कुछ केले लेकर पहुँचे। बंदरों के निकट तक गए और वहाँ रखकर वापस आ गए। बंदरों ने उसे कुछ नहीं कहा, शांत होकर एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्थान पर बैठे रहे। सत्यप्रकाश का डर दूर हो गया। हौसला बढ़ा। फिर छत पर ऊपर गए और पानी की भरी बाल्टी रखकर जैसे ही मुड़े एक बंदर ने "घू..घू" की आवाज निकाली। सत्यप्रकाश डरे और मुड़कर देखा तो सभी बंदर शांत। सिर्फ एक बंदर कुछ अशांत है, पर घुड़क नहीं रहा है, ...वह कुछ कह रहा है। दबे पांव नीचे घर वापस आ गए। सविता ने हनुमान जी को धन्यवाद दिया। यह उनकी ही कृपा है। अब बंदरों के प्रति भय कम हो रहा था। ऊपर जाने वाला रास्ता खोल दिया गया था। बंदर शांति के साथ छत पर बैठे रहते। कितनी ही धूप क्यों न हो, आपस में जगह अदलते-बदलते रहते। सविता ने देखा कि कुछ-कुछ देर बाद कुछ बंदर इकट्ठा होकर आते थे, फिर वहाँ बैठे बंदर शहर में चले जाते थे। यह एंक अजीब व्यवस्था थी। जोकि पति-पत्नी की समझ से परे थी।

एक दिन सविता नें ऐसा दृश्य देखा कि उसके तो होश उड़ गए। बच्चे को दालान में अकेले सोता हुआ छोड़कर वह घर संवारने में लग गई थी। सारे कपड़े फैले हुए थे, इसलिए देर हो गई। वापस बाहर आकर देखा, तो एक बंदर ने बच्चे को गोद में उठाया हुआ है और वहाँ रसोई में रखी दूध की बोतल अपने हाथ से उसके मुँह में लगा रखी है। बच्चा शांत है और आराम से दूध पी रहा है। दो बंदर कुछ दूरी पर शांत बैठे हैं। यह देख सविता जोर से चीखी। बच्चे को छोड़कर बंदर ऊपर छत की ओर भाग खड़े हुए।

इस घटना ने सविता को सकते में डाल दिया। आखिर बंदर चाहते क्या हैं? ऐसा क्यों किया? इसके पीछे कोई ख़ास मकसद है या वैसे ही? वह तरह-तरह के हजारों सवालों से जूझ रही थी। परेशान भी, हैरान भी। बच्चे को ध्यान से देखा। बिल्कुल ठीक-ठाक था। सविता डरी हुई थी। रात्रि में सत्यप्रकाश के घर आते ही उसने यह घटना विस्तार से बताई। पूरी घटना को ध्यान से सुनने के बाद भी सत्यप्रकाश ने अनसुना कर दिया। एक-दो दिन बाद सविता ने भी इस घटना को भुलाने की कोशिश की। ज्यादा ध्यान इसलिए नहीं दिया, क्योंकि बच्चा ठीक-ठाक था। इसे महज संयोग मानना ही बेहतर समझा।

बंदर छत पर शांत रहते थे। छत पर बंदरों का बैठना कोई नई बात नहीं थी। पर बंदर जाति का शांत बैठना उनकी प्रकृति के विरुद्ध व अविश्वसनीय था। आखिर बंदर तो बंदर ही हैं। बंदर शांत बैठा हो, ऐसा कैसे हो सकता था। बिना उछल-कूद के बंदर कैसा? यह शहर तो बंदरों के लिए मशहूर ही है। जितनी जनता उतने ही बंदर। बंदरों ने सत्यप्रकाश के घर पर पड़ाव डाल दिया। दूसरा यह कि बंदर कुछ नुकसान भी नहीं पहुँचा रहे थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शांत रहते थे। बस, एक-दो बंदर लोहे की छत के सरियों के बीच से हर समय झांकते रहते थे। असल में, यही बात सविता को अखर रही थी। फिर भी, सविता छत पर लोहे के तसले में, सुबह-शाम बंदरों के लिए पानी भर कर रख देती थी। सविता को छत पर पास आते देख बंदर दूर हट जाते, लेकिन सविता को ध्यान से देखते थे।

एक दिन अचानक बंदरों ने सविता को घेर लिया, जैसे कि किसी योजना के तहत ऐसा किया गया हो। कुछ बंदर सीढ़ियों से नीच उतर गए और दरवाजा बंद कर लिया। सविता घर के बाहर रह गई। बंदरों ने बच्चे को जल्दी से उठाया, ध्यान से देखा, प्यार किया, वापस लिटाया और चादर ओढ़ाकर वापस लौट गए।

पूरी घटना को बहुत तेजी से अंजाम दिया गया। 5-6 मिनट में बंदर वापस आ गए। सविता यह देखकर बुरी तरह घबरा गई। समझ नहीं आया कि बंदर ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? क्यों बच्चे को छत से हरदम देखते रहते हैं? कभी-कभी लोहे की जाली के बीच से केले, फल आदि बच्चे के पास फेंकते रहते हैं... और अब यह... बच्चे को इस तरह प्यार करने की घटना! संशय बढ़ता ही जा रहा था।

शहरवासियों के लिए यह एक अद्‌भुत घटना थी। सविता ने यह घटना पड़ोसियों को बताई। कुछ को विश्वास हुआ, कुछ को विश्वास नहीं हुआ। लोगों ने सविता के दिमाग का फितूर समझा। इस घटना के बाद सविता डर गई थी। बच्चे को घर के कमरे में छिपाकर रखना शुरू कर दिया, ताकि बंदरों की परछाईं भी न पड़ पाए। उनसे बच्चा दूर रहेगा, तो शायद बंदर भी वापस चले जाएं। हो सकता है, बंदर बच्चे की वजह से छत पर हों। लेकिन सत्यप्रकाश ने इस बात पर कतई विश्वास नहीं किया और सविता को शांत रहने की सलाह दे डाली।

सविता परेशान रहने लगी थी। छत पर बंदरों की हरकत भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी। सविता को विश्वास हो चला था कि बंदरों के इरादे ठीक नहीं हैं। जरूर कोई बात है। इधर सत्यप्रकाश सविता की बात को नकारते हुए, इसे मानसिक रूग्णता करार दे रहा था। वास्तविकता क्या है, इससे कोई परिचित नहीं था। भय से सविता का स्वास्थ्य गिरने लगा था। पुरोहित को बुलाया। उसने हनुमान की अनुकम्पा बताते हुए तीन दिन तक हनुमान चालीसा का पाठ करने की सलाह दी कि इसके बाद बदंर चले जाएंगे और सब ठीक हो जाएगा। निर्देशानुसार 3 दिन तक हनुमान चालीसा का पाठ पूर्ण श्रद्धा से किया गया। ब्राह्मणों को भोजन कराया गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु इसका भी नतीजा अनुकूल नहीं निकला। बंदर और ज्यादा बढ़ते जा रहे थे। स्वभाव से भी और उग्र होते जा रहे थे। हर आने-जाने वाले को घुड़कने लगे थे। इस तरह बंदरों का आतंक बढ़ता जा रहा था। लेकिन खास बात यह थी कि आस-पास रहने वालों को परेशान नहीं कर रहे थे। सविता ने एक सप्ताह के लिए बच्चे के साथ मायके जाने की सोची ताकि बंदरों से मुक्ति मिल सके। इस बात के लिए उसने सत्यप्रकाश को भी राजी कर लियां। सुबह-सुबह एक बैग में जरूरी सामान रखकर सत्यप्रकाश के साथ घर से निकली। छत से झांक रहे बंदरों ने देख लिया, तो उनमें से एक जोर से चीखा। कुछ ही देर में बंदरों ने रास्ता रोक लिया और घुड़की देनी शुरू कर दी। सत्यप्रकाश आगे नहीं बढ़ पाए, यद्यपि बहुत कोशिश की। लाठियां भी हवा में घुमाईं। पर बंदरों पर इसका असर नहीं हुआ। बंदर हर हालत में घर से बाहर नहीं जाने देना चाह रहे थे। काफी देर तक कशमकश चलती रही। जीत बंदरों की हुई और सत्यप्रकाश को सविता के साथ घर के अंदर वापस लौटना पड़ा।

सत्यप्रकाश को इस घटना के बाद जोरदार झटका लगा। अब विश्वास हुआ कि कुछ बात जरूर है। ...हनुमान बाबा नाराज हैं? या बंदर शरारती हैं?.. आखिर बंदर क्या चाह रहे हैं? तरह-तरह के प्रश्न मन में कौंध रहे थे। पड़ोसी मित्र को सारी बातें विश्वास से बताई गईं। आस-पास के लोगों को इकट्ठा किया गया। पंचायत हुई। खूब बहस हुई। तरह-तरह के सुझाव सामने आए। कोई कहता, बंदर देवता नाराज हैं। परिवार माफी मांगे। घर में, मंदिर में हनुमान की मूर्ति स्थापित कराई जाए। इसी बीच किसी ने अलग-सी सलाह दी कि लंगूर मंगवाकर छत पर बंधवा दें। बंदर अपने आप ही भाग जाएंगे। किसी ने सलाह दी कि पुलिस और वन-विभाग को सूचित कर दिया जाए, ताकि बंदरों का आतंक दूर हो सके। इन सबके विपरीत एक सलाह यह थी कि कुछ दिन और देखें, समय के साथ सब ठीक हो जाएगा आदि। बहुमत का निर्णय था कि उपर्युक्त घटनाएं कोई शुभ संकेत नहीं हैं। इसलिए वन-विभाग और पुलिस को सूचना देकर बंदरों को वहां से भगाया जाए, ताकि भविष्य में होने वाली किसी भी घटना से बचा जा सके।

इस दौरान बंदरों का भी झुंड बढ़ता जा रहा था। कुछ बंदर टकटकी लगाए जासूस की भांति पंचायत की पूरी कार्यवाही देख रहे थे। इतना ही नहीं, कभी पंचों की तरफ, तो कभी बंदर समाज की तरफ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे।

सूचना के दो दिन बाद, वन-विभाग के कर्मचारी पिंजड़ा लेकर वहाँ आ धमके। जाल लगा दिया गया। बंदरों की भीड़ भी जमा थी। चारों ओर सन्नाटा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
छाया था। स्वनामधन्य बंदर-समाज में अजीब-सी शांति थी। गुपचुप राजनिति चल रही थी। वन विभाग के कर्मचारियों ने तीन दिन तक इंतजार किया। बंदर समझदार थे और कोई बंदर जाल में नहीं फंसा। वन-विभाग के कर्मचारी निराश होकर वापस चले गए। दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही बंदरों की संख्या ने सत्यप्रकाश की ही नहीं, आस-पास के लोगों की भी चिंतायें बढ़ा दी।

बंदरों पर बंदूक की गोली से भी हमला नहीं किया जा सकता था। बंदरों को हनुमान का वंशज माना जाता है। बंदरों की पूजा की जाती है। एक अजीब उलझन थी कि अब आगे क्या किया जाए? मजबूर होकर स्थानीय पुलिस को बुलाया गया। बंदरों की भारी संख्या से पुलिस भी हैरान थी। सिपाहियों की भी हिम्मत नहीं हुई। लाठियों की आवाज फटकाकर बंदरों को डराया गया। कई हवाई फायर किए गए। सब नाकाम रहे। किसी के सुझाव पर वहाँ लंगूर लाया गया ताकि बंदरों को यहाँ-वहाँ भगाया जा सके। यह तरकीब कुछ काम आ गई। कुछ बंदर भाग खड़े हुए, लेकिन यह संख्या कुल संख्या की तुलना में ना के बराबर थी। बड़ी संख्या में बंदर वहीं रहे। उलटा हुआ यह कि घुड़क-घुड़क कर बंदरों ने लंगूर पर भी जीत हासिल कर ली। लंगूर भाग खड़ा हुआ।

अगले दिन सुबह बड़ी संख्या में शहर के लोग डंडा लेकर तैयार हुए और बंदरों की घेराबंदी कर दी। बंदर इस स्थिति का सामना करने के लिए पहले से ही मानसिक रूप से पूर्णतया तैयार थे। बिना कोई देरी किये सभी बंदरों ने एक सोची विचारी रणनीति के तहत इधर-उधर उछलकर मोर्चा संभाल लिया। चारों तरफ युद्ध जैसा माहौल था। बंदर भी ईंट का जवाब पत्थर से दे रहे थे। कई बंदर घायल हो गए, परंतु दूसरे पक्ष के लोगों को भी खूब छकाया और उन्हें भी काफी चोटें आईं। बंदरों ने हार नहीं मानी। वहाँ की जनता थकने लगी, जिनको चोटें लगीं, या घायल हुए वे डॉक्टर के पास जा चुके थे। शाम होते होते सभी लोग वहाँ से जा चुके थे। सत्यप्रकाश के घर सन्नाटा छा गया। समूचे वातावरण में अजीब किस्म की मायूसी छायी थी। सविता का रो-रो कर बुरा हाल था। वर्तमान व भविष्य की चिंताएं उसे घेरे हुए थीं। सत्यप्रकाश सांत्वना दे रहा था। साथ ही हनुमान जी से प्रार्थना कर रहा था, "हे हनुमान जी! आज तो भक्त परेशान हैं। मदद करो।"

सुबह-सुबह उठकर चुपचाप सत्यप्रकाश बंदरों के पास चला गया। हिम्मत व दृढ़-संकल्प ने साथ दिया। आगे बढ़ता गया। बंदर छत पर बैठे थे, जैसे कि उसके आने का इंतजार हो।

"मेरे बंदर भाइयों!" वह जोर से चीखा।

"बताइए साब! आप क्या चाहते हैं?" एक बंदर बोला। कुछ बंदरों ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घुड़ककर आक्रमण करना चाहा, पर मुखिया बंदर के इशारे के बाद शांत होकर बैठ गया। सत्यप्रकाश व एक अन्य बंदर आमने-सामने थे। बाकी बंदर पीछे हट गए थे। बंदर का प्रश्न सुनकर सत्यप्रकाश हैरान हुआ।

"आपने यहाँ क्यों धरना दे रखा है? क्यों परेशान कर रखा है?" मुट्ठी भींचकर सत्यप्रकाश ने सवाल किया।

"आपने हमारा बच्चा अपने घर में क्यों रखा हुआ है?"

"किसका बच्चा?"

"झूठ मत बोलो। तुम्हारे घर जो छोटा बच्चा है, वो हमारा है। हमें वापस दे दो।" बंदर ने कहा।

"क्या कह रहे हो, वह तो हमारा है।" सत्यप्रकाश बोला।

"झूठ मत बोलो।" बंदर ने कहा।

"साफ-साफ बताओ क्या बात है? क्या कह रहे हो?" सत्यप्रकाश फिर से बोला।

बंदर—"हम आपकी भाषा को अच्छी तरह समझते हैं। मुझे इंसानी भाषा खूब समझ आती है। यह बच्चा आपने हमसे चुराया है और बदलकर इसे इंसान बना दिया है। आपकी तरह हमें भी अपने बच्चों से प्यार है। इंसान नहीं हैं तो क्या हुआ? हम भी इसी कुदरत के बनाए हुए प्राणी हैं।"

सत्यप्रकाश—"क्या मतलब?"

बंदर—"यह... कि हमारी छोटी बंदरी का बच्चा खो गया था। वो बच्चा तलाश करते-करते बंदरिया आपके घर की तरफ आयी, तो उसने देखा कि आपकी पत्नी की गोदी में बच्चा है। छोटा-सा, बंदर-सा... और वह उसे प्यार से कह रही थी—बंदर का बच्चा...मेरा बंदर!... इसलिए बंदरिया तुरंत समझ गई कि यह उसका ही बच्चा है और आपने उसको बदल दिया है... जादू-टोना करके। हमें अपना बच्चा चाहिए। ...हर हालत में चाहिए।"

सत्यप्रकाश—"नहीं तो क्या करोगे?"

बंदर—"हम तब तक यहीं धरना दे के रखेंगे। ...बंदरी तब से भूखी बैठी रहती है। उसे अपने बच्चे से बहुत प्यार है। आप और हमारे बीच में सदियों से प्यार है। जब हम आपकी भाषा समझ सकते हैं, तो आप हमारा दुख क्यों नहीं समझ सकते? हम सबकी विनती है कि हमारा बच्चा लौटा दो।"

सत्यप्रकाश सारी बात समझ चुका था। कहीं न कहीं ये शरारती बंदर गलतफहमी के शिकार हो गए हैं और इन्होंने इस बात को लेकर हठधर्मिता अपना ली है। सभी बंदर शांत थे। परंतु वह बंदरिया... माँ कुछ दूरी पर जोर-जोर से रो रही थी। कुछ बंदर उसे चुप कराने की कोशिश कर रहे थे।

सत्यप्रकाश का हृदय, माँ—बंदरिया के रोने और कुछ अन्य बंदरों द्वारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे चुप कराने के दृश्य को देखकर अति द्रवित हो उठा। वह भीगे मन के साथ बंदरों से बोला—"बंदर भाइयों! क्योंकि हम आपको भी अपने परिवार का वंशज मानते हैं, इसलिए प्यार से बच्चों को 'बंदर'... 'शरारती बंदर'... 'बदंर के बच्चे' आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं, अन्यथा वैसा कुछ नहीं है। यदि आपको विश्वास नहीं हो तो मेरे साथ चलें और बच्चे को देखें। यदि आपका खोया हुआ बच्चा है, तो आप ले जाएं।"

बंदरों को बात जंच गई। कुछ देर खुसर-फुसर करने के बाद 5 बंदरों का प्रतिनिधिमंडल सत्यप्रकाश के साथ गया। बच्चे को अच्छी तरह देखने के बाद, उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया कि वे गलत सोच रहे थे। व्यर्थ में ही लड़ाई कर बैठे। उन्होंने सिर झुकाकर सत्यप्रकाश से माफी मांगी और तुरंत वहाँ से चले गए।

बंदरों के जाते ही घनघोर सन्नाटा छा गया। सन्नाटे से ज्यादा खालीपन। खालीपन से ज्यादा उदासी।... रिक्तता और असमंजस के बीच सत्यप्रकाश ने सिर खुजाया, जैसे होश में आया हो। सोचने लगा—अरे! कोई भी बंदर कुछ भी तो नहीं बोल रहा था। पर...पर...ये...सब कुछ... सब कह गए। यह कैसा चमत्कार था...नहीं...नहीं...है। !...मानवीय...नहीं...नहीं...प्राणिमात्र की संवेदनाओं का उत्कृष्ट रूप! हमें जिस सामंजस्य व समझ की जरूरत है उसका साकार स्वरूप!... असल में सब एक-दूसरे के पूरक हैं... साथी हैं... प्राकृतिक रूप से जुड़े हुए।

बच्चे को गोदी में लेकर सत्यप्रकाश व सविता फिर छत पर गए। चारों तरफ गर्दन घुमाकर देखा, कोई भी नहीं था। सभी दूर जा चुके थे। ममता के अटूट मोह में सत्यप्रकाश के बच्चे को अपना समझने की भूल कर बैठी बंदरिया भी जा चुकी थी... जिसे यह आस बंधी हुई थी कि नीचे पलंग पर उसका बच्चा सो रहा है और एक दिन फिर उसकी गोदी में किलकारियां भरेगा, उछल-कूद करेगा।

शायद वह फिर उसी बच्चे को तलाशने निकल गई थी। चारों ओर अजीब जड़ता थी। शीतल हवा चल रही थी। चांद और सूर्य दोनों के मिलन का समय था। चंद्रमा वापस जाने की तैयारी में था। सत्यप्रकाश की निगाहें उन चिर-परिचित मित्रों को ढूंढ रही थीं। उनके जाने का दुःख था। सविता बच्चे को उछाल-उछाल कर फिर कहने लगी—"मेरा बच्चा! ... छोटा-सा! ... मेरा बंद. ..!!!" सत्यप्रकाश ने जल्दी से सविता के मुंह पर हाथ रख दिया। 'बंदर' शब्द आधा ही उच्चरित हो सका। हां! बच्चा निर्द्वन्द्व भाव से किलकारियां मार रहा था। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैंस का सौदा

भगवान जाने 'भैंस का सौदा' आजकल तमाम सौदागरी में कैसे इतना प्रसिद्ध हो गया? दुकानदार से कुछ पैसे यदि हम छोड़ने को कहते हैं, तो एक ही उत्तर मिलता है कि भाई यह भैंस का सौदा थोड़े ही है। ऐसा हर जगह सुनने में आता है। भैंस के सौदे में ऐसी क्या बात है जो ये इतना प्रसिद्ध है कि लोकोक्ति का रूप ले लिया है। एक बार मुझे यह जिज्ञासा हुई कि चलो देखें कि भैंस को खरीदने में कैसी सौदागिरी की जाती है।

मैं अपने मामा जी के साथ एक दिन भैंस खरीदने के लिए चला तो रास्ते में उन्होंने अपने एक साथी जिसका नाम ज्वाला था, उसको भी साथ लिया और हम पैदल ही चल दिए।

सुबह से ही घूमते हुए हमने दोपहर 2 बजे तक 5-6 गाँवों में भैंस देखी। कभी कोई पसंद आती तो उसका मालिक उसे बेचने को तैयार नहीं होता। न जाने हमने कितने भैंसों का इंटरव्यू लिया। आखिर अब हम खूब थक चुके थे। मैंने मामाजी को कहा कि अब तो और घूमने की मेरी हिम्मत नहीं है। चलो यहीं किसी भैंस का सौदा कर लेते हैं। जब मैं बहुत थक जाता था तो भैंस की सौदागिरी को देखने की इच्छा से ही सारी थकान रफूचक्कर हो जाती थी।

अंत में हमारी बढ़ती उत्सुकता का साथ हमारे भाग्य ने दिया और घूमते-फिरते 4 बजे हम एक गाँव में पहुँचे। गाँव पहुँचते ही ज्वाला ने नजरें दौड़ाई और एक भैंस को पसन्द करके उसके मालिक के इंतजार में बैठ गया। आधा घंटा बाद भैंस वाला आया। सौदागिरी की पैंतरेबाजी अब शुरू होने जा रही थी। पहले उसने चारपाई बिछाई और हमारा परिचय लिया।

भैंस वाला भी गाँव के प्रसिद्ध व्यापारियों में से था, उसका नाम हेमू था। उसका एक लड़का भी था जिसका नाम कलुआ और उसकी घरवाली का नाम चम्पा था। वे तीनों हर कार्य आपस में परामर्श करके करते थे। अतः उनका भी मैदान में आना जरूरी हो गया। चम्पा एक हाथ का घूंघट किए आई और एक कोने में बैठ गई। दोनों पक्षों के लोगों के इकट्ठे होने के बाद अब समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सौदेबाजी करने की थी। सबसे पहले मामा जी ने कहा—

"अच्छा भई चौधरी, भैंस बेचोगे?"

चौधरी बोला—"हां बेचेंगे तो सही यदि तुम ले लोगे।"

मामा जी बोले—"तुम दे दोगे तो हम ले ही लेंगे।"

ज्वाला ने भैंस को निहारते हुए कहा—

"चौधरी ये तो बताओ कितना दूध है? कितनी बेर की ब्याई है?

"देख भाई, ब्याई कितने दिन की है जो दूध ज्यादा दे, पाँच दिन ही तो हुए हैं। छह लोटा दूध है और तहारे यहाँ तो ज्यादा ही दे देयगी, दूसरी बार ब्याई है, अच्छी भैंस है।"

"हमारे यहाँ सूखी घास खा रही है। वह भी एक टाइम तब इतना दूध है। तहारे यहाँ तो खा-पीकर पंद्रह लोटा से कम दूध ना देगी।" चम्पा ने घूंघट में से कहा।

"पहली बार कितना दूध दिया था।" मैंने पूछा।

"भगवान झूठ ना बुलवावे तो कम से कम नौ किलो दे ही देती थी क्योंकि हम तो नापते हैं ना और विश्वास ना हो तो पूरे गाँव में जाकर जाँच कर लो, तब हमारी भैंस को देखना।" कलुआ ने इस प्रकार से हमें विश्वास दिलाते हुए कहा।

"कोई नुक्स।" मामा जी ने पूछा।

"देखो कोई झूठ बोले तो जूती मारो पचास, हमारी भैंस दूध ठीक ढंग से नहीं देती है, मरकही है, लात चलाती है और कोई ऐब नहीं है अगर होगा तो उसके मालिक हम होंगे।"

चौधरी ने मूंछे घुमाते हुए कहा।

ज्वाला ने जेब में हाथ डालकर एक रुपए का सिक्का निकाला और चौधरी के हाथ में थमा दिया और कहा—"चौधरी रुपया भी गिरी का है, तो बताओ सही-सही भैंस का क्या लोगे?"

चौधरी ने कहा—"तुमको कितने की दिखाई देती है? ठीक-ठाक जो दे दोगे मुझे वही स्वीकार है।"

"नहीं जी, माल़ तुम्हारा है, सौदा अगर हो जाएगा तो हम ले लेंगे, नहीं तो माल तुम्हारे घर में ही है।" ज्वाला ने कहा।

"2500 रुपए कल-परसों ही कबूलपुर के प्रधान ने लगाए हैं और तुम हमें जो दे दोगे वही मंजूर है। आपस की बात है, हमने 3000 रुपए मांग लिये थे।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतने में तो 10 भैंस आवै हे, हमारो, तिहारो सौदा जो ऐसा ना पटे।" ज्वाला ने अपनी जगह खड़े होकर कहा।

"अच्छा तो सही बताओ, तुमहीं कहो भैंस कितने में देनी है।" चौधरी बोला।

"सही-सही 1000 रुपया।" मैंने मामा की आज्ञा से खड़े होकर जंम्हाई लेते हुए कहा।"

"अच्छा जी हमको ग्राहक बहुतेरे, तुमको भैंस बहुतेरी—हमारौ, तिहारो सौदा खत्म।" चौधरी भड़ककर बोला।

यह सुनकर हम उठ खड़े हुए और घर को वापस चल दिए। सौदा तो हमारा तय हो ही चुका था। रास्ते में हमने सलाह-मशवरा किया और फिर अगले दिन मामी से रुपए लिये और उसी भैंस को देखने के लिए फिर चल दिए। अंधेरे में ही हम दूध निकालते समय वहाँ पहुँच गए। जाते ही वहाँ उसने हमारा स्वागत किया। हाथ में बाल्टी लिये कलुआ भैंस के नीचे दूध निकालने बैठ गया। करीब आधा किलो दूध निकालने के पश्चात् कलुआ ने उसे छोड़ दिया। अंदर से चम्पा गुस्से से भरी हुई आई और भैंस को अपनी जगह बांधकर दूध निकालने को बैठ गई। हम हंसते हुए बाहर चौधरी के पास सौदा करने को आ गए। ज्वाला ने सौदेबाजी की शुरुआत की।

"चौधरी दूध तो तीन किलो मुश्किल से है। सही-सही बताओ भैंस का क्या दाम लोगे?

चौधरी बोला—"यदि ना लेनी हो तो मत लो, छह किलो से कम दूध हो तो मुफ्त का छोड़ दूं, भैंस को बुरा मत कहो, सोना है! सोना एक दाम है न कम न ज्यादा 2600 रुपए। चाहे पचास पेंच जोड़ लो तब भी कीमत कम ना होगी। लो ना लो, जैसी तुम्हारी मर्जी।"

मामा जी इतना सुनकर भड़क उठे। इतने में तो 10 लोटा दूध की पहलवान भैंस आवेगी। बालक लोटा लिये आवे और हंडिया दूध की खाली, पड़ोसियों को छांह भी ना मिले। ऐसी भैंस हमें ना लेना, चौधरी 2200 रुपए लेने हैं।"

"ना भई ना, जिद काहे को कर रहे हो, हमने कह दी कम कीमत में ना मिले।"

"हम कम कीमत में ना दें, हमारी भैंस तो इतने की ही है।" चम्पा ने घर के बाहर आते हुए कहा।"

हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? हम वहाँ से चल दिए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और थोड़ी दूर चलकर ज्वाला ने चौधरी के लड़के को बुलाया और कहा 2300, अच्छा 2400 लेने हैं? चौधरी ने दूर से ही हाथ हिला दिया।

"अच्छा चौधरी 2500 में ही सही, तुम्हारे ही तो बालक हैं। हमारी तुम्हारी तो एक ही बात है, चल रे ज्वाला चल भैंस खोल।" मामाजी ने कहा।

चौधरी भी अब राजी हो गया परंतु चौधराइन मना ही करती रही। आखिर नोट संभाल लिये गए। मैंने भैंस खोल ली। इस प्रकार दूध की बाल्टी ज्वाला ने हाथ में ली और मैंने भैंस। हम अपने गाँव की तरफ चल दिए। मामा जी भैंस को हांक रहे थे। इस तरह कई घंटों के तर्क-वितर्क के बाद भैंस सौदा खत्म हो गया। मैं खुशी-खुशी घर लौट आया। शरीर पूरी तरह थक चुका था। मामा जी ने कहा दूध पीते हैं, थकान दूर हो जाएगी। भैंस को बांधा गया। शाम ढल गई थी, उसे खाने के लिए घास और भूसा दिया गया और बाद में ज्वाला बाल्टी लेकर दूध निकालने बैठ गया। हम सभी खुश थे। भैंस ने छह किलो तक दूध दिया था। एक लीटर के डिब्बे से उसकी पैमाइश भी की गई। इसका मतलब हम अपने सौदे में ठगाए नहीं थे। इस सौदे से खरीददार और विक्रेता दोनों खुश थे। अपने-अपने विचार से दोनों के लिए फायदे का सौदा था। अब मैं समझ गया था कि भैंस का सौदा कैसा होता है। भगवान बचाए इस सौदागिरी से।

इस सारी चकल्लस से नावाकिफ भैंस दुम हिलाते हुए चारा खाने में मस्त थी। उसके गले में बंधी छोटी घंटी ऐसे बज रही थी, जैसे वह स्वयं गुनगुना रही हो—"कोई मिल गया।" ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलविदा

प्रातःकाल के ब्रह्ममुहुर्त में मस्ज़िद के मुल्ला जी की अजान जैसे ही खत्म हुई मंदिरों से घंटी बजने व आरती उतरने की मधुर आवाज सुनाई पड़ने लगी। जिसे सुनते ही मुर्गी के चूजे बड़ी खुशी से घर से बाहर तमाशा देखने निकले। जैसे छोटे बच्चे मदारी का खेल देखने के लिए उनकी ढपली की आवाज सुनकर लालायित हो उठते हैं।

रात भर की बंदिश के बाद, चूजे बड़ी तेजी से बाहर निकलकर घूमने लगे। शरीर पर उड़ते हुए रेशमी रोयें, चीं-चीं की आवाज, खेलते-खेलते इकट्ठा होना और फिर बिखर जाना। इनकी ये क्रियाएँ किसी को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है।

उनका इकट्ठा होना और फिर जाना ऐसा लग रहा है कि जैसे वे गणतंत्र दिवस परेड की तैयारी कर रहे हैं।

मुर्गा बेचारा घर के अंदर ही मन मारे बैठा है। वह बाहर निकला ही नहीं है, और अंदर से ही अपने चूजों की क्रियाओं को देखता है। वह मन ही मन सोचता है कि तैयारियाँ तो किसी समय हमने भी की थी। परंतु हमारा कभी कोई गणतंत्र नहीं हुआ।

मुर्गी ने मुर्गे से उसकी उदासी का कारण पूछा। कुछ टाल-मटोल के बाद मुर्गे ने अपनी गंभीरता का रहस्य खोला और इससे पहले उसने भी एक पैर पर खड़े होकर ईश्वर को नमस्कार कर जोर-जोर से आवाज दी, और नया दिन ठीक तरह से गुजरने का आर्शीवाद मांगा।

मुर्गे ने मुर्गी से उदासी भरे शब्दों में कहा—"अब मेरी जिंदगी के दिन पूरे हो गए हैं। इसलिए अब मेरा अंत आ चुका है।"

मुर्गी बोली—"नहीं, ऐसा मत कहो।"

"देखती नहीं, मैं कितना मोटा ताजा हूँ।" मुर्गा बोला।

"तो फिर, ये तो अच्छी बात है, होना ही चाहिए।" मुर्गी ने कहा।

मुर्गा बोला—"यहीं से तो खतरा शुरू हो जाता है।"

"क्या मतलब?" मुर्गी ने सवाल किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लोग हमें बड़े चाव से खाते हैं। अलग-अलग तरीकों से बनाकर, भट्टी में भूनकर—हमारे बिना उनकी हर पार्टी अधूरी रहती है। हमारी जिंदगी लेकर वे अपनी खुशियाँ मनाते हैं।" मुर्गे ने दुखी होकर कहा।

"ऐसा क्यों?" मुर्गी उदास होकर गुस्से में बोली।

"सभी हमारी जिंदगी के पीछे पड़े हैं। हम तो कीड़े-मकौड़े खाकर अपना पेट भरते हैं। पर ये तो हमसे भी गए गुजरे हैं।"

मुर्गे ने मुर्गी को समझाते हुए कहा—"कुछ आदमी हमारे अंदर विटामिन देखते हैं, कुछ भगवान के आगे बलि देने के नाम पर अपना जायका देखते हैं और...कुछ....।"

मुर्गी अब रोने लगी थी। मुर्गे ने उसे चुप कराया। "फिर हम अपनी सुरक्षा कर सकें, तो वो हम क्यों खाते हैं?"

मुर्गा—"अरे! उन्हें तो बस बहाना चाहिए, देखा ना कुछ अंडे भी गायब हो जाते हैं। जबकि उनके अंदर जो पारदर्शी छिद्र होता है। सूर्य की किरणें उनमें से अंदर पहुँचती है और उनके विटामिन नष्ट हो जाते हैं।"

मुर्गी—"भगवान इनको क्यूं नहीं रोकता?"

मुर्गा—"ये लोग सुबह-शाम माफी माँग लेते हैं। भगवान इनको माफ भी कर देता है, तभी तो ये हम पर जुल्म करते हैं।"

मुर्गा और मुर्गी के बीच बातचीत चल ही रही थी कि एक गाड़ी आई। उसमें से कुछ लोग उतरे और मुर्गे की तरफ बढ़े। मुर्गी ने उसे बचाना चाहा, मुर्गा भी अपनी रक्षा के लिए इधर-उधर दौड़ा पर बच न सका। सभी चूजे डर के मारे मुर्गी के चारों तरफ इकट्ठे हो गए। मुर्गी, मुर्गे के लिए उदास खड़ी रही।

मुर्गे ने मुड़कर मुर्गी की तरफ देखा और आवाज देकर विदा मांगी। मुर्गे को गाड़ी में डालकर ले जाया जा चुका था। मुर्गे को विदाई देते वक्त मुर्गी कुछ क्षण के लिए उदास हो गयी थी। फिर से उसने चूजों की तरफ देखा व इधर-उधर घूमने लगी। अब वह मुर्गे को भुला चुकी थी। यही तो जीवन है।

❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ोरू का भाई

भयंकर सर्दी का मौसम था। कोहरा सफेद मुलायम रुई की तरह उड़ता नजर आ रहा था। दूर से किसी आदमी को नहीं पहचाना जा सकता था।

वैसे भी जाड़ा दो लोगों के लिए ज्यादा कष्टप्रद होता है। एक तो जिनकी उम्र अपने आखिरी पड़ाव की तरफ हो। दूसरे वो नौजवान जिनकी बीवी उन्हें पहनने के लिए कपड़े नहीं देती है, जबकि कपड़े संदूक में रखे फिनायल की गोलियों का आनंद लेते रहते हैं। उन कपड़ों पर युवक का हक नहीं होता, क्योंकि वे उसके पापा ने दिए होते हैं जिसके कारण उसकी उपयोगिता बढ़ जाती है और उसे खास उत्सव पर ही पहन सकते हैं। जैसे कि साले साब का बर्थ डे या सासू जी का मैरिज डे आदि।

संजय का दफ्तर बहुत दूर था। कम से कम 50 किमी. तो पड़ता ही होगा। उसका जीवन बहुत संघर्षपूर्ण था। उसके साथ हमेशा अगले मोर्चे पर होती उनकी महामहिम श्रीमती जी। संजय शीतल जल से रोज नहाता, वो भी कड़ाके की सर्दी में, चाहे मन हो या न हो। फिर दो जोड़े कपड़े धोकर सुखाता फिर मिलती थी... एक कप गर्मा-गर्म कॉफी!

जैसे ही कॉफी खत्म होती तुरंत होममिनिस्ट्री का आदेश कि 'समय हो गया है', ऑफिस नहीं जाना क्या?

वह चाहते हुए भी घर पर नहीं ठहर पाता और श्रीमती जी द्वारा दी हुई रोटियों की पोटली लिये चल देता। ऑफिस में मिर्च-प्याज मिश्रित छोले लेकर पेट-पूजा करता था।

संजय का सर्दी के मारे बुरा हाल हो रहा था। शाम तक तो स्थिति और भी खराब हो जाती। परंतु श्रीमती जी के डर के मारे गर्म कपड़े मांगने की हिम्मत उसमें नहीं थी। संजय कोई कपड़ा खरीद भी नहीं सकता था। क्योंकि सख्त ऑर्डर था कि खर्च में से हर महीने कम से कम 500 रुपए बचाने है। क्योंकि दो महीने बाद गुल्लू, जो संजय का साला और उसकर श्रीमती जी का छोटा भाई है, का जन्मदिन है।

संजय ऑफिस में अपने साथियों के साथ अनुभव बांटता कि जितनी खतरनाक ज़ोरू होती है, उससे कहीं ज्यादा खतरनाक 'ज़ोरू का भाई' होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अगर घर में महीने में 28 दिन बहस होगी तो 25 दिन का कारण ज़ोरू का भाई ही होता है। उसका दोस्त आपबीती सुनाता है–"यार, यही समस्या तो मेरे साथ भी थी, पर मैंने एक उपाय निकाला, मन से तो साले से इतनी चिढ़न होती है कि क्या बताऊँ? परंतु मुंह से एक ही बात निकलती है–"सारी खुदाई एक तरफ, ज़ोरू का भाई एक तरफ।" इतना सुनकर मेरी बीवी तो निहाल हो जाती है। कहती है–सच जी, आप कितने अच्छे हो? मेरे भाई को कितना प्यार करते हो?"

इतना सुनकर संजय चिढ़कर बोला–"मैं तो उस कम्बख्त गुल्लू की झूठ की भी तारीफ नहीं कर सकता, साला जब भी आता है उसे मेरे में कमी ही नजर आती है। वो मेरी बीवी के कान भरता है, जिसे सुनकर मेरी बीवी पके खरबूजे की तरह फट जाती है–और तो और खाना भी मुझे वही मिलता है जो उसे पसंद हो। वो भी उसके खाने के बाद। पेटू कहीं का।" इतना कहकर संजय गुस्सा हो जाता है। ऑफिस बंद होने के समय संजय अपने दोस्त को अलग ले जाकर उससे 800 रुपए उधार लेता है और रेक्सीन का एक कोट खरीद लेता है। यही उसने बहुत बड़ी गलती की जिसका जुर्माना उसे भरना पड़ा और कोट की गर्मी भी जाती रही।

कोट को देखते ही मैडम ने भृकुटी तानी और नाक-भौं को ठीक दिशा देते हुए बोली–"जब गर्म सूट संदूक में रखा हुआ है तो क्या जरूरत थी पैसे खर्च करने की, कुछ खयाल नहीं है खर्च में कटौती कैसे होगी, मुझे तो देखो मैं अब हफ्ते में बस पाँच दिन ही शॉपिंग करती हूँ।"

संजय दोनों हाथ पीछे किए हुए चुपचाप सुनता रहा। वो बड़बड़ाती रही और संजय चुपंचाप सुनता रहा। जब उसने देखा कि संजय पर कुछ असर नहीं हो रहा तो उसने बेलन उठाकर दिशा निर्देश दिया कि उधर जाकर बैठ जाओ नहीं तो...। कुछ देर बाद उसने देखा कि मैडम फ़ोन पर कोट के बारे में चर्चा कर रही है। उसने दूसरे कमरे में जाकर फ़ोन उठाकर बात सुननी चाही। उसका शक सच निकला, दूसरी तरफ वही गुल्लू जी महाराज थे। जो कह रहे थे–"जीजाजी को कौन समझाए, बेकार में 200 रुपए खर्च कर दिए। जब घर में था तो खरीदने की क्या जरूरत थी?"

उस उल्लू से यानी गुल्लू से बात करने के बाद श्रीमती जी रिचार्ज होकर किसी पुलिस अफसर की तरह बेचारे संजय का रिमांड लेना शुरू कर दिया।

संजय ने भी साहस करके प्रतिउत्तर दिया–"जो रखा है उसे तुम पहनने ही कहाँ देती हो?"

उसने उलटकर प्रहार किया–"रिश्तेदारी में जाना हो तो क्या मेरी साड़ी बांधकर जाओगे?"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"आना कहाँ होता है, सिर्फ ससुराल ही तो जाता हूँ। यह तो अपना घर है, कैसे भी कपड़े पहनो।" संजय ने बहस करनी चाही।

इतनी देर में उसकी एक सहेली आ गई। तब संजय को कुछ शांति मिली। संजय ने उसे प्यार भरी नजरों से देखा, वह भी कम नहीं थी, बैठती हुई बोली—"आज तो हम भाई साहब के हाथ की ही चाय पिएंगे।"

संजय ने चाय लाकर दी। उसने चाय पीने के बाद मैडम को धन्यवाद दिया और चली गई। संजय मुंह ताकता रह गया।

संजय की बीवी की स्मरण शक्ति बहुत तेज़ थी। वह भूलने वाली नहीं थी और न ही आसानी से किसी का पीछा छोड़ती थी। उसने अपना अदालती निर्णय सुनाया—"अब तुम लंच लेकर नहीं जाओगे।"

संजय भी कम चालाक नहीं था। ये तो किस्मत थी कि इतनी सुशील व सहनशील मैडम मिल गई। शुरू में बहुत खुश हुआ था पर बाद में अखाड़ा हार गया।

संजय ने कहा—"ठीक है लंच नहीं देना है तो मत दो। कल से मेरी सेक्रेटरी गर्म-गर्म परांठे लाएगी—वैसे रोज़ लाती है, उसी को खाकर तो अब तक जिंदा हूँ। नहीं तो...।"

बस इतना कहना था कि तीर निशाने पर जा लगा। मैडम का शक्की दिमाग पिघला और मायूस आवाज में प्यार भरी नजर डालकर बोली—"क्या समझते हो, मैं आपको लंच नहीं दूँगी? मैं तो आपको अपने हाथ से खिलाऊंगी।"

"इसी तरह तो तुमने मुझे शादी से पहले भी कहा था। पर बाद में मेरी छुट्टी कर दी।" संजय ने कहा।

मौका देखकर उसने कोट की माँग की और श्रीमती जी ने तुरंत लाकर पहनने को दे दिया। जब उसने पहनकर देखा तो पता चला कि ये तो बहुत छोटा हो गया है।

संजय ने सोचा—सचमुच वो बड़ा ही मनहूस दिन था, जब हमने इन्हें अपनी अर्धांगिनी बनाने का निर्णय लिया।

हां! इनके लिए जिंदगी का सबसे बड़ा शुभ दिन हो सकता है जब हमको इनके पल्ले प्रणय-सूत्र में बाँधा गया।

संजय बैठा सिर पकड़े सोचता रहा कि किस तरह संकट से उबरा जाए।

रईस घराने से आई कंजूस श्रीमती जी को सूट छोटे होने का भी कोई दुख नहीं हुआ बल्कि प्रसन्नतापूर्वक बोली—"इसे गुल्लू पहन लेगा, वो कह भी रहा था कि जीजाजी कुछ लाते नहीं हैं।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजय को गुस्सा आ गया। वह बोला सुबह-सुबह किसका नाम ले लिया। शाम को रोटी नहीं मिलेगी।

इन शब्दों ने आग में घी डालने का काम किया। श्रीमती जी फिर से पूर्व स्थिति में आ गई और बोली—"तुम्हें मेरे भाई-बहन से नफरत है, ना उन्हें घुमाते हो, ना ही कुछ लाकर देते हो। उन्हें तो तुम अपना दुश्मन समझते हो।

बहुत से आरोप एक साथ उसने संजय के ऊपर लगा दिया। कोट का झगड़ा खत्म हुआ तो भाई-बहनों को लेकर बैठ गई। तीन-चार दिन तक मौन व्रत चलता रहा। गुस्से के मारे बर्तनों को उठाकर इधर-उधर पटकती रही। दीपू को पीट दिया। रोता हुआ वह संजय के पास गया तो उसने भी उसे एक जड़ दी। 'जा उधर जा' वही चुप कराएगी। संजय बहुत गुस्से में चिल्लाया—"खाती है और दिन भर गुर्राती है। कोई काम-धाम है नहीं, टीवी पर ब्रेकफास्ट देखती है। खाना भी बनाना नहीं आता इस बेशऊर को।"

वो भी जवाब देती है। इस तरह अच्छा-खासा महाभारत चलता रहा। श्रीमती जी की सहेली आकर सांत्वना देती रही। संजय भी दफ्तर के लोगों को आजीवन कुंवारा रहने की सलाह देता और नारा लगाता—"दुनिया के कुंवारों, शादी मत रचाओ।" "पति एकता जिंदाबाद।"

संजय और उसकी पत्नी की तनातनी चल ही रही थी कि अचानक एक दिन भोलू जो संजय का बड़ा साला है, घर आया। संजय डर गया कि शायद हेड ऑफिस (ससुराल) में भी रिपोर्ट हो गई है। परंतु उसका संदेह गलत था।

भोलू आकर संजय के पास बैठ गया। उसके बाल बिखरे हुए थे। कपड़े गंदे थे। पैरों में हवाई चप्पल पहने हुए था। उसको देखते ही आभास हुआ कि वह किसी गंभीर संकट में है। संजय ने अपना दुख-दर्द छिपाते हुए, भोलू की राजी-खुशी पूछी, तो बेचारा रोने लगा। तब तक उसकी बहिन भी दोनों के लिए चाय लेकर आ चुकी थी। साथ में ग्लूकोज बिस्किट भी।

भोलू की समस्या बिल्कुल संजय की तरह ही थी। उसकी होममिनिस्ट्री और ज्यादा मजबूत थी। उसने उसे बाहर निकल जाने को कहा था।

संजय की पूज्य पत्नी गुस्से से लाल हो गई और अपनी भाभी को बुरा भला कहते हुए संजय को आदेश दिया कि चलो वहाँ चलकर उसे समझाते हैं। नहीं तो किसी दूसरे रास्ते से ठीक करेंगे। औरतों का काम हक मांगना है, रौब मारना नहीं। उसे सेवा करना व सहनशील होना चाहिए।

संजय ने सुझाव माना और अटैची हाथ में लेकर उसी ओछे सूट को पहनकर भोलू के पीछे श्रीमती जी और दीपू के साथ उसके मायके चल पड़े।☐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षितिज के पार

देश की आजादी के चार दशक बाद तक इस गाँव में शांति बनी रही थी। लोग भाई-चारे के साथ रहते थे। परस्पर सामंजस्य था। त्यौहारों में सब लोग मिलकर-जुलकर आनंद उठाते थे। एक-दूसरे की मदद करते थे। खेत की जुताई के लिए, यदि बैलों की जरूरत होती, तो आपस में मांगकर काम चला लेना आम बात थी। ब्याह-शादियों में भी यही सिलसिला पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चला आ रहा था।

लेकिन समय की ऐसी नजर लगी कि गाँव के चिरागों से ही गाँव में आग लग गई। गाँववासियों में अमीर-गरीब, जातिवाद, धर्म की दीवारें पनपने लगीं और मैं-मैं हूं, तू-तू है का बोलबाला हो गया। पुरानी पीढ़ी खत्म होती जा रही थी और नई पीढ़ी एक-दूसरे की दुश्मन व एक-दूसरे के खून की प्यासी बन गई थी।

शहर को जाने वाले रास्ते के किनारे पीपल का एक पेड़ पड़ता था। कहा जाता है कि यह पेड़ लगभग 500 वर्ष पुराना है। किंवदंती थी कि वहाँ पर भूत निवास करते थे। इसी डर से पेड़ के नीचे कुछ ईंटें रखकर, लोगों ने चार फुटा मंदिर बनवा दिया था। आते-जाते गाँव के लोग इस मंदिर के सम्मुख हाथ जोड़कर निकलते थे। औरतें कभी-कभी यहाँ जल चढ़ाने व मनोकामना सिद्धि के लिए आती थीं। यह एक साझा मंदिर था—मुस्लिम भी उतनी ही पूजा करते थे, जितनी हिंदू।

एक दिन किसी ने अफवाह उड़ा दी कि मंदिर को किसी ने गिरा दिया है। बस फिर क्या था... दो-चार नाम सामने आने लगे। गवाह भी दिखने लगे। अभी इसकी पड़ताल चल ही रही थी कि दूसरी खबर भी आ गई कि किसी ने मजार पर ईंटें फेंककर उसे चोट पहुँचाई है। गाँव में तनातनी बढ़ गई। लोग लाठी-भाले लेकर घर से निकल पड़े और दूसरे धर्म का जो भी निहत्था आदमी मिलता, उसे मारने लगे। कत्ले-आम शुरू हो गया। दोनों संप्रदायों के लोगों के घरों में आग लगा दी गई। हिंसा और आग में गाँव धूं-धूं जलने लगा, अफवाहें और आग पकड़ती गईं। आस-पास के गाँवों के भी लोग इस मारधाड़ में शामिल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगे। किसी ने भी यह जानने की कोशिश नहीं की कि पीपल बाबा मंदिर वास्तव में तोड़ा गया है भी या नहीं, अथवा मजार पर वास्तव में ईंटें फेंकी गई थीं या नहीं, क्योंकि वास्तव में न तो मंदिर टूटा था और न ही मजार पर ईंट-पथराव का कोई नजारा था। अफवाहों के अंधेरे में विवेक तो गायब ही हो गया था।

बड़े-बूढ़े चीख-चीखकर सबको समझा रहे थे—अरे! बाहर के गाँव वालों को भगाओ। इनका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा लेकिन सत्यानाश इस गाँव का हो जाएगा। भीख भी नहीं मिलेगी। तुम जिनको मार रहे हो वे सब अपने ही खून हैं। सब अपने ही पड़ोसी हैं। सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। पर उनकी आवाज उन्माद के साये में दम तोड़ रही थी। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मची हुई थी।

कुछ दिनों की हिंसा के बाद गाँव में माहौल शांत हुआ। परंतु तब तक कई घर पूरी तरह उजड़ चुके थे। कोई किसी को सहारा देने वाला नहीं रह गया था। कुछ बच्चे अनाथ हो गए थे। कुछ औरतें विधवा हो गई थीं। उनकी बेहोशी आंसुओं की धारा के साथ खत्म होती और आंसुओं की धारा के साथ फिर शुरू हो जाती। कुछ घरों से आग का धुआं अभी भी उठ रहा था।

घर के बाहर गलियों में दो-चार बूढ़े लोग बतिया रहे थे कि अगर नुकसान सच में होता तो मजार भी दुबारा बन सकता था, मंदिर भी दुबारा बन सकता था, पर ये उजड़े घर कैसे बस पाएंगे? जो बच्चे अनाथ हो गए हैं, वो सारी उम्र एक-दूसरे से बदला लेने की सोचते रहेंगे। अब तो इस धरती पर जीना बेकार है। भगवान ऊपर उठा ले और कम-से-कम इस गाँव में दूसरा जन्म ना दे। कहीं और बसा दे। चाहे तो भगवान दूसरे जन्म में जानवर बना दे, पर यहां इस गाँव में इंसान बनाकर न भेजे।

गाँव के बाहर लगभग दो कि.मी. की दूरी पर पर कब्रिस्तान था और उसी के दूसरी तरफ शमशान भी, जहां पर मुर्दों को धर्म के अनुसार या तो जलाया जाता था या मिट्टी में धर्मानुसार दफनाया जाता था। लाशों के आने का सिलसिला अभी थमा नहीं था।

हर जनाजे के साथ गिने-चुने दस-बारह लोग ही होते थे जो कि पारिवारिक सदस्य, पड़ोसी या मित्र होते थे। क्योंकि कोई भी घर से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं कर पाता था कि कहीं वह स्वयं ही हिंसा का शिकार न हो जाए। हर किसी की जुबान पर एक ही शब्द, एक ही प्रार्थना—"भगवान!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ओ खुदा! मदद कर!" इस तरह चारों ओर हा-हाकार मचा हुआ था।

इन्हीं में एक लाश एक ऐसे परिवार की भी थी, जहाँ सिर्फ एक बच्चा और एक औरत ही बच पाई थी। विधवा ने खाना-पीना सब छोड़ रखा था। बच्चा परेशान था। उसे पता नहीं लग रहा था कि उसके घर को क्यों जला दिया गया? उसके पिता को क्यों मार दिया गया जबकि उनकी किसी से दुश्मनी भी नहीं थी। तरह-तरह के सवालों में वह मासूम खोया हुआ था। एक सवाल खत्म नहीं होता कि दूसरा सवाल मन में उठने लगता था। चिता को अग्नि देने के लिए बच्चे को भी शमशान तक लाया गया था। वहाँ का दृश्य देखकर बालक रो उठा। उसने वहाँ उपस्थित लोगों से सवाल पूछे—"बाबा, पापा कहाँ गए? क्या फिर कभी नहीं आएंगे? मौत क्या चीज होती है? क्या जितने लोगों को यहाँ लाए हैं, वे सब मर गए हैं? अब क्या होगा?" बच्चे को बीच चुप कराते हुए एक वृद्ध ने कहा, "बेटा, तुम्हारे पापा को भगवान ने अपने पास बुला लिया है। ऊपर देख, दूर पहाड़ी की चोटी पर, जहाँ चारों तरफ बर्फ जमी है, वहां भगवान जी रहते हैं।"

"भगवान जी वहाँ क्या करते हैं?"

"वहाँ से भगवान जी सबको देखते रहते हैं। ...और जो अच्छे लोग होते हैं, उन्हें अपने पास बुला लेते हैं।"

"पापा भी वहां गए हैं, भगवान जी के पास? अब कभी नहीं आएंगे?" बच्चे ने उत्सुकतापूर्वक फिर प्रश्न किया।

"शायद नहीं।" वृद्ध ने धीरे से जवाब दिया।

बच्चा चुप रहा। मन में कोतूहल लिए सोच में पड़ गया कि क्या किया जाए? उसने रात का खाना भी नहीं खाया। बड़ी देर तक वह करवटें बदलता रहा। धीरे-धीरे नींद ने उसे जकड़ लिया।

आधी रात में अचानक चुपचाप वह उठा। घर में छीके पर रखी रात की बची हुई सारी रोटियां एक पोटली में बाँध लीं और चुपचाप घर से निकल पड़ा—भगवान जी के पास। पापा को वापस लाने। रात के अंधेरे में, सन्नाटे को चीरता हुआ वह बर्फ की ऊँची पहाड़ी की तरफ चल दिया। सर्द हवाएँ चल रही थीं, लेकिन मन में दृढ़ संकल्प, पापा को वापस लाने का जोश, बालक को शक्तिमान बनाकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था। छोटे-छोटे कदमों से वह बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था। बीच-बीच में थकने पर कुछ दूर तक तो वह धीरे-धीरे चलता लेकिन जब उसके कदम लड़खड़ाने लगते तो वह आसपास किसी पेड़ की ओट में पीठ लगाकर बैठ जाता। प्यास लगने पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ी झरने के पानी से प्यास बुझा लेता। कुछ देर आराम के बाद फिर से मंजिल की तरफ आगे बढ़ना शुरू कर देता।

इस तरह पूरा दिन पैदल चलते-चलते वह बहुत बुरी तरह थक चुका था। उसे बार-बार माँ की भी याद आ रही थी। मन अंतर्द्वंद्व में फंसा था कि वापस जाए या इतनी चढ़ाई करके भगवान जी से प्रार्थना करके पापा को वापस लाए। अभी वापस जाने का क्या फायदा...? या गाँव वापस जाकर माँ को बता दे कि वह भगवान जी के पास जा रहा है पापा को लाने। लेकिन यदि माँ ने मना कर दिया तो, क्योंकि बाबा ने बताया था कि वहाँ कोई नहीं जा सकता, भगवान जी नाराज हो जाते हैं और रास्ते में पुलिस पकड़ लेती है। या कुछ समय बाद जब वो और बड़ा हो जाए तब वहाँ जाए? क्योंकि तब थकान कम होगी, अभी तो हर कदम पर पैर लड़खड़ा जाते हैं।

तभी अचानक उसने देखा कि कौवों का झुंड पहाड़ी से नीचे की तरफ आ रहा है। उसने ऐसा ही एक झुंड शमशान के पास भी देखा था। लोग थाली में पकवान रखकर श्रद्धा से कौवों को खिलाते थे। कौवों को देख बालक खुश हो उठा। मन में एक उम्मीद जागने लगी। एक ऊंचे पत्थर पर खड़े होकर उसने वहां से आवाज लगाई—"आओ-आओ!" कौवों का झुंड उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गया। उसने कौवों को वहाँ तक पहुँचने का प्रयोजन बताया और आगे के लिए मार्गदर्शन मांगा।

बालक की बात सुनकर कौवे संशय में पड़ गए कि क्या उत्तर दें। कौवों का मुखिया उसके पास आया और उसें घर वापस जाने की सलाह दी कि ये रास्ता बहुत दुर्गम है, वहाँ कोई नहीं पहुंच पाया है। रास्ते में शेर, भालू रहते हैं, वे बहुत ही खतरनाक हैं। शेर उसे एक ही बार में पकड़कर खा जाएगा। भगवान जी के यहाँ पहुँचना बहुत मुश्किल है। भगवान ने कौवों को अपना दूत बना रखा है। इसलिए लोग कौवों को भोजन खिलाते हैं, ताकि वह खाना पितरों को पहुँच जाए। कौवे के मुखिया ने बालक की उलझन तो बढ़ा दी, परंतु उसका एक संशय कम हुआ। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि भगवान जी ऊपर बर्फ से ढकी हुई पहाड़ी की चोटी पर ही रहते हैं। उसने भक्त प्रह्लाद व नचिकेता की कहानी सुन रखी थी, इसलिए डर नहीं रहा था। उसने हाथ जोड़कर कौवों से आगे बढ़ने के लिए आशीर्वाद मांगा। बालहठ के सामने कौवों की एक न चली। एक साथ सभी कौवे उड़कर दूर चले गए। कुछ देर बाद जब वापस आए तो सभी के मुंह में एक-एक फूल था। बच्चे के चारों तरफ घूम-घूमकर कौवे फूल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बरसाकर आगे बढ़ गए।

अब बालक भी अपनी मंजिल पथ पर और उत्साहित होकर आगे बढ़ने लगा। पूरा दिन चलता रहा। रात भी आधी बीत गई। पहाड़ पर अंधेरा था। चंद्रमा की रोशनी मार्गदर्शन कर रही थी। ओस की नमी से पत्थर गीला हो रहा था जिससे पैर बार-बार नीचे फिसल रहा था। लंबी यात्रा के कारण पैरों में छाले पड़ गए थे। हवा की गति तेज होती जा रही थी। कभी-कभी ऊपर से पत्थर तेजी से नीचे की ओंर गिर रहे थे। तेज हवा के झोंके आगे बढ़ने में बढ़ी रुकावट बन गए थे। कमर को नीचे झुकाकर दोनों हाथों के बल हिम्मत से वह धीरे-धीरे आगे चल रहा था। अचानक भेड़ियों के एक झुंड ने उसे घेर लिया। सुनसान रात में उनकी चमकती हुई डरावनी आंखें देख अकेला बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। भेड़िये कुछ क्षण के लिए शांत हो गए और उससे आने का कारण पूछा। बच्चे ने सुबकते हुए सब सुनाया और मार्गदर्शन की विनती की। भेड़ियों का दिल पिघल गया। उन्हें बच्चे पर रहम आ रहा था। उन्होंने उसे वापस जाने की सलाह दी। एक भेड़िये ने यहाँ तक कहा कि हम पीठ पर बैठाकर रात में ही उसे घर छोड़कर आ सकते हैं। पर यहाँ बालहठ की विजय हुई और भेड़ियों को ही उसकी बात माननी पड़ी। वह बहुत भूखा था। एक भेड़िया उसे पीठ पर बैठाकर कुछ दूर ले गया। वहां पर कई अन्य भेड़िये मौजूद थे। पास ही में सेब के बड़े-बड़े पेड़ थे। कच्ची अंजीर पेड़ों से लटक रही थीं। उसने जी-भरकर फल खाए और झरने का ठंडा पानी पिया। भारी थकान से वह निढाल हो चला था। वह वहीं जमीन पर लेटकर गहरी नींद में सो गया।

नींद खुलने पर उसने स्वयं को एक बड़ी गुफा में पाया। गुफा के आसपास भेड़िये के छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे। दो मादा भेड़िया उसके पास बैठी थीं। एक उसको देखकर मुस्कुराई और घर वापस जाने का आग्रह करने लगी। बच्चे की आंखों में आँसू आ गए और उसने मादा भेड़िया से आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन की प्रार्थना की। बच्चे के आग्रह के आगे भेड़िया कुछ न बोल सकी। एक भेड़िये ने दूसरे को कुछ इशारा किया। तभी भेड़िये के बच्चों ने उसके चारों तरफ घेरा बनाकर चक्कर लगाया तथा एक दिन और रुकने का आग्रह किया। भेड़ियों के बच्चों की बात मानकर वह रुक गया। भेड़िये सोचते थे कि यहा रुकने से उसका मन बदल जाएगा और वो उसे घर वापस भेजने में सफल हो जाएंगे। लेकिन भेड़ियों का यह प्रयास व्यर्थ गया। एक दिन और रुकने के बाद, भगवान जी के पास चल दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों और घने ऊँचे पेड़ों के जंगल दिखाई पड़ रहे थे जिन पर बैठी चिड़ियों की आवाजें कभी-कभी उसका ध्यान आकर्षित कर रही थीं। पहाड़ी की सतह पर धीरे-धीरे फूल खिल रहे हैं। गुलाबी सर्दी में मौसम अत्यंत सुहावना हो गया था। चलते-चलते रास्ते में से छोटे पत्थर उठाकर चिड़ियों की तरफ फैंक कर उनके साथ खेलने की कोशिश करता था और जौर से ताली बजाकर हंसने लगता था "आओ चिड़िया रानी... मेरे साथ चलो...।" सर्द हवाएं बढ़ती जा रही थीं। रास्ता और अधिक दुर्गम होता जा रहा था। मंजिल अभी बहुत दूर थी, मगर मन में एक ही उम्मीद थी। भगवान जी के पास जाना है और पापा को वापस लाना है। भेड़ियों ने उसे एक छड़ी दी थी, जिसके सहारे आसानी से पहाड़ी पर चढ़ा जा सकता था।

पहाड़ी पर ऊपर जाने का कोई निश्चित रास्ता तो नहीं था बस ऊँचाई पर चढ़ते जाना ही उसका एकमात्र लक्ष्य था। यह इतना आसान नहीं था। बार बार पैर नीचे की तरफ फिसलता लेकिन फिर से संभल कर ऊपर चढ़ने की कोशिश शुरू कर देता था। इस कार्य में छड़ी उसके लिए वरदान साबित हो रही थी। कुछ आंगे चलकर उसने देखा कि एक बड़ा झरना ऊपर से बह रहा है। उसने उस जलधारा को ही मार्गदर्शक मानकर गिरते हुए झरने के किनारे छोटी झाड़ियों को पकड़कर ऊपर चढ़ता चला गया। एक पैर पानी में होता था और दूसरा पैर पानी के बाहर। कुछ ऊँचाई पर पहुँचकर यह रास्ता भी बन्द हो गया। सामने सफेद बर्फ का बहुत बड़ा मैदान था। पक्षियों की चहचहाट बंद हो चुकी थी। चारों तरफ सन्नाटा छाया था। सूर्य की मंद-मंद किरणों से बर्फ चांदी की तरह चमक रही थी। बहुत जोर की भूख लगी थी। थोड़ी सी बर्फ खाकर भूख शांत करने की कोशिश की। बर्फ के गाले बनाकर खेलना शुरू कर दिया।

अचानक वहाँ सफेद पोलर भालुओं का एक झुंड वहाँ इकट्ठा हो गया और बच्चे की तरफ लपका। एकाएक आक्रमण होता देख बच्चा डर गया और तेजी से पीछे हटते हुए बचाव की मुद्रा में उसने पूरी ताकत से हाथ की छड़ी घुमाई। छड़ी घूमते ही उसमें से संगीत की धुनें निकलने लगीं। सभी भालू रुक गए और गुर्राना छोड़कर संगीत की धुन पर नाचने लगे। इसी बीच किसी ने भागकर सरदार भालू को उसके आने की सूचना दे दी। सरदार को यह नागवार गुजरा और तेजी से भागकर वहाँ पहुँच गया। सरदार के आते ही सभी शांत हो गए। संगीत थम गया। सरदार ने बच्चे से वहाँ आने का कारण पूछा। बच्चे ने सब विस्तार से बताया कि किस तरह गाँव में मारकाट मची

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके पापा भी चले गए। अब भगवान जी के पास से उन्हें वापस लाना है, क्योंकि माँ अकेली है और रोती रहती है। घर में कोई नहीं है। वह अभी बहुत छोटा है। सभी भालू उसकी बात सुनकर हैरान रह गए। यह इस तरह का पहला वाकया था। उन्होंने बालहठ की गंभीरता को समझा। पहले तो सरदार भालू ने उसे वापस जाने की सलाह दी कि भगवान जी ने अब आगे जाने का रास्ता बंद कर दिया है और ऊपर चोटी पर जाना अब संभव नहीं है। पर वह नहीं माना। सरदार भालू ने उसे फिर से एक बार छड़ी घुमाकर दिखाने को कहा। जैसे ही बच्चे ने छड़ी घुमाई, पूर्व की भांति मधुर संगीत फिर से गूंजने लगा। सरदार भालू के साथ अन्य सभी भालू भी नाचने लगे। समूचा इलाका संगीतमय हो उठा। सरदार भालू की बेटी की शादी थी, इस मौके पर मधुर संगीत का होना सभी को बहुत अच्छा लगा। भालुओं ने आपस में एक सभा की, तदुपरांत बच्चे को पीठ पर बैठाकर गुफा की तरफ ले गए। वहाँ उसे हिरन की खाल के बने गर्म कपड़े पहनाए। सील की चमड़ी के जूते पहनने को दिए। घर में नए मेहमान के आने से नया जोश, नया माहौल था। भालू के छोटे-छोटे सफेद बच्चे खेल रहे थे। वह कभी-कभी छड़ी घुमा देता और संगीत की मधुर आवाज सुनसान पर्वत मालाओं में गूंजने लगती। बच्चे ने भालुओं के घर खूब आनंद उठाया। थकान भी कम हुई। लेकिन माँ की याद उसे बहुत परेशान कर रही थी। माँ उसे तलाश कर रही होगी, क्या कुछ सोच रही होगी? कि मैं भी गंदा बच्चा हूँ, और पकड़े जाने पर क्या कहेगी, पिटाई भी होगी। लेकिन जब वह पापा के साथ घर वापस जाएगा तो वह भी खुश हो जाएगी। इसी उम्मीद में वह संतुष्ट था। भालू सोच रहे थे कि दो-तीन दिन में बच्चा सब कुछ भूल जाएगा, पर अपनी जिद पर वह अटल रहा। भालू उसकी जिद के आगे कुछ भी न कर पाए। अंत में वहाँ से भी उसे विदा करना पड़ा। विदाई के समय सभी भालू और उनके बच्चे भी वहाँ मौजूद थे और दुम हिलाकर विदा दे रहे थे। हिरन की खाल के कोट व सील के जूते ने उसका रास्ता और आसान कर दिया था। धीरे-धीरे वह आगे बढ़ता जा रहा था। अब मंजिल और करीब थी। भगवान जी से जल्दी ही मिलने की खुशी ने दुर्गम रास्ता को आसान बना दिया था।

लगभग चार घंटे चलने के बाद रास्ते में पानी का एक ठंडा तालाब मिला। चारों तरफ से रास्ता बंद था। अब क्या करे? कैसे आगे जाए, हैरान-परेशान वह वहीं रुक गया। ठंडी हवा के थपेड़े बदन में सुइयाँ चुभो रहे थे। अचानक उसे भेड़ियों द्वारा दी गई उस संगीत की छड़ी का ध्यान आया और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुरंत उसने पूरी ताकत से छड़ी को हवा में जोर से दो बार लहराया। संगीत की मधुर धुन फिर से हवा में गूंजने लगी। सारा वातावरण संगीतमय हो उठा। संगीत की आवाज सुनकर धीरे-धीरे झील में से हजारों की तादाद में सील बाहर आने लगीं। इस बार उसे डर नहीं लगा। कुछ ही दूरी पर बर्फ से ढकी सफेद पहाड़ी नजर आ रही थी। सील ने भी उसे रोककर आने का कारण पूछा और तुरंत वापस जाने की सलाह दी। वह कई मार्ग-बाधाएं पार कर चुका था, इसलिए अब भगवान जी से मिले बिना वापस नहीं जा सकता था। उसकी बातचीत व भोलेपन का प्रधान सील पर बहुत प्रभाव पड़ा और उसे आगे ले जाने के लिए वह भी तैयार हो गया।

वह एक सील की पीठ पर बैठ गया। सील ने पानी में गोता लगाया और अत्यंत गहराई में जाकर उसे बर्फ के नीचे से दूर एक अन्य बर्फ की ऊँची चोटी पर पहुँचा दिया। यह वही स्थान था, जहाँ उसे आना था। वह मंजिल पर आ चुका था। आँख बंद कर वह वहीं बैठ गया कि जैसे ही भगवान जी आएंगे, आँखें खोल दूँगा। आधा दिन बीतने के बाद आँखें खुलीं, तो स्वयं को एक अदृश्य शक्ति के सामने पाया। बच्चे ने सिर झुकाकर अभिवादन किया और छड़ी का संगीत बजाकर खुशी से नाचना शुरू कर दिया। उसने भगवान जी से पूछा—"आप जन्म भी देते हैं और वापस भी बुला लेते हैं। ऐसा क्यों? मुझे अपने पापा वापस चाहिए। उन्हें वहीं माँ के पास रहने दें। माँ बहुत अकेली है। पापा के सिवाय दुनिया में माँ का कोई सहारा नहीं है। माँ रात-दिन रोती रहती है, आप चाहें तो पापा के बदले में उसे वहाँ रख लें।"

भगवान मुस्कुराए। नीचे धरती की तरफ हाथ उठाकर बोले, "देखो, वहाँ क्या हो रहा है?" भगवान के पास खड़े गरूड़ ने एक दूरबीन लाकर दी, ताकि सब कुछ वह ठीक से देख पाए।

अरे यह क्या! हर कोई एक-दूसरे को लूट रहा है, कोई किसी को झूठ बोलकर तो कोई खानपान में मिलावट करके, कहीं किसी स्त्री की इज्जत लूटी जा रही है तो कोई न्याय के लिए भटक रहा है, इंसान जानवरों को खा रहा है... सैकड़ों गिद्ध शहर के ऊपर मंडरा रहे हैं। एक भयंकर चीख के साथ उसने दूरबीन दूर फेंक दी और बोला, "मुझे इस क्षितिज के पार की दुनिया को नहीं देखना। यह संसार तो बहुत ही भयावह है।"

भगवान मुस्कुराए और बोले, "मैं अच्छे लोगों को अपने पास बुला लेता हूं। तुम्हारे पापा अच्छे आदमी हैं। दूसरे यह कि मैं अच्छे लोगों को ही धरती पर भेजता हूँ, ताकि वे धरती को विनाश से बचा सकें। इसलिए मैं सबको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म देता हूँ।" अब उसे दोनों सवालों का जवाब मिल चुका था। "बेटे, तुम बहुत साहसी हो। तुम्हारा धरती पर जाना बेकार नहीं जाएगा। संगीत की मधुर धुन सुनाओ, प्रेम के संगीत की धुन.. यह सबके लिए है। संगीत कला का ही एक स्वरूप है। कला और कलाकार की कोई जाति, धर्म, क्षेत्रीय सीमा नहीं होती। तुम सत्य, अंहिसा और भाईचारे का पाठ पढ़ाओ।"

"जैसी आज्ञा!" बच्चे ने सिर झुकाकर कहा।

"अच्छा अब जाओ, मैं तुम्हारे जाने का इंतजाम करता हूँ।"

"लेकिन पापा के साथ।" बच्चे ने आग्रह किया।

"यदि तुम अच्छा काम करोगे, तो किसी न किसी दिन उन्हें भी... ठीक है!" इतना कहकर अदृश्य शक्ति ने हाथ आगे बढ़ाए जिसमें पाँच सोने की मोहरें थी, "यह तुम्हारे परिश्रम का पुरस्कार है। अपनी माँ को दे देना।"

"ठीक है! मैं मेहनत, ईमानदारी से धरती पर काम करूँगा।" बच्चा बोला।

गरूड़ की पीठ पर सवार होकर बच्चा क्षितिज के पार पृथ्वी लोक रवाना हो गया—अपनी माँ के पास एक नए संदेश के साथ।

प्रभात बेला में चिड़ियों की चहचहाट के प्रेम भरे संगीत के साथ बच्चे की आँखें खुलीं। न आसमान था आसपास, न गरूड़। वह चारपाई पर था माँ के साथ। माँ प्यार से सिर पर हाथ फेर रही थी। दुलार के साथ धीरे-से जागने को कह रही थी। माँ की प्यारी आवाज कानों में पड़ी। वह स्वप्न-निद्रा से उठा। पर रहा नहीं गया उससे। माँ का आंचल पकड़कर फिर सुनाया उसने विस्तार से सुदीर्घ स्वप्न का किस्सा। ...और फिर लिपट गया माँ से—आत्मविश्वास के एक नए संदेश के साथ! ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआवज़ा

त्यागी और अवस्थी गपशप में मशगूल हैं। फिलहाल कोई खास काम नहीं है। काम का असली दबाव शाम चार बजे से शुरू होता है जब उन्हें खबरें लिखनी होती है। दोनों पेशे से पत्रकार हैं और राष्ट्रीय हिंदी दैनिक के ब्यूरो ऑफिस में नियुक्त हैं।

पत्रकारों की दशा और दिशा दोनों ही निराली होती हैं। क्या आपको कभी उनकी आपसी बातचीत सुनने का मौका मिला है? यदि नहीं तो फिर एक बार यह मौका पाने की कोशिश करिये।

जब दो चार पत्रकार आपस में बतिया रहे हों तो चुपचाप उनके बीच में बैठ जाओ और सुनते रहो। ध्यान रहे! बीच में नहीं बोलना है। यदि तुम बीच में बोल पड़े तो फंस जाओगे। क्योंकि ये बहुत चालाकी से तुमसे ही बहुत कुछ उगलवा लेंगें और वंही एक बड़ी खबर बन जायेगी। ये लोग जब भी आपस में गपशप करेंगें तो उसका विषय भी खबरों से संबंधित ही होंगें कि फलां खबर लीड पर लगी थी फलां खबर इस कालम की थी फलां खबर मुख्य पृष्ठ पर लगी है इत्यादि। ये आपस में एक दूसरे को बातों ही बातों में तोलते रहते हैं कि कोई खास खबर हाथ लग जाए।

इसलिए आप कभी भी भ्रमित न हों कि पत्रकार क्या बात क़र रहे हैं। अचानक अवस्थी के मोबाइल पर एक कॉल आती है और उसके चेहरे के हाव-भाव बदल जाते हैं। "ओह, यह तो बहुत बड़ी खबर है" तुरंत वहां से उठकर वह त्यागी को कहता है—"चलो कोठारी गांव चलते हैं, वहां नाले से अभी-अभी बहुत सारे नरकंकाल बरामद हुए हैं। खबर बहुत खास है, अगले दिन यह अखबार में लीड बनेगी। तुरंत ही दोनों वहां से कोठारी गांव के लिए रवाना हो जाते हैं।

आधे घंटे बाद यह खबर टी.वी. पर ब्रेकिंग न्यूज के रूप में आनी शुरू हो जाती है और रात तक सभी न्यूज चैनलों की प्रमुख खबर बन जाती है।

"कोठारी में बच्चों के नर कंकाल बरामद! खोजबीन जारी।" इस खबर से पूरे देश में सनसनी फैल गई। पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घटनास्थल से कुछ ही दूरी पर थाना है। कभी घटना-स्थल पर कभी थाने के बाहर भारी भीड़ इकट्ठी हो रही है, सभी में भयंकर आक्रोश है, पूरे प्रकरण को जानने की उत्सुकता है। भीड़ पर नियंत्रण के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है ताकि कोई अप्रिय स्थिति ना पैदा हो।

कोठारी में पिछले कई माह से हर सप्ताह दो-तीन बच्चे गायब हो रहे थे। उनके मां-बाप पुलिस के पास फरियाद लेकर जाते और हमेशा ही निराश होकर वापस आ जाते। कभी पुलिस कहती कि बच्चे संभालकर रखें, हम क्या करें! गायब होने वाले सभी बच्चे निर्धन परिवारों से थे जिनकी आयु 2 से 15 वर्ष के बीच थी, लेकिन अधिकांश बच्चे 5 से 10 वर्ष की उम्र के ही थे। पुलिस भी हर रोज नई-नई गुमशुदा की शिकायत से परेशान थी। वह लोगों को किसी-न-किसी बहाने टरका देती कि तुम लोग पता लगाओ कि बच्चे कहां गए हैं, फिर उन्हें बरामद कर लेंगे। या कभी कहती कि तुम्हारे बच्चे भागकर कहीं चले गए हैं, बच्चों पर कंट्रोल रखो। पुलिस अपना काम कर रही है। जन-आक्रोश बढ़ता ही जा रहा था। जन-आक्रोश बढ़ने का एक कारण यह था कि, जिनके बच्चे लापता थे वे सब गरीब आदमी थे। दूर-दराज से रोजी-रोटी की तलाश में यहां आए थे। उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही थी। न तो स्थानीय मीडिया, ना नेता और न ही पुलिस उनकी परेशानियों पर ध्यान देती थी।

कुछ समय पूर्व उसी क्षेत्र में जब एक उद्योगपति के बच्चे का अपहरण हुआ तो मीडिया ने तीन दिनों तक उसी खबर को दिखाकर पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया था। घटना के समय से सभी प्रमुख चैनलों ने अपने पत्रकार वहीं तैनात कर दिए थे। प्रदेश के आला पुलिस अफसर भी आसपास डेरा डाले थे और स्थिति की पूरी निगरानी कर रहे थे। पुलिस की कई विशेष टीमें बनाई गईं, जो देश के विभिन्न भागों में छापामारी कर रही थी। पुलिस विभाग भारी दबाव में थी। सांसद, विधायक और स्थानीय नेता हर दिन उस पीड़ित परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करने जाते थे। मुख्यमंत्री भी इस अपहरण की गुत्थी सुलझाने में काफी रुचि ले रहे थे। उनके प्रतिनिधि लगातार उक्त परिवार से संपर्क बनाए हुए थे। भारी दबाव व फिरौती के बाद बच्चा मिल गया। उस बच्चे को गले लगाकर हर प्रमुख व्यक्ति, राजनेता व पुलिस अधिकारी विजयी भाव से प्रसन्न मुद्रा में अपनी फोटो खिंचवा रहे थे। स्कूलों में हवन-पूजा का आयोजन किया गया। देश के अन्य शहरों में इस बच्चे की सलामती व दीर्घायु के लिए विशेष प्रार्थनाएं की गईं। पुलिस ने प्रेस कांफ्रेंस करके अपनी पीठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थपथपाई कि उन्होंने त्वरित गति से कार्रवाई करके बच्चे को अपहरणकर्ताओं से छुड़वाया है।

अमीर-गरीब के बीच की खाई कितनी गहरी है इसका साक्षात उदाहरण उसी शहर में अब देखने को मिल रहा था। गरीब का बच्चा है तो मरने दो, लेकिन यदि बच्चा अमीर का है तो ये देश का भविष्य है।

बच्चों के नरकंकाल मिलने के बाद जनाक्रोश अपने चरम स्तर पर था और थोड़ी-थोड़ी देर में पुलिस व जनता के बीच बहस व गाली-गलौच की नौबत भी आ जाती थी। लाठी चार्ज करके पुलिस को स्थिति पर काबू करना पड़ता था। ऐसा दृश्य रोजाना ही देखने को मिलता। पीड़ित परिवारों के रिश्तेदार भी इकट्ठे होकर पुलिस से भिड़ जाते थे। आपसी प्रतिस्पर्द्धा के कारण मीडिया इसका लाइव दृश्य दिखाती थी। शुरुआत में चार-पांच नरकंकाल मिले पर धीरे-धीरे इसकी संख्या बढ़कर 15-16 हो गई। अफवाहों का बाजार गर्म होने लगा था। कोई कहता 50 कंकाल मिले हैं तो कोई 20-21 कहता। जितने मुंह उतनी बातें। पुलिस ने मुखबिर की खबर के आधार पर एक स्थानीय उद्योगपति व उसके नौकर को गिरफ्तार किया। दो-तीन दिन की कड़ी पूछताछ के बाद उन्होंने अपना गुनाह कुबूल कर लिया। उद्योगपति का नौकर बच्चों को चॉकलेट के बहाने घर बुलाता और अंदर आने पर दरवाजा बंद कर लेता था। फिर बच्चों के साथ व्यभिचार करता और पोल खुलने के डर से उसकी हत्या कर देता था। नौकर ने यह बात कबूल कर ली। बाद में इन्हें नारकोटिक टेस्ट के लिए हैदराबाद ले जाया गया ताकि आरोप की ठीक से जांच-पड़ताल की जा सके। यह उद्योगपति काफी धनी व प्रभावशाली व्यक्ति था। समय-समय पर वह पुलिस के लिए शानदार पार्टियां आयोजित करता रहता था। इस कारण पुलिस का कभी भी उस पर शक नहीं पड़ा। अचानक एक अफवाह यह भी फैली कि यह आदमी मानव अंगों की तस्करी भी करता है। उसके घर के पास में ही एक डॉक्टर का घर था। शक की सूई उक्त डॉक्टर पर भी गई। क्योंकि पूर्व में मानव अंगों के अनुचित व्यापार में वह डॉक्टर एक बार गिरफ्तार हो चुका था। वह भी जनाक्रोश का शिकार हुआ। उसके घर पर जनता ने ईंट-पत्थर फेंके। डर के मारे वह शहर छोड़कर बाहर चला गया। अब वहां भारी पुलिस बल तैनात कर दी गई थी ताकि कोई उपद्रव न हो।

अब राजनेताओं में भी होड़-सी मच गई। आरोप-प्रत्यारोप का भयंकर दौर शुरू हो गया। कोई सी.बी.आई. जांच की मांग करता तो कोई पुलिस अफसरों को बर्खास्त करने की।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन महीने बाद ही चुनाव भी होने थे। मीडिया का काम था कि वह इस सनसनीखेज घटना को लाइव दिखाए। समाचार-पत्र का स्थानीय खबरों वाला पेज इसी खबर से भरा होता था। इस प्रकरण में यदि कोई नई खबर नहीं भी होती तो पुरानी खबर को ही दुबारा नए ढंग से तैयार किया जाता परंतु अखबार का पूरा पेज जरूर भरा होता था। टी.वी. कैमरे रोते-बिलखते मां-बाप को दिखा रहे थे। कुछ राजनैतिक दलों के नेताओं ने राज्य सरकार को बर्खास्त करने की मांग को लेकर भूख-हड़ताल शुरू कर दी थी। जनता की मांग और प्रदेश में राज्य सरकार की बिगड़ती साख ने सत्ताधारी दल के शीर्ष नेताओं की नींद हराम कर दी थी। कुछ पुलिस अधिकारी बर्खास्त हुए, कुछ को लाइन हाजिर किया गया, कुछ का तबादला भी किया गया। यह घोषणा मुख्यमंत्री द्वारा आयोजित एक प्रेस वार्ता में की गई। मुख्यमंत्री को जगह का नाम भी ठीक तरह याद नहीं था, वो बार-बार कोठारी को पिठारी गांव कहते। मुख्यमंत्री ने सी.बी.आई. जांच की मांग ठुकराकर इसकी जिम्मेवारी राज्य सरकार की विशेष पुलिस बल को सौंप दी। विशेष जांच दल ने गिरफ्तार उद्योगपति के घर से चाकू-छुरी, कुछ चप्पलें व कपड़े बरामद किए। घर की दीवारों से खून के नमूने इकट्ठे किए। पीड़ित परिवारों के भी खून के नमूने लिये ताकि डी.एन.ए. टेस्ट द्वारा मिलान करके उन बच्चों का पता लगाया जा सके जिनकी अपहरण के बाद हत्या कर दी गई। परंतु दुखी परिवारवालों को इसका क्या लाभ मिलने वाला था? उनका दुःख तो जस का तस था।

विशेष पुलिस बल ने घटना स्थल से बच्चों के कपड़े बरामद किए, नर कंकालों को नाले से इकट्ठा किया व पीड़ित परिवारों को थाने बुलाया। पंक्तिबद्ध खड़े होकर सभी पीड़ित परिवार कपड़े को देखकर बच्चों की पहचान करने लगे। सभी एक ही प्रार्थना कर रहे थे काश! ये कपड़े उनके लाडले बच्चे के ना हों। कपड़ों की पहचान शुरू होने पर तो वहां शमशान में दिखाई पड़ने वाला मातम जैसा हाल हो गया था। अब तो बच्चों के मिलने की उम्मीद भी खत्म हो चुकी थी। विपक्षी नेता लोग इस आग में घी डालने का काम कर रहे थे। हर बड़ी पार्टी का मुखिया वहां आता, भाषण देता और चला जाता। दुःखी परिवार उनसे किसी सहानुभूति व आर्थिक मदद की उम्मीद करते पर वे लोग उनके साथ फोटो खिंचवा कर राज्य सरकार को गाली देते और चले जाते।

इसी क्रम में सत्तारूढ दल के एक प्रभावशाली कैबिनेट मंत्री भी गांव आए। प्रेस वार्ता में उन्होंने बयान दे डाला कि ये सब तो चलता ही रहता है बस फिर क्या था? इस मुद्दे को नई हवा मिल गई। विपक्ष का आंदोलन और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेज हो गया था। मीडिया में बार-बार यह वक्तव्य दिखाया गया। सबसे दुःखद पहलू यह था कि बच्चों के मां-बाप तड़प-तड़पकर रो रहे थे। उनकी आंखों के आंसू सूख चुके थे। समूचा दृश्य बड़ा ही हृदय विदारक था। महिलाएं छाती पीट-पीटकर अपने जिगर के टुकड़े को याद कर रही थीं। किसी-किसी परिवार से तो दो-दो बच्चे गायब थे। इन्हीं परिवारों में मंगत का भी परिवार था। मंगत का एक ही लड़का था जिसकी उम्र 6-7 साल रही होगी। वह भी काफी अर्से से गायब था। जब लावारिस कपड़ों की पहचान कराई गई तो मंगत व उसकी पत्नी द्वारा उसकी कमीज की पहचान हो गई। तदुपरांत उसकी मां पछाड़ें खाकर अपनी सुध-बुध खो बैठी। उसे कई घंटों के बाद अस्पताल में होश आया। इन्हीं दुःखी परिवारों में कुछ ऐसे भी थे जिनके बच्चों का अभी तक कोई पता नहीं लग पाया था। पुलिस महकमा पूरी तरह हरकत में आ चुका था। पुलिस द्वारा उन गुमशुदा बच्चों की सूची बनाई जा रही थी जिनके मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं थी। राज्य सरकार से मुआवज़े की घोषणा की तैयारियां की जा रही थीं। लेकिन बार-बार उठ रही मुआवज़े की मांग से आजीज होकर मुख्यमंत्री इस घोषणा में देरी कर रहे थे जबकि उन्हें भी इन सभी परिवारों से हमदर्दी थी। इन्हीं परिवारों की कुछ एक-दो साल की मासूम बच्चियां भी गुम थीं। पुलिस उनको गुमशुदा मानकर रिपोर्ट लिखना चाह रही थी। उसकी दलील थी कि शायद साल-दो साल की बच्ची को कोई पालन-पोषण के लिए चुरा ले गया हो। परंतु उनके घर के लोग उनका नाम मृत बच्चों की सूची में डालने को आमादा थे। उनका कहना था कि पुलिस मुआवजा बचाने के लिए ऐसा कह रही है। दोनों पक्ष सुबह से शाम तक इसी तर्क को लेकर झगड़ते रहते थे।

मंगत की बीवी बरखा की लंबे समय तक बेहोशी व लगातार पछाड़ खाकर रोना और कैबिनेट मंत्री का उपर्युक्त बयान रंग लाया। मीडिया व जनआंदोलन की ताकत के सामने सरकार हिल चुकी थी। हारकर मुख्यमंत्री ने सभी दुःखी परिवारों को दस-दस लाख रुपए के नकद मुआवज़े देने की घोषणा कर दी ताकि इन परिवारों के दर्द पर मरहम लगाया जा सके। इतना ही नहीं सुबह-सुबह अगले दिन एक वरिष्ठ मंत्री ने सभी पीड़ित परिवारों को मुआवज़े की राशि के चेक बांट दिए। परंतु इससे उन परिवारों का दुःख कम नहीं हुआ। मीडिया के पास काफी समय से गर्म-गर्म खबरों का अकाल पड़ा हुआ था। मीडिया को टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए मसालेदार खबरों की जरूरत थी इसलिए इस खबर को बढ़ा-चढ़ाकर बार-बार दिखाने की उसमें होड़ मची थी। इससे उसकी रेटिंग (टी.आर.पी.) भी बढ़ रही थी। मीडिया ने इन परिवारों को अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

स्टूडियो में बुलाना शुरू कर दिया। वे अपना दुःख जनता के सामने रख रहे थे कि उन्हें पैसा नहीं, अपने जिगर का खोया टुकड़ा, अपनी संतान चाहिए।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगत व बरखा ने मुआवज़े का पूरा विरोध किया कि उन्हें मुआवज़ा नहीं चाहिए, किसी भी तरह पुलिस तलाश करके उनके बच्चों को ला दे। बच्चे ही उनका भविष्य हैं, उनके बुढ़ापे का सहारा हैं। मुआवज़े की कोई भी राशी इसकी भरपाई नहीं कर सकती। दोषी पुलिस अधिकारियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाये। मुख्यमंत्री पर दबाव बढ़ता ही जा रहा था। कुछ ही दिनों में सरकार बर्खास्त होने की आशंका जताई जा रही थी। मुख्यमंत्री ने आनन-फानन में पीड़ितं परिवारों को नौकरी और एक-एक प्लॉट देने की घोषणा कर दी और साथ ही सी.बी.आई. जांच की मांग को भी मान लिया।

प्लॉट, नौकरी, दस लाख मुआवज़े की घोषणा के अतिरिक्त एक दिन मुख्यमंत्री ने दुःखी परिवारों को लखनऊ बुलाया, उनकी अच्छी तरह खातिरदारी की, स्वयं सबसे मुलाकात की और दुःख-दर्द सुना। रास्ते में सभी को एक तीन सितारा होटल में ठहराया गया। कई उच्च अधिकारियों को उनकी खातिरदारी में लगाया गया। उनकी खातिरदारी एक राजकीय मेहमान की तरह हुई।

वहाँ से वापस लौटकर सभी खुश थे। उन्हें राज्य सरकार से कोई शिकवा नहीं रह गया था। बल्कि मुख्यमंत्री को भगवान का दर्जा देने में भी किसी को परहेज नहीं था। पुलिस ने सभी गुमशुदा बच्चों के फोटो वाले पोस्टर दूर-दूर गाँव में बंटवा दिए थे। इसके अलावा बस-स्टैंड, सिनेमाघर व शहर के विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर भी ये पोस्टर चिपका दिए गए थे। इसके अच्छे परिणाम जल्दी ही सामने आ गए। मंगत का लड़का सुदूर कस्बे एक हलवाई के यहाँ नौकरी कर रहा था। फ़ोटो देखकर उसे पहचान लिया गया। वहाँ के स्थानीय पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने तुरंत ही फ़ोटो से बच्चे की शक्ल का मिलान किया। नतीजा शत-प्रतिशत सच था। बच्चे को तुरंत मीडिया के सामने पेश किया गया। उसके माँ-बाप को बुलाया गया। बच्चे ने माँ-बाप को पहचान भी लिया और मंगत और बरखा ने भी अपने बच्चे की पहचान लिया। वह छह माह पूर्व ही परिवार से बिछुड़ा था। माँ को देखते ही बच्चा उससे लिपट गया। यह खबर जंगल में आग की तरह फैल गयी। पुलिस अपनी इस कामयाबी पर गदगद् थी। आनन फानन में पुलिस कप्तान ने प्रैस कान्फ्रैस बुलवाई, बड़ी तादाद में मीडिया के लोग कम समय में ही इकट्ठा हो गये थे। बच्चे को मीडिया के सामने पेश किया गया। मीडिया में ब्रेकिंग न्यूज आने लगी—"माँ के जिगर का टुकड़ा बरामद"। स्थानीय जनता के लिए ही नहीं, समस्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशवासियों के लिए यह खुशखबरी थी। कई काली रातों के बाद भोर का एक तारा दिखाई दिया है, यह एक शुभ संकेत है। तनाव को भूलकर हर जगह खुशियां मनाई जाने लगी। स्थानीय लोग मिठाई बांटने लगे थे। पुलिस ने भी बच्चे को गले लगाकर फ़ोटो खिंचवाई। टी0वी0 चैनल पर यह दृश्य बार-बार प्रमुखता से दिखाये जा रहे थे। आस-पास के छोटे-छोटे बच्चे उससे मिलने आए। उसके हाथ में बिस्कुट का पैकेट था जो उसने उन बच्चों को खाने को दिया। बच्चे का नाम छुटकन था। सभी उसे छुटकन भैया कहकर पुकार रहे थे और प्रसन्न मुद्रा में उसे बार-बार निहार रहे थे।

छुटकन के पास छोटे-छोटे खिलौनों का ढेर लग गया था जो आस-पास के बच्चों ने उसे उपहार में दिए थे। पत्रकार छुटकन का इंटरव्यू लेना चाह रहे थे। ताकि उसके खट्टे-मीठे अनुभव मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंचाए जा सकें। पत्रकार एक बड़ी संख्या में वहां पहुंच चुके थे। कैमरामैन बार-बार बच्चे का फोटो खिंचने में व्यस्त थे। वहां बरखा शांत बैठी हुई थी, वह पत्रकारों से नहीं मिलना चाह रही थी। उसके अंतर्मन में एक द्वंद्व चल रहा था जो कि उसके चेहरे से साफ झलक रहा था जबकि सारा कोठारी गांव इस घटना को शुभ संकेत मानकर जश्न में था। खोए बच्चे के वापस मिलने के कारण स्थानीय जनता बहुत ही खुश थी। पत्रकार बरखा से बार-बार कुछ न कुछ सवाल पूछ रहे थे। काफी देर चुप रहने के बाद आखिरकार बरखा से नहीं रहा गया तो उसने बच्चे की तरफ देखते हुए कहा—कम्बख़्त मरि नाहि गवा, वापिस आई गवा। जब घर से भागा रहा हम त उहिं दिन सबर कई लिहे रहे। हमइ सरकार से हवाल में मुआवजऊ मिली गवा, अब एकर हम का करबइ। जो उहिं मर जहां से आई हए, हमरे छाती पर मूंग दरई आई गवा।"

("कम्बख़्त मर क्यों नहीं गया जो वापस आ गया। जब घर से भागा था हमने तो उसी दिन सब्र कर लिया था। हमें तो सरकार से हाल में मुआवज़ा भी मिल गया। अब हम इसका क्या करेंगे? जा! वहीं मर जा! जहां से आया है। हमारी छाती पर मूंग दलने आ गया।")

इतना कहते हुए वह बच्चे को धकिया रही थी। वहीं पास में मंगत खड़ा हुआ था, उसके चेहरे पर आक्रोश बढ़ता जा रहा था। इतना सुनकर समूचे माहौल में मौन छा गया। कुछ क्षण के लिए एक चुप्पी, एक सन्नाटा!

मां के वक्तव्यों से बेखबर छुटकन मस्ती में हिल-हिलकर बिस्कुट खा रहा था। टी.वी. और न्यूज चैनलों को एक नई खबर मिल गई थी। ❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन किसी ने अफवाह उड़ा
मंदिर को किसी ने गिरा दिया है। बस
क्या था... दो-चार नाम सामने आने
गवाह भी दिखने लगे। अभी इसकी
चल ही रही थी कि दूसरी खबर भी आ
किसी ने मजार पर ईंटें फेंककर उ
पहुंचाई है। गांव में तनातनी बढ़ गई
लाठी-भाले लेकर घर से निकल प
दूसरे धर्म का जो भी निहत्था आदमी
उसे मारने लगे। कत्ले-आम शुरू ह
दोनों संप्रदायों के लोगों के घरों में अ
दी गई। हिंसा और आग में गांव धूं-
लगा, अफवाहें और आग पकड़
आस-पास के गांवों के भी लोग इस
में शामिल होने लगे। किसी ने भी य
की कोशिश नहीं की कि पीपल बा
वास्तव में तोड़ा गया है भी या नहीं
मजार पर वास्तव में ईंटें फेंकी गई थीं
क्योंकि वास्तव में न तो मंदिर टूटा थ
ही मजार पर ईंट-पथराव का कोई न
अफवाहों के अंधेरे में विवेक तो गा
गया था।

– इसी संग्रह में 'क्षिति

नामक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम	:	डॉ0 डी0के0 गर्ग
पिता	:	श्री प्रेम कुमार गर्ग
माता	:	श्रीमती लक्ष्मी देवी गर्ग
जन्म	:	1 जनवरी , 1962
जन्म स्थान	:	गाँव-रौनिजा, ज़िला-बुलंदशहर (उ.प्र.)
परिवार	:	ज़मींदार और आर्य समाजी।
अकादमिक उपलब्धियाँ	:	बी. कॉम. (आनर्स), एफ. सी. ए., एल. एल. बी., एम. बी. ए., पी-एच. डी.,
पर्यवेक्षण	:	लगभग 1200 रिसर्च प्रोजेक्ट्स
प्रकाशित	:	फिर वही तलाश (कहानी संग्रह)
		यादें (कहानी संग्रह)
		मुआवजा (कहानी संग्रह)
प्रकाश्य	:	और अन्त नहीं (उपन्यास)
	:	संजोग (उपन्यास)
सदस्य कार्य परिषद	:	महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)
सदस्य	:	ग्रेटर नोएडा जे. पी. गोल्फ कोर्स
	:	नोएडा गोल्फ कोर्स
अभिरुचि	:	लेखन, योग, वृक्षारोपण, सामाजिक कार्य
संपर्क	:	219, हंस भवन, 1, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली - 110002
ई-मेल	:	drdk_garg@yahoo.com

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.